सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 359, नई दिल्ली । शुक्रवार, 07 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सत्य बोलकर मित्र बनाना अच्छा है, परन्तु झूठ बेलकर मित्र बनाने से सत्य बोलकर शत्रु बनाना अधिक अच्छा है, क्योंकि आप संसार में सबको एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते।

03 शालीमार बाग स्कूल में मुख्यमंत्री ने दौरा करके लिया स्कूल की हालत का
06 विज्ञान में महिलाएं: उनका योगदान और सशक्तिकरण
08 खनन पदाधिकारी ज्योति शतपथी का पुनः बड़ा धमाका 17,500 सीएफटी बालू

भाजपा पार्टी दिल्ली सरकार भी क्या चल रही है पूर्व में रही आम आदमी पार्टी दिल्ली सरकार के नक्शे कदमों पर, बड़ा सवाल ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों और आम जनता अभी से यह सवाल उठाने लग गए हैं की क्या सच में दिल्ली परिवहन आयुक्त प्रशान्त गोयल इतने प्रभावशाली व्यक्तिव के आईएएस अधिकारी हैं की वह नव गठित भाजपा पार्टी दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल की बात भी नहीं सुनते/मानते जैसा की आम आदमी पार्टी दिल्ली सरकार जनता के समक्ष कहते रहती थी। **आखिर कौन है जिसके प्रभाव के कारण परिवहन आयुक्त माननीय उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय दिल्ली, कैट दिल्ली, मोटर वाहन नियम अधिनियम और दिल्ली सरकार के साथ उपराज्यपाल के दिशा-निर्देशों को दरकिनार कर जनता का अहित करने के लिए कोई भी आदेश अपनी हठधर्मी से जारी कर लागू करते आ रहे हैं और सभी (दिल्ली सरकार और प्रशासक दिल्ली) है चुप ?** पूर्व में तो यह बात समझ में आती थी की दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार और उपराज्यपाल दिल्ली में ताल-मेल नहीं था जैसा की मीडिया को और मीडिया के द्वारा जनता को बताया और दिखाया जाता था पर क्या अब जब भारत देश और दिल्ली में एक ही पार्टी भाजपा की सरकार है **क्या यह माना जा सकता हैं की एक आईएएस अधिकारी दिल्ली सरकार/ उपराज्यपाल दिल्ली की बात सुनने और मानने से मना कर सकता है वह भी तब जब बात कानून और नियम अधिनियम के अंतर्गत हो ? इसका अर्थ जनता क्या समझे ? क्या सच में पहले भारत सरकार में बैठकर भाजपा पार्टी ही गैर कानूनी तरीके से जनता को परेशान करने के लिए दिशा निर्देश दे रही थी और अब दिल्ली के तख्त पर विराजमान होने के बाद भी दे रही है।** पूर्व में और तत्काल में कार्यरत परिवहन आयुक्त के द्वारा

1. राजपत्र अधिसूचना द्वारा जनहित में चालित परिवहन विभाग की क्षेत्रीय शाखाओं को बिना दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल से सहमति आदेश प्राप्त किए और गैर कानूनी ढंग से बिना जनता को पूर्व सूचना जारी किए और बिना क्षेत्रीय शाखाओं को बंद करने का राजपत्र अधिसूचना जारी किए बंद करवा दिया और उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप, आखिर क्यों ?

2. दिल्ली परिवहन विभाग में आरआर, माननीय सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय दिल्ली और कैट के साथ सरकार के विधि विभाग के दिशा निर्देश को दरकिनार कर तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर दिखाया और उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप, आखिर क्यों ?

3. दिल्ली में प्रदूषण के नाम पर जनता के समय सीमा समाप्त के साथ बचे हुए समय वाले वाहनों को भी अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने पद का दुरुपयोग करते हुए स्क्रैप करने के लिए जबरन बदमाशों और बॉक्सरो के सहयोग से उठवाकर सुपुर्द करवा दिए और उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप आखिर क्यों ?

4. दिल्ली में व्यवसायिक वाहन को मोटर वाहन नियम के तहत अनिवार्य दस्तावेज वाहन जांच प्रमाण पत्र के लिए समाप्त हो चुके एग्रीमेंट वाली कंपनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से वाहन जांच की क्षमता ना होने के बावजूद वाहन की जांच उसी शाखा से अनिवार्य के आदेश जारी कर दिए और उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप आखिर क्यों ? **यहां एक जानने योग्य बात यह भी थी की पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पूर्व में भी जांच के आदेश उसी शाखा में करने के जारी किए थे पर 60 दिनों में ही वहां क्षमता नहीं होने के कारण वाहन मालिकों को आने वाली परेशानियों के आगे घुटने टेक कर आदेश वापिस ले लिए थे** और सब कुछ जानते हुए भी परिवहन आयुक्त ने सिर्फ और सिर्फ एक कंपनी जिसे वह अनगिनत बार एग्रीमेंट की समाप्ति के बाद एक्सटेंशन दे चुके है और अभी भी अपने पद के बल का दुरुपयोग करते हुए दे रहे हैं को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से वाहन मालिकों को परिवार के भरण पोषण की समस्या के साथ वाहन के लोन के अधिभार में दबा कर वाहन जांच अनिवार्यता उसी शाखा में करने के आदेश जारी किए और सब कुछ सच जानते हुए भी उपराज्यपाल रहे चुप आखिर क्यों ?

5. दिल्ली में प्रदूषण कम ना हो सके इसके लिए तीन पहिया 6+1 सवारी इलेक्ट्रिक वाहनो की उपलब्धता होते हुए भी पद के बल का दुरुपयोग करते हुए गैर कानूनी तरीके से पंजीकरण को रोक दिया और उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप आखिर क्यों ?

6. दिल्ली परिवहन विभाग की प्रवर्तन शाखा में आरआर लागू किए बिना अपने पद के बल का दुरुपयोग करते हुए बिना नियम के पदोन्नति दे दी और उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप आखिर क्यों ?

7. परिवहन आयुक्त के आदेश के कारण दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम को लगा करोड़ों का चूना साथ ही दिल्ली में सड़क सुरक्षा में हुई बड़ी सेंध और प्रदूषण की भरमार, सब कुछ जानते हुए भी उपराज्यपाल दिल्ली रहे चुप आखिर क्यों ?

सवाल तो अभी और भी बहुत है पर जो हो रहा हैं, जो परिवहन आयुक्त कर रहे हैं उसको देख कर यही लग रहा है की पूर्व के परिवहन आयुक्त और तत्काल में कार्यरत परिवहन आयुक्त यह सब भारत सरकार के दिशा निर्देशों पर ही कर रहे हैं क्योंकि पूर्व परिवहन आयुक्त आज दिल्ली उपराज्यपाल के प्रिंसिपल सेक्रेट्री पद पर कार्यरत हैं और उपराज्यपाल भी हर सच की जानकारी होते हुए है चुप।

ऑटो /टैक्सी वीआईयू शाखा में नंबर प्लेट स्टिकर के नाम पर अनावश्यक शुल्क वसूली के संबंध में शिकायत

आलोक तिवारी, नई दिल्ली। दिल्ली राज्य प्राधिकरण में नंबर प्लेट व स्टीकर के नाम पर कंपनी द्वारा खुली लूट की जा रही है में ऑटो रिक्शा /टैक्सी VIU यूनिट के चालकों से नंबर प्लेट स्टिकर के नाम पर प्राइवेट कंपनी द्वारा अनावश्यक रूप से उनके एजेंट और टाउट्स द्वारा लगभग 500 अतिरिक्त शुल्क वसूला जा रहा है। यह शुल्क वैध प्रक्रिया के अंतर्गत नहीं आता और ना ही चालकों को कोई सुरक्षा की दृष्टि से कोई फायदा हो रहा है सिर्फ कंपनी को फायदा पहुंचाया जा रहा है इसकी तह तक जाएं और निष्पक्ष जांच करके चालकों को आर्थिक रूप से शोषित करने करने के प्रयास को तत्काल बदलाव किया जाए। यह जबरन शुल्क वसूलने की योजना न केवल कानून के खिलाफ है, बल्कि इससे ऑटो रिक्शा और टैक्सी चालकों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अधिकतर चालक निम्न आय वर्ग से संबंधित होते हैं और इस प्रकार की अवैध वसूली उनके जीवन-यापन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। अतः आपसे निवेदन है कि इस मामले की शीघ्र जांच कराई जाए तथा दोषियों के खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए, ताकि वाहन चालकों का शोषण रोका जा सके। कृपया इस शिकायत को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक कदम उठाएं।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र फेज-2 में अतिक्रमण से उद्यमी परेशान

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अतिक्रमण हटाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष, विरेन्द्र कुमार चतुर्वेदी ने कहा है कि पश्चिमी दिल्ली के औद्योगिक क्षेत्र मायापुरी फेज-2 के डी-ब्लॉक, डी-1, बी-ब्लॉक, सी-ब्लॉक, डब्लू ब्लॉक एवं जी. आई. ब्लॉक 1977 में मोतियाखान से शिफट किया गया था उद्योग लगाने के लिए। लेकिन यहाँ पर कुछ उद्योग लगे और कुछ दुकानें पूराने स्पेयर पार्टस के खुले। डी.डी. के अधिकारियों की मिली भगत से यह औद्योगिक क्षेत्र कबाड़ माकिर्ट में तबदील हो गया है जिससे डी.डी.ए. एवं नगर निगम को भारी राजस्व की हानि हो रहा है। दिल्ली नगर पश्चिमी क्षेत्र के अधिकारियों एवं दिल्ली पुलिस के मिली भगत से यह औद्योगिक क्षेत्र अतिक्रमण का शिकार हो रहा है। मेन सड़कों एवं गलियों में दुकानदारों के द्वारा पुराने स्पेयर पार्टस रखा जाता है जिससे चारों तरफ अतिक्रमण हो चुका है। यहाँ पर पैदल चलना भी मुश्किल है यहाँ उद्योग चलाने वाले कई लोगों ने अपने नाम गुप्त रखने के शर्त पर बताया कि यहाँ नगर निगम के कर्मचारी दुकानदारों से प्रत्येक माह 20 से 25 लाख रूपये उगाही करते है और इसकी एवज में दुकानदारों के द्वारा सड़कों पर माल रखते हैं।

डी-ब्लॉक फेज-2, मायापुरी जहाँ पर पोस्ट ऑफिस अनेकों बैंक है वहाँ पर भी पुराने टायर और पुराने स्पेयर पार्टस वाले सड़कों पर कब्जा कर रखे है इसकी शिकायत लिखित में उपराज्यपाल, आयुक्त दिल्ली नगर निगम, उपायुक्त पश्चिमी क्षेत्र, दिल्ली नगर निगम को अनेकों बार किया जा चुका है। उसके बावजूद भी अतिक्रमण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यहाँ पर खुले में जनरेटर का रिपेयरिंग, मोबिल आयल का बिखराव देखा जा सकता है। कई उद्यमियों ने बताया कि अतिक्रमण की समस्या की वजह से हमें काम धन्धा में परेशानी होती है और यहाँ से हम शिफट करने की तैयारी कर रहे है।

परिवहन मंत्री ने सड़कों पर बेहतर यातायात प्रबंधन के लिए बिना पंजीकरण वाले वाहनों के खिलाफ सख्त अभियान चलाने के निर्देश दिए

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में नियमों का उल्लंघन कर सड़कों पर दौड़ रहे वाहनों पर कार्रवाई की जाएगी। दिल्ली परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने सड़कों पर बेहतर यातायात प्रबंधन के लिए बिना पंजीकरण वाले वाहनों के खिलाफ सख्त अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। इस अभियान का उद्देश्य दिल्ली की सड़कों को वाहनों के अतिक्रमण से मुक्त कराना है।

नई दिल्ली। परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने बुधवार को परिवहन विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। इस बैठक के दौरान उन्होंने दिल्ली की सड़कों पर बेहतर यातायात प्रबंधन के लिए बिना पंजीकरण वाले वाहनों के खिलाफ सख्त अभियान चलाने के निर्देश दिए। इस बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव (परिवहन), एमडी दिल्ली मेट्रो के साथ परिवहन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

मंत्री ने सार्वजानिक परिवहन के साथ व्यावसायिक वाहनों की लाइव ट्रैकिंग प्रणाली की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लाइव ट्रैकिंग को प्रभावी रूप से लागू करना आवश्यक है।

अधिकारियों ने मंत्री को बताई चुनातियां

दिल्ली सचिवालय में आयोजित इस बैठक के दौरान अधिकारियों ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से मंत्री को ई-चालान प्रणाली, पुराने वाहनों को हटाने, एआइ तकनीक के उपयोग और इलेक्ट्रिक वाहन नीति के क्रियान्वयन में आ रही चुनौतियों से अवगत कराया।

मंत्री ने दिल्ली की सडकों पर वाहनों के अतिक्रमण रोकने के लिए सख्त अभियान चलाने का निर्देश देते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य "विकसित दिल्ली" का निर्माण करना है, जिसके लिए अगले 100 दिनों के रोडमैप पर कार्य किया जाएगा।

उन्होंने परिवहन विभाग के एनफोर्समेंट विंग में दिल्ली में जाम की समस्या को देखते हुए वाहनों की जांच के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों को सडकों पर उतारने का निर्देश दिया।

ट्रक चालकों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश

बैठक में ई-चालान प्रक्रिया की समीक्षा करते हुए उन्होंने बिना वैध फिटनेस प्रमाणपत्र के सडकों पर चल रहे पेट्रोल, डीजल, एवं सीएनजी वाहनों पर नियमों के आधार पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। साथ ही ऐसे पेट्रोल पंप संचालकों पर भी कार्रवाई करने को कहा जो इन अनफिट वाहनों को ईंधन देते हैं।

मंत्री ने कहा कि यह बात संज्ञान में आई है कि भारी वाहनों द्वारा स्लिप रोड का उपयोग किया जाता है जिनपर भारी वाहनों का संचालन प्रतिबंधित है। इस विषय पर मंत्री ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे ट्रक चालकों पर सख्त कार्रवाई आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त मंत्री ने डीटीआइडीसी के प्रभावी वित्तीय प्रबंधन की सराहना की। उन्होंने अधिकारियों को इलेक्ट्रिक वाहन नीति के लक्ष्यों की समीक्षा कर अप्रैल 2025 से लागू होने वाली नई नीति पर पुनः कार्य करने का निर्देश दिया। मंत्री ने मुकुंदपुर से मौजपुर, आर.के. आश्रम से जनकपुरी पश्चिम और एरोसिटी से तुगलकाबाद तक नई मेट्रो लाइनों की प्रगति की भी समीक्षा की और इनके शीघ्र पूरा होने पर जोर दिया।

250 से ज्यादा चलेंगी स्पेशल ट्रेनें; महिलाओं के लिए होगी खास व्यवस्था

कुंभ के बाद अब रेलवे के सामने होली की भीड़ को संभालने की चुनौती है। उत्तर रेलवे में 250 से अधिक विशेष ट्रेनें चलाई जाएंगी। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भीड़ प्रबंधन के लिए अस्थायी प्रतीक्षालय अतिरिक्त टिकट काउंटर और पूछताछ काउंटर बनाए जाएंगे। महिलाओं के लिए विशेष काउंटर भी खोले जाएंगे। इस लेख के माध्यम से जानिए पूरी खबर।

नई दिल्ली। महाकुंभ के बाद अब रेलवे प्रसासन के सामने होली की भीड़ संभालने की चुनौती है। इसकी तैयारी शुरू कर दी गई है। उत्तर रेलवे में 250 से अधिक विशेष ट्रेनें चलाई जाएगी। इसमें से अधिकांश दिल्ली के स्टेशनों से चलेंगी। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भीड़ प्रबंधन के लिए विशेष कदम उठाए जा रहे हैं। स्टेशन के बाहर अस्थायी प्रतीक्षालय बनाने के साथ ही आवश्यकता अनुसार रेल कर्मियों व रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के जवान तैनात किए जाएंगे।

पांच अधिकारियों को पद से हटाया : भीड़ प्रबंधन में लापरवाही में लापरवाही के कारण 15 फरवरी की रात नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ होने से 18 लोगों की मौत हो गई थी। इस मामले में दिल्ली के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) सहित पांच अधिकारियों को उनके पद से हटा दिया गया है। उत्तर मध्य रेलवे में मुख्य विद्युत लोको अभियंता के पद पर तैनात पुष्पेश आर त्रिपाठी को दिल्ली को नया डीआरएम बनाया गया है। उनके सामने पहली चुनौती होली की भीड़ संभालने की है।

विशेष ट्रेनें चलाने की तैयारी : रेलवे अधिकारियों ने बताया कि प्रत्येक रूट की ट्रेनों में भीड़ का आंकलन किया जा रहा है। आवश्यकता के अनुसार विशेष ट्रेनों की घोषणा की जा रही है। स्टेशनों पर भीड़ बढने की स्थिति में अल्प सूचना के आधार पर भी विशेष ट्रेनें चलाने की तैयारी है।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अजमेरी गेट की तरफ अस्थायी प्रतीक्षालय बनाया जा रहा है, जिसमें जनरल टिकट काउंटर, ट्रेन व यात्रियों से संबंधित अन्य आवश्यक जानकारी देने की व्यवस्था, पानी व शौचालय जैसी सुविधाएं उपलब्ध होगी।

प्लेटफार्म पर भीड़ न बढ़े इसके लिए यात्रियों को अस्थायी प्रतीक्षालय में रोका जाएगा। ट्रेन आने से कुछ देर पहले उन्हें प्लेटफार्म पर भेजने की अनुमति होगी। स्टेशन पर अतिरिक्त टिकट काउंटर, पूछताछ काउंटर व महिलाओं के लिए विशेष काउंटर खोले जाएंगे। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 15 फरवरी को भगदड़ वाले दिन अधिक जनरल टिकट बेचे जाने की भी बात कही जा रही है। इसे ध्यान में रखकर प्रत्येक घंटे जनरल टिकट बिक्री की समीक्षा की जाएगी। अधिकांश विशेष ट्रेनें प्लेटफार्म नंबर 16 से चलाने का प्रयास किया जाएगा, जिससे कि यात्रियों को फुट ओवर ब्रिज का प्रयोग न करना पड़े।

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव ,कैरियर,रोग और उपाय:

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी .)

धनिष्ठा नक्षत्र मंडल का 23 वां नक्षत्र है जो कि उलूपी तारामंडल का सदस्य तारा है। धनिष्ठा में 4 तारों का समूह है जो कि ढोल या मृदंग के समान आकृति के समान प्रतीत होता है। धनिष्ठा शब्द का अर्थ है धन वैभव संपन्न। श्रवण नक्षत्र के बाद में पड़ने के कारण प्राचीन विद्वानों द्वारा इसे श्रविष्ठा भी नाम दिया गया। धनिष्ठा नक्षत्र का नक्षत्रपति स्वामी ग्रह मंगल तथा अधिष्ठाता देवता अष्ट वसु को माना है।

स्वभाव: धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक के स्वभाव में अष्ट वासुओं का स्वभाव देखने को मिलता है। इस नक्षत्र के जातक साहसी,ज्ञानी, चुनौतियों का सामना करने वाला,स्थिर बुद्धि वाला,संवेदनशील,

परोपकारी, निश्छल,उत्साही,उच्च मनोबल वाला तथा कुशल विचारक होता है। अन्य विद्वानों ने इन्हे निडर,उदार,संगीत प्रेमी,काला निपुण तथा पराक्रमी स्वभाव का बताया है।

कैरियर: धनिष्ठा नक्षत्र के जन्मे जातक मंच कलाकार,सोने चांदी के व्यापारी,भौतिकी विशेषज्ञ,शल्य चिकित्सक, सैन्य कर्मी ,ज्योतिषी,

खिलाड़ी, एथलीट,प्रबंधक,भू विशेषज्ञ,गायक,संगीतकार,उच्च अधिकारी,वैज्ञानिक,इंटीरियर डिजाइन आदि में अपना कैरियर बना कर सफल हो सकते हैं।

रोग: धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक को रक्तचाप,पैरों में चोट,हृदय रोग

बेहोशी आदि बीमारियों से जूझना होता है।

उपाय: धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे जातक को ॐ 'रं' बीज मंत्र का जाप करना चाहिए तथा सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति हेतु मां दुर्गा की उपासना करना चाहिए। इसके अलावा अष्ट वासुओं का प्रतिदिन नाम लेकर उन्हें प्रणाम करें। अष्ट वसुओं के नाम कुछ इस प्रकार है आप,ध्रुव, सोम, धर,अनिल, अनल,प्रत्युष,प्रभास आदि। इनके लिए लाल,नीला तथा पीला रंग का उपयोग लाभकारी होता है।

मासिक दुर्गाष्टमी

हिंदू धर्म में शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि बहुत ही विशेष मानी जाती है। यह तिथि माता दुर्गा को समर्पित की गई है। हर माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मासिक दुर्गाष्टमी मनाई जाती है। इस दिन माता दुर्गा के व्रत और पूजन का विधान है। इस दिन विधि-विधान से माता का व्रत और पूजन करने से जीवन की सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। जीवन में धन वैभव और सौभाग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही मां के आशीर्वाद से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

कब है मासिक दुर्गाष्टमी ? वैदिक पंचांग के अनुसार, फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि की शुरुआत 6 मार्च को सुबह 10 बजकर 50 मिनट पर हो जाएगी। वहीं इस अष्टमी तिथि का समापन अगले दिन यानी 7 मार्च को सुबह 9 बजकर 18 मिनट पर होगा। हिंदू धर्म में उदया तिथि मानी जाती है। ऐसे में उदया तिथि के अनुसार, 7 मार्च को फाल्गुन माह की दुर्गाष्टमी मनाई जाएगी।

मासिक दुर्गाष्टमी का महत्व हिंदू धर्म के अनुसार, मासिक दुर्गाष्टमी के दिन मां दुर्गा की पूजा और व्रत करने वाले व्यक्तियों के जीवन के सभी दुख समाप्त हो जाते हैं। इस दिन व्रत और पूजा करने वालों पर मां दुर्गा की विशेष कृपा होती है। इसके साथ ही, मां की कृपा से उनके घर में सुख और समृद्धि बनी रहती है। धन से संबंधित समस्याएं नहीं आतीं और जातक के अधूरे कार्य पूर्ण हो जाते हैं।

मासिक दुर्गाष्टमी की पूजा विधि मासिक दुर्गाष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करना चाहिए। इसके बाद मंदिर या पूजा स्थल की सफाई कर गंगाजल का छिड़काव करना चाहिए, ताकि पूजा स्थल शुद्ध हो जाए। इसके बाद लकड़ी की चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर माता दुर्गा की मूर्ति या तस्वीर रखनी चाहिए। इसके बाद जल से भरा कलश स्थापित कर धूप और दीपक जलाना चाहिए।

फिर मां दुर्गा को लाल चुनरी चढ़ाकर रोली और चावल से तिलक करना चाहिए। फिर उनको फूल चढ़ाने चाहिए।

मां दुर्गा को सोलह श्रृंगार का सामान चढ़ाना चाहिए। फिर मां दुर्गा की पूजा करनी चाहिए। मां दुर्गा को फल और मिठाई का भोग लगाना चाहिए। दुर्गा सप्तशती और दुर्गा चालीसा का पाठ भी करना चाहिए। अंत में मां दुर्गा की आरती के साथ पूजा का समापन करना चाहिए।

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत के नियम

1. मासिक दुर्गाष्टमी पर घर खाली नहीं छोड़ना चाहिए।

2. सुबह से शाम तक कुछ नहीं ग्रहण करना चाहिए। संभव ना हो तो फल और दूध ग्रहण कर सकते हैं।

3. शाम को विधि विधान से मां दुर्गा की पूजा करनी चाहिए।

4. सूर्यास्त के बाद ही व्रत समाप्त करना चाहिए।

5. सात्विक भोजन से ही व्रत का पारण करना चाहिए।

जितना हो सके मौन रहना ही अच्छा है क्योंकि सब से ज्यादा अपराध मनुष्य अपनी जुबान से ही करता है।

हमने बचपन से ही किताबों में पढ़ा था कि जानवर को मनुष्य के रूप में विकसित होने में हजारों वर्ष लग गए जबकि आजकल समाचार पत्र पढ़कर लगता है कि मनुष्य को जानवर बनने में एक क्षण भी नहीं लगता। परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी विपरीत क्यों न हों, सदैव सकारात्मक रहें। व्यक्ति का अहंकार सत्य को स्वीकार नहीं करता जबकि सत्य को जानने वाला कभी अहंकार नहीं करता। अपने सत्य को सिद्ध करने के लिए, किसी से भी जिद्द करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्य स्वयं सही समय पर स्वयं-सिद्ध हो जाता है। ध्यान रहे कि क्रोध में बोला हुआ एक कठोर शब्द इतना जहरीला/विषैला हो सकता है कि पिछली हजार प्यारी बातों को एक क्षण में नष्ट कर सकता है। संसार में शान्ति से बढ़ कर कोई तप नहीं है। सन्तोष के समान परम सुख और तृष्णा से बढ़ कर कोई रोग नहीं है। इसी प्रकार दूसरे के दुःखों से दुःखी होकर उनकी सहायता के लिए तत्पर रहना ही मनुष्य का वास्तविक धर्म है। वास्तव में, बदलता हुआ समय और बदलते हुये लोग किसी के भी नहीं हुआ करते। इसलिए सच्चा व्यक्ति ना तो नास्तिक होता हैं ना ही आस्तिक होता हैं। सच्चा व्यक्ति प्रत्येक क्षण केवल वास्तविक होता है। होश रहे कि कभी भी अपने गुरु से मुंह मोड़ने में जल्दबाजी न करें। गुरु से की गई प्रार्थना एक बीज के समान होती है, हम नहीं जानते कि यह बीज किस दिन अंकुरित होकर फूल बन जाएगा ?

क्या भारत और अमेरिका के बीच सुलग रहा है एक नया व्यापारिक युद्ध ?

[आयात कर की जंग और मैत्री]

वैश्विक व्यापार के मंच पर एक नया विवाद उभर रहा है, जिसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर यह आरोप लगाया है कि वह अमेरिकी उत्पादों पर अनुचित और अत्यधिक आयात कर थोप रहा है, जिससे अमेरिकी व्यापारिक संस्थानों को नुकसान हो रहा है। इसके जवाब में, ट्रंप प्रशासन ने आगामी 2 अप्रैल से भारत के खिलाफ प्रतिशोधात्मक शुल्क लगाने की घोषणा की है। यह निर्णय न केवल व्यापारिक संतुलन को प्रभावित कर सकता है, बल्कि दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण संबंधों में भी दरार डाल सकता है। भारत और अमेरिका अब तक व्यापारिक सहयोग को मजबूत करने की दिशा में बढ़ रहे थे, लेकिन यह नया विवाद उनके रिश्तों में तनाव बढ़ाने की आशंका पैदा कर रहा है। प्रश्न यह है कि क्या यह विवाद एक नए व्यापारिक युद्ध की शुरुआत है या फिर कूटनीति और समझदारी से इसका शांतिपूर्ण समाधान संभव है ? इस मुद्दे ने वैश्विक स्तर पर भी चिंता और चर्चा को जन्म दिया है।

अमेरिका का मानना है कि भारत उसके उत्पादों पर अत्यधिक शुल्क लगाकर अमेरिकी कंपनियों को नुकसान पहुँचा रहा है। दूसरी ओर, भारत का तर्क है कि उसके द्वारा लगाए गए शुल्क विश्व व्यापार संगठन (WTO) के नियमों के अनुरूप हैं और स्वदेशी उद्योगों की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। ट्रंप प्रशासन का दावा है कि अमेरिका लंबे समय से व्यापारिक असंतुलन का शिकार रहा है और इस असमानता को दूर करने के लिए कड़े कदम उठाने जरूरी हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह विवाद केवल आयात कर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यापारिक रणनीतियाँ, राष्ट्रीय हित और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसे गहरे तत्व जुड़े हुए हैं। भारत और अमेरिका दोनों ही बड़े व्यापारिक खिलाड़ी हैं, और उनके बीच बढ़ते मतभेदों का असर केवल द्विपक्षीय व्यापार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा।

यदि अमेरिका भारत पर प्रतिशोधात्मक शुल्क लगाता है, तो इसका प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर पड़ सकता है। विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, औषधि, वस्त्र और ऑटोमोबाइल उद्योगों पर इसका गहरा असर देखने को मिल सकता है। अमेरिकी बाज़ार में भारतीय उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी होगी, जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो सकती है। भारत के लिए अमेरिका एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है, और ऐसे में यदि यह विवाद बढ़ता है, तो इससे भारत के निर्यातकों को गंभीर नुकसान हो सकता है। विशेष रूप से फार्मा और आईटी सेक्टर, जो अमेरिकी बाज़ार में व्यापक पैमाने पर कारोबार करते हैं, इस फैसले से प्रभावित हो सकते हैं।

भारत सरकार ने इस विवाद को वार्तालाप के माध्यम से सुलझाने की इच्छा प्रकट की है। सरकार का मानना है कि व्यापारिक संधियों के तहत एक संतुलित समाधान निकाला जा सकता है। भारत की नीति यह संकेत देती है कि वह अमेरिका के साथ अपने व्यापारिक संबंधों को लेकर सतर्क है और किसी भी प्रकार की कटुता से बचना चाहता है। हालांकि, भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने स्वदेशी उद्योगों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। यदि भारत अमेरिकी उत्पादों पर आयात कर में कमी करता है, तो इससे स्थानीय कंपनियों को नुकसान हो सकता है। इसलिए सरकार के सामने यह चुनौती है कि वह ऐसा समाधान निकाले जो न केवल भारतीय उद्योगों की सुरक्षा करे, बल्कि अमेरिका के साथ व्यापारिक रिश्तों को भी मजबूत बनाए रखे।

यह विवाद केवल भारत और अमेरिका तक सीमित नहीं है। वर्तमान में अमेरिका और चीन के बीच पहले से ही व्यापारिक तनाव चल रहा है, और यदि भारत-अमेरिका के बीच यह विवाद लंबा खिंचता है, तो इसका वैश्विक व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस समस्या का समाधान केवल कूटनीतिक संवाद और व्यापारिक संधियों के माध्यम से ही संभव हो सकता है। भारत और अमेरिका दोनों को इस विवाद को जल्द से जल्द सुलझाने के लिए वार्ता प्रारंभ करनी चाहिए, ताकि यह किसी बड़े व्यापारिक युद्ध का रूप न ले।

व्यापारिक विवाद और शुल्क विवाद केवल आर्थिक मुद्दे नहीं होते, बल्कि वे व्यापक कूटनीतिक और राष्ट्रीय हितों से जुड़े होते हैं। भारत और अमेरिका को यह समझना होगा कि उनकी नीतियों का असर केवल उनके देशों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक व्यापार तंत्र पर भी पड़ेगा। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह ऐसी रणनीति अपनाएं जिससे न केवल उसके स्वदेशी उद्योग सुरक्षित रहें, बल्कि अमेरिका जैसे प्रभावशाली व्यापारिक साझेदार के साथ उसके संबंध भी मजबूत बने रहें। इसी प्रकार, अमेरिका को भी भारत के साथ संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है, ताकि दोनों देशों के बीच व्यापारिक सहयोग की संभावनाएँ बनी रहें। अतः यह समय दोनों देशों के लिए समझदारी से निर्णय लेने का है, ताकि व्यापारिक असंतुलन को दूर किया जा सके और वैश्विक बाज़ार में स्थिरता बनी रहे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

प्रेम की नई परिभाषाएं गढ़ रहे सोशल मीडिया मंच !

सुनील कुमार महला

आज सूचना तकनीक और प्रौद्योगिकी का जमाना है। समय लगातार परिवर्तित हो रहा है और होना भी चाहिए, क्यों कि परिवर्तन ही असली जीवन है, लेकिन आज तकनीक और प्रौद्योगिकी के इस जमाने में सोशल मीडिया मंच हमारे पारंपरिक मूल्यों, आदर्शों, प्रतिमानों, हमारे सांस्कृतिक-सामाजिक नैतिक मूल्यों को कहीं न कहीं धूमिल करते चले जा रहे हैं। हाल ही में हरियाणा के रोहतक में एक नेता की हत्या से पूरा हरियाणा सन्न है। ख़बरें बतातीं हैं कि नेता की लाश एक मार्च को सूटकेस में मिली थी। पुलिस ने इस मामले में तेजी से कार्रवाई की और कातिल तक जा पहुंची और अब इस सनसनीखेज हत्याकांड का मुख्य आरोपी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से पकड़ा जा चुका है।पूछताछ में यह पता चला है कि हत्या का आरोपी शादीशुदा ही नहीं, बल्कि उसके दो बच्चे भी हैं। वास्तव में,हरियाणा के रोहतक में नेता की नृशंस हत्या ने एक बार फिर सोशल मीडिया को निशाने पर ला दिया है। जानकारी के अनुसार गिरफ्तार आरोपित से मृतका का परिचय कथित रूप से सोशल मीडिया मंच फेसबुक के माध्यम से हुआ और उसकी चरम परिणति इस हत्याकांड के रूप में सामने आई है। हालांकि, मामले में क्या सच है और क्या झूठ है, यह सब तो मामले की पूरी जांच-पड़ताल के बाद ही सामने आ पायेगा लेकिन इतना जरूर है कि हरियाणा में हुई इस घटना ने हाल फिलहाल एक गहरी सामाजिक बहस ज़रूर छेड़ दी है। कहना चाहूंगा कि आज के इस आधुनिक युग में एक ओर जहां सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे फेसबुक और इंस्टाग्राम नए रिश्तों की नींव बन रहे हैं, वहीं दूसरी ओर फेसबुकिया प्यार ऐसा भी है, जो व्यक्ति को न घर का छोड़ता है और न ही घाट का। आज इन सोशल मीडिया मंचों पर प्यार,धोखा,शादी जैसे अनेक शगूफे (विलक्षण बातें) चलते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज सोशल मीडिया कमोबेश हम सभी के सामाजिक(सोशल) और रचनात्मक(क्रिएटिव)जीवन का एक बड़ा व महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि हम सोशल मीडिया के लाभों की बात करें तो इनमें आपसी संपर्क, सीखना और रचनात्मकता को शामिल किया जा सकता हैं, लेकिन इसके साथ ही इन मंचों के अनेकजोखिम भी हैं जैसे अनुपयुक्त सामग्री, साइबर धमकी, तथा गोपनीयता एवं डेटा उल्लंघन आदि। दूसरे शब्दों में कहें तो आज के इस आधुनिक दौर में सोशल मीडिया हम सभी की ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है, जिसके बहुत सारे फीचर हैं, जैसे कि सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षा प्रदान करना मुख्य रूप से शामिल हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज सोशल मीडिया संचार का द्रुत गति माध्यम है, और इसकी सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की ही भूमिकाएं हैं। मसलन यदि सकारात्मक भूमिकाओं की बात करें तो इससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स की लोकतंत्र को समृद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।यह हमारे देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों को बनाए रखने में भी कहीं न कहीं अपनी भूमिका निभा रहा है।मसलन आज सोशल मीडिया के माध्यम से अनेक जन-जागरूकता अभियान चलायें जाते हैं, भ्रष्टाचार के खिलाफ काम करने में, चुनावों, स्वच्छता अभियान भी इसकी भूमिका है। आज अनेक कार्यक्रम सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर चलाए जाते हैं, लेकिन इसकी नकारात्मक भूमिका भी है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर ग़लत कंटेंट फैलाया जाता है, इस मंच पर दुर्भावनाएं फैलाकर समाज को बांटने की कोशिशें की जातीं हैं। भ्रामक, ग़लत, अश्लील ,अभद्र जानकारियों को हवा दी जाती है। सूचनाओं को तोड़ मरोड़कर कर प्रस्तुत कर दिया जाता है। साइबर अपराध, जानकारियों का स्वरूप बदलना, सूचनाओं,डेटा की चोरी आदि इसके नकारात्मक प्रभाव हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि ये सभी सोशल नेटवर्किंग साइट्स के स्याह/काले पक्ष हैं।संवाद और संबंधों के नए द्वार के बीच आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स यथा फेसबुक-इंस्टाग्राम जैसे मंच, प्रेम की नई परिभाषाएं गढ़ रहे हैं। ये बहुत ही दुखद है कि आज के समय में इन फेसबुकिया प्रेम कहानियों का अंत अक्सर त्रासदियों में बदलता दिखाई देता है।सच तो यह है कि आज वर्चुअल वर्ल्ड (सोशल नेटवर्किंग साइट्स) ने कहीं न कहीं हमारे रिश्तों में धोखे, ब्लैकमेलिंग, आत्महत्या, हत्या और सामाजिक विघटन को जन्म दिया है। आज इन मंचों पर दिखावा, छल-कपट, धोखाधड़ी का बोलबाला है। इन मंचों पर अधिक से अधिक लाइक, शेयर, कमेंट्स के चक्कर में अनेकों बार हम अपना सर्वस्व लुटा बैठते हैं। युवा पीढ़ी तो इनके जाल में फंसती प्रतीत होती है। क्यों कि युवा पीढ़ी आज नेम एंड फेम के चक्कर में इन मंचों का शिकार बन रही है। कहना चाहूंगा कि आभासी दुनिया आज हमारी युवा पीढ़ी पर हावी हो चली है। सच तो यह है कि आज फेसबुकिया किस्म के प्रेम की परिणतियाँ हत्या, आत्महत्या, ऑनर किलिंग, धोखाधड़ी और अनेक प्रकार की आपराधिक वारदातों के रूप में देखने को मिली हैं। फेसबुकिया प्रेम में फंसकर अच्छा भले बसे , जीवनयापन कर रहे परिवार बर्बाद हो रहे हैं। अपहरण, ब्लैकमेल(अश्लील वीडियो बनाकर), साइबर ठगी, धोखाधड़ी की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। इससे युवा पीढ़ी में तनाव और अवसाद पैदा हो रहा है। वास्तव में, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म में हमारे विचारों और कार्यों को प्रभावित करने की अभूतपूर्व शक्ति व क्षमताएं है, लेकिन इस शक्ति का उपयोग अच्छे के लिए करना हम पर निर्भर है। अक्सर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग व प्रयोग करते समय हमें यह चाहिए कि हम लोगों के व्यवहार का ठीक से निरीक्षण करें और किसी भी पैटर्न या प्रवृत्ति की पहचान करने की कोशिश करें। वास्तव में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग या प्रयोग करते समय हमें यह चाहिए कि हम लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री के प्रकार, उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा, कंटेंट(सामग्री)और उनके द्वारा व्यक्त की जाने वाली भावनाओं का जागरूक होकर भली प्रकार से विश्लेषण करें। वास्तव में, अपने शोध अनुभवों(रिसर्च एक्सपीरियंसेज)और विभिन्न निष्कर्षों के आधार पर, हमें सकारात्मक ऑनलाइन व्यवहार को बढ़ावा देने और नकारात्मक वास्तविक दुनिया की कार्रवाइयों को कम करने के लिए रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है। इनमें नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने वाले सोशल मीडिया अभियान या जिम्मेदार सोशल मीडिया उपयोग सिखाने वाले विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम(एजुकेशनल प्रोग्राम) शामिल हो सकते हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के क्रम में आज सतत निगरानी और मार्गदर्शन की विशेष आवश्यकता है, क्यों कि आज के इस दौर में सोशल मीडिया की भूमिका हमारी सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बाँटने वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है। यह ठीक है कि आज सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ने और खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है, लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि आज माता-पिता, अभिभावकों की निरंतर व्यस्तता, बच्चों के लिए असीमित इंटरनेट की सुविधा(अनलिमिटेड इंटरनेट फेसिलिटी) कहीं न कहीं अनेक समस्याओं को जन्म दे रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए। यदि हम यहां आंकड़ों की बात करें तो आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में भारत में तकरीबन 350 मिलियन से भी ज्यादा सोशल मीडिया यूज़र हैं। वर्ष 2023 तक यह संख्या लगभग 447 मिलियन तक थी और आज इससे भी अधिक हो गई है। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2019 में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उपयोगकर्ता औसतन 2.4 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं।डाटारिपोर्टल डॉट कॉम और केपियोस की मानें, तो अक्तूबर 2024 तक दुनियाभर में सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या 5.22 अरब पर पहुंच गयी थी। एक आंकड़ा बताता है कि जनवरी 2024 में भारत में 46.2 करोड़ (462.0 मिलियन) सक्रिय सोशल मीडिया यूजर थे।आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत की कुल इंटरनेट यूज़र बेस का (बिना किसी आयु निर्धारण के), 61.5 प्रतिशत ने जनवरी 2024 में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग किया था।जनवरी 2024 में सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के बीच,68.6 प्रतिशत भारत के सोशल मीडिया यूज़र पुरुष थे, जबकि 31.4 प्रतिशत महिलाएं थी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स वर्चुअल वर्ल्ड की दुनिया है, जहां प्रेम की आभासी स्वीकृति हमारे देश के युवाओं को दिशा भ्रमित कर रही है। इसके लिए जरूरत इस बात की है कि इन मंचों पर लगातार तकनीकी निगरानी और सख्ती तो रखी जाए ही, साथ ही साथ आभासी दुनिया से परे विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी में संवाद संस्कृति को सशक्त करने की दिशा में यथेष्ठ और नायाब प्रयासों की पहल की जाए। पाठकों को बताता चलूं कि 'इंटरनेट इन इंडिया' के मुताबिक, भारत में इस वर्ष यानी कि 2025 के दौरान इंटरनेट यूज़र्स की संख्या 90 करोड़ के पार हो सकती है। यह एक आश्चर्यजनक लेकिन सत्य तथ्य है कि आज ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट यूज़र शहरी क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक तेजी से बढ़ रहे हैं।

गृह प्रवेश पूजा विधि हिंदू धर्म में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुष्ठान है

क्या आपको पता है गृह प्रवेश पूजा विधि (गृह प्रवेश समारोह या गृह प्रवेश पूजा) हिंदू धर्म में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अनुष्ठान है, जब आप किसी नए घर में जाते हैं या किसी मौजूदा घर का नवीनीकरण करते हैं। इस समारोह का उद्देश्य घर में समृद्धि, शांति और सद्भाव को आमंत्रित करना और नए घर में शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन के लिए भगवान गणेश, लक्ष्मी और अन्य देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करना है।

गृह प्रवेश पूजा की विधि (चरण-दर-चरण प्रक्रिया)

1. पूजा की तैयारी (पूजा के लिए तैयारी):

सफाईः सुनिश्चित करें कि नया घर या पूजा के लिए जगह साफ और ठीक से व्यवस्थित हो। पूजा सामग्री (आवश्यक वस्तुएँ):

1. कलश (पवित्र जल पात्र)
2. आम के पत्ते
3. ताज़े फल और फूल, चावल (अक्षत)
4. घी (शुद्ध मक्खन)
5. अगरबत्ती
6. दीपक
7. पंचामृत (दूध, शहद, घी, दही और चीनी का मिश्रण)
8. मिठाई
9. नारियल
10. चाँदी या ताँबे के सिक्के

भगवान गणेश, लक्ष्मी और अन्य पसंदीदा देवताओं की तस्वीर या मूर्ति,पानी के लिए पीतल या ताँबे का बर्तन।

2. पंडित या पुजारी का आगमनः पुजारी (पंडित) का सम्मानपूर्वक स्वागत किया जाना चाहिए। पुजारी परंपराओं के अनुसार समारोह का मार्गदर्शन करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि सभी अनुष्ठानों का पालन किया जाए।

3. गणेश पूजा (गणेश पूजा): नए घर में प्रवेश करने से पहले, सभी बाधाओं को दूर करने और समृद्धि लाने के लिए भगवान गणेश की पूजा की जाती है। गणेश मंत्र का जाप करें: ॐ गं गणपतये नमः (ओम गं गणपतये नमः) भगवान गणेश को फूल, मिठाई और नारियल चढ़ाएं।

4. वास्तु पूजन (वास्तु पूजा): इस चरण में वास्तु पुरुष, दिशाओं के देवता और घर के संरक्षक की पूजा करना शामिल है। कलश (पानी से भरा बर्तन) घर के केंद्र में रखा जाता है, और इसके चारों ओर आम के पत्ते रखे जाते हैं। पुजारी वास्तु मंत्रों का पाठ कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि घर सकारात्मक ऊर्जा से जुड़ा हुआ है। यह नए घर को शुद्ध करने और किसी भी नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करने के लिए किया जाता है।

5. अग्नि पूजन (अग्नि पूजा - अग्नि अनुष्ठान): तांबे या मिट्टी के बर्तन में पवित्र अग्नि (हवन) जलाएं। अग्नि मंत्र का जाप करते हुए अग्नि में घी, चावल और अन्य चीजें चढ़ाएं और भगवान अग्नि (अग्नि के देवता) का आह्वान करें, पवित्रता, स्वास्थ्य और कल्याण का आशीर्वाद मांगें।

6. लक्ष्मी पूजनः गणेश और वास्तु पूजा के बाद, घर में समृद्धि और सौभाग्य लाने के लिए धन की देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। दीया जलाएं और देवी लक्ष्मी को पंचामृत अर्पित करें और मंत्रोच्चार करें: ॐ श्रीं महालक्ष्मी नमः आप उन्हें मिठाई, फल और फूल भी चढ़ा सकते हैं।

7. गृह प्रवेशः पूजा अनुष्ठान पूरा होने के बाद, परिवार के मुख्य सदस्य नए घर में प्रवेश करते हैं, आमतौर पर दाहिने पैर से शुरू करते हैं। प्रवेश करते समय, चावल और पानी से भरा कलश दरवाजे पर समृद्धि और कल्याण के प्रतीक के रूप में रखा जाना चाहिए। पुजारी घर के चारों ओर शुद्धिकरण के लिए पवित्र जल और गुलाब जल छिड़क सकते हैं।

8. प्रार्थना और आशीर्वादः परिवार के सदस्यों को एक साथ बैठना चाहिए और नए घर में परिवार की भलाई, स्वास्थ्य और सफलता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पुजारी अपना आशीर्वाद देंगे और परिवार की परंपराओं या प्राथमिकताओं के अनुसार अतिरिक्त अनुष्ठान भी कर सकते हैं।

9. भोजन और मिठाई चढ़ाएँ: समारोह के अंत में, सौभाग्य के प्रतीक के रूप में परिवार के सदस्यों और मेहमानों के बीच मिठाई और प्रसाद (आशीर्वादित भोजन) वितरित करें।

याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बातेंः

समयः गृह प्रवेश आदर्श रूप से शुभ समय (मुहूर्त) के दौरान किया जाना चाहिए, जिसे आमतौर पर ग्रहों की स्थिति के आधार पर हिंदू पंचांग के माध्यम से परामर्श किया जाता है।

पहला प्रवेशः जब कोई परिवार पहली बार घर में प्रवेश करता है, तो घर की महिला के लिए सबसे पहले हाथ में कलश (बर्तन) लेकर प्रवेश करना आदर्श होता है, जो समृद्धि का प्रतीक है।

दान और दानः आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अनुष्ठान के हिस्से के रूप में पुजारी, गरीब लोगों या किसी धार्मिक संगठन को थोड़ी मात्रा में धन या अनाज दान करने की प्रथा है।

यदि आप गृह प्रवेश कर रहें हैं तो आपके लिए नए घर में शांति, समृद्धि और खुशियाँ लेकर आए ! श्री हरि ॐ नमो नारायण

अग्निमूलं बलं पुसां रेतो मूलं च जीवितम्। तस्मात सर्व प्रयत्नेन वह्निशुक्रञ्च रक्षयेत ।।

"अग्नि" ही मनुष्य के बल की जड़ है तथा ₹वीर्य₹ जिन्दगी की जड़ है। इसलिए मनुष्य को अग्नि व वीर्य की प्रत्येक प्रकार से रक्षा करनी चाहिए। आचार्य ₹वृन्द₹ आगे कहते हैं कि-

समस्य रक्षणं कार्य विषमे वात निग्रहः। तीक्ष्णे पित्त प्रतीकारो मन्दे श्लेष्मविशोधनम्।।

जब जठराग्नि सम हो, तब नियमपूर्वक नित्य आहार-विहारों से उसकी रक्षा करो; क्योंकि अग्नि के सम होने की दशा में कोई भी रोग आप पर आक्रमण नहीं कर सकता। जब अग्नि विषम हो; तब वायु का, तीक्ष्ण हो, तब पित्त का और मन्द हो तब कफ को शान्त करो। यदि आप ऐसा करेंगे, तो बवासीर, अतिसार, संग्रहणी तथा राजयक्ष्मा आदि कोई भी रोग कष्ट नहीं दे सकेगा।

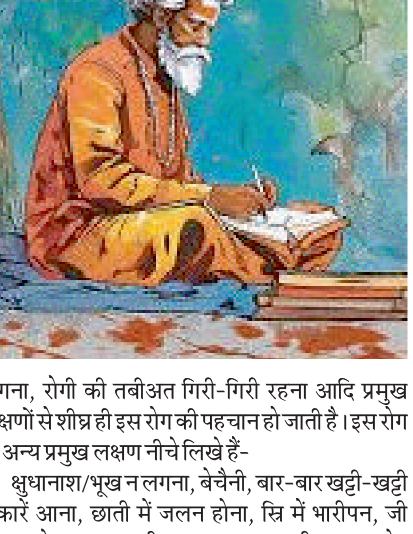

अस्तु-

समय-असमय अधिक मात्रा में गरिष्ठ भोजन करना, भोजन को शीघ्रतापूर्वक बिना भली प्रकार चबाये निगल जाना, भोजन के तुरन्त पहले या भोजन के समय अधिक मात्रा में जल पीना, अत्यधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करना, चाय, शराब या तम्बाकू आदि का अधिकता से सेवन, अचार खटाई आदि खट्टे पदार्थों का अधिकता से प्रयोग, आरामतलबी या श्रमहीन जीवन व्यतीत करना, अत्यधिक चिन्ता, तनाव, भय/डर, क्रोध आदि मानसिक व्यथाएँ, सीलन युक्त स्थानों में निवास, कमर में कसे हुए कपड़े पहनना, भोजन करते समय अधिक ठण्डा (फ्रिज का अथवा बर्फ मिला हुआ) जल पीना अथवा अधिक गर्म जल पीना, भोजनोपरान्त भारी शारीरिक श्रम तथा सम्भोग/सहवास आदि क्रियाओं में संलग्न हो जाना इत्यादि इस रोग के मुख्य कारण है। यदि भोजनोपरान्त तुरन्त पेट में वायु भर जाने से पेट फूलने का कष्ट, जी-मिचलाना या वमन होना, मुख में पित्त (हरा, नीला या पीला) आने लगना, रोगी की तबीअत गिरी-गिरी रहना आदि प्रमुख लक्षणों से शीघ्र ही इस रोग की पहचान हो जाती है। इस रोग के अन्य प्रमुख लक्षण नीचे लिखे हैं-

क्षुधानाश/भूख न लगना, बेचैनी, बार-बार खट्टी-खट्टी डकारें आना, छाती में जलन होना, स्त्रि में भारीपन, जी मिचलाते रहना, कभी-कभार चक्कर भी आना, पेट फूलना, पेट में पीड़ा रहना, हृदय अधिक धड़कना, मुख में पानी भर-भर आना, कब्ज का कष्ट रहना अथवा बदहजमी के पतले दस्त आ जाना, रोगी का किसी कार्य को करने में मन ना लगा, मामूली श्रम करने से ही थकावट का अनुभव, सस्ती छाया रहना, दिल भरी-बड़ी रहना, रोगी का बार-बार थूकना, जीभ पर मेल की तरह जमना।

दिल्ली सरकार के शालीमार बाग स्कूल में मुख्यमंत्री ने दौरा करके लिया स्कूल की हालत का जायजा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। आने वाले समय में दिल्ली के स्कूलों की व्यवस्थाओं में बड़ा बदलाव देखने की मिल सकता है। स्कूलों के आसपास के माहौल को बेहतर बनाने के लिए सेफ स्कूल गाइडलाइंस जारी हो सकती हैं और बच्चों के लिए डिजिटल लाइब्रेरी भी स्थापित की जा सकती हैं।

कई खामियां दिखीं। इस पर उन्होंने फौरन मौके पर मौजूद स्कूल की प्रिंसिपल से कहा, ₹ ऐसी उम्मीद नहीं थी। आप यह मानिए कि यहां पर गलत हो रहा है।"

मुख्यमंत्री ने प्रिंसिपल से कहा कि यहां पर पीने का पानी नहीं आ रहा है। क्या करें? बताइए, इसे हटा दें।

इसके बाद प्रिंसिपल ने कहा, "मैम, आज ठीक हो जाएगा।

इस पर मुख्यमंत्री ने प्रिंसिपल से कहा कि मुझे आपसे इस जवाब की उम्मीद नहीं थी। आप यह मान लीजिए कि यहां पर गलत हो रहा है। बच्चों के लिए यहां पीने का पानी नहीं आ रहा है। टॉयलेट में पानी नहीं आ रहा है। यह ठीक नहीं है। आप इस चीज को मानिए।

इस पर प्रिंसिपल ने मुख्यमंत्री से कहा कि ₹सॉरी मैम, आज ठीक हो जाएगा।₹

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह दुर्भाग्य की बात है कि न ही स्कूल में बच्चों के लिए पीने के पानी की कोई उचित व्यवस्था की गई है और न ही शौचालय में उनके लिए पानी की व्यवस्था है। विद्यालय में इस तरह के कुप्रबंधन से बच्चों को कितनी दिक्कतें हो रही होंगी।

मुख्यमंत्री ने प्रिंसिपल से इन सभी खामियों को फौरन दुरुस्त कराने को कहा। उन्होंने कहा कि आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि विद्यालय में पढ़ने वाले किसी भी विद्यार्थी को कोई दिक्कत न हो। यह आपकी जिम्मेदारी है। आप अपनी जिम्मेदारियों से नहीं भाग सकती हैं।

इस पर प्रिंसिपल ने मुख्यमंत्री को आश्वस्त किया कि इन सभी समस्याओं को दूर कर लिया जाएगा।

इसके बाद मुख्यमंत्री ने क्लासरूम का भी निरीक्षण किया। उन्होंने एक-एक चीज को बहुत ही ध्यान से देखा। उन्होंने बैंच से लेकर ब्लैकबोर्ड तक का निरीक्षण किया।

मुख्यमंत्री ने स्कूल का पूरा दौरा करने के बाद कहा कि हम सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि यहां पढ़ने वाले बच्चों को किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं हो।

आयुष्मान भारत योजना को लागू करने पर हुई चर्चा

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में स्वास्थ्य सेवाओं के बेहतर बनाने के लिए गुरुवार को दिल्ली के परिवहन व स्वास्थ्य मंत्री पंकज कुमार सिंह ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ सचिवालय में बैठक की। इस दौरान दिल्ली में प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना को लागू करने पर चर्चा हुई। बैठक के बाद स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि 100 दिन में दिल्ली में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। उन्होंने कई योजनाओं के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने कहा कि वह केजरीवाल सरकार की किसी भी स्वास्थ्य योजना को आगे नहीं बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि उनकी सभी योजनाएं करप्ट है। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि पहले की सरकार ने दिल्ली में आयुष्मान भारत योजना को लागू नहीं होने दिया था। इस योजना को लागू करने के लिए केंद्र के साथ बहुत जल्द ही एमओयू साइन किया जाएगा। इसके लिए अधिकारी काम पर लगे हुए हैं। इस योजना के तहत 5 लाख रुपए के इलाज का खर्च दिल्ली सरकार उठाएगी। इसके अतिरिक्त 5 लाख रुपए के इलाज का खर्च केंद्र सरकार उठाएगी। सीएजी की रिपोर्ट से पता चला है कि पहले की आम आदमी पार्टी की सरकार ने ब्लैक लिस्टेड कंपनियों को दवा का टेंडर दिया हुआ था। लेकिन, हम दिल्ली के लोगों को अच्छी दवा देंगे।

ईडब्ल्यूएस कोटे के तहत निजी अस्पतालों में इलाज

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि दिल्ली में प्राइवेट अस्पतालों को 10 प्रतिशत मरीजों को ईडब्ल्यूएस कोटे के तहत भर्ती करना होता है। इसके साथ ही 25 प्रतिशत (आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग) ईडब्ल्यूएस कोटे के मरीजों को ओपीडी में देखना होता है। इसे दिल्ली के सभी निजी अस्पतालों में सुनिश्चित कराया जाएगा। इसके साथ ही नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे, जो अस्पताल ईडब्ल्यूएस कोटे के तहत मरीजों का इलाज नहीं करेगा, उसकी नोडल अधिकारी हर तीन माह पर कमाई की जांच करेंगे।

खोले जाएंगे जच्चा-बच्चा केंद्र

पंकज सिंह ने कहा कि करीब 20 प्रतिशत बच्चे दिल्ली में अभी भी अस्पताल में जन्म नहीं लेते हैं। वह घर पर ही जन्म लेते हैं. इससे मां और बच्चे दोनों की जान को खतरा रहता है। इसे ध्यान में रखते हुए दिल्ली में जच्चा-बच्चा केंद्र खोला जाएगा, जिससे महिलाओं व नवजात शिशुओं के साथ अन्य लोगों को इलाज में बड़ी राहत मिलेगी। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि दिल्ली में 2500 मोहल्ला क्लीनिक रेंट पर हैं। उन्होंने दावा किया कि ज्यादातर क्लीनिक नहीं चलेंगे। इन सभी का रेंट एग्रीमेंट खत्म किया जाएगा। इसके बाद, दिल्ली सरकार नए सिरे से इस तरह के क्लीनिक खोलेगी, जिससे लोगों को इलाज मिल सकेगा।

दिल्ली में चलेगा मोबाइल डेंटल वैन

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि दिल्ली में 10 मोबाइल डेंटल वैन चलाए जाएंगे, जो दिल्ली में जगह-जगह जाकर लोगों का इलाज करेंगी। इससे लोगों को दांत से संबंधित इलाज में सहूलियत मिलेगी। लोगों को दांत के इलाज के लिए अस्पताल नहीं जाना होगा। ये वैन दिल्ली के विभिन्न इलाकों में जाकर लोगों को इलाज देंगी। बाद में इन वैन की संख्या बढ़ाई जा सकती है।

विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने 2024-2025 के लिए सदन समितियों का गठन किया

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली।आठवीं विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने औपचारिक रूप से कार्य मंत्रणा समिति एवं ग़ैर सरकारी सदस्यों के विधेयको एवं संकल्पौ संबंधी समिति का गठन वर्ष 2024-2025 के लिए किया है। ये समितियां विधानसभाई कार्यों के सुचारू संचालन और सार्थक चर्चाओं को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कार्य मंत्रणा समिति

यह समिति सदन की कार्यसूची निर्धारित करने और चर्चाओं को सुव्यवस्थित करने का कार्य करती है। समिति के अध्यक्ष स्वयं माननीय अध्यक्ष होंगे। समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं:

1. अध्यक्ष – सभापति
2. उपाध्यक्ष – सदस्य
3. आहिर दीपक चौधरी – सदस्य
4. जितेंद्र महाजन – सदस्य
5. ओम प्रकाश शर्मा – सदस्य
6. राज कुमार चौहान – सदस्य
7. सोम दत्त – सदस्य
8 सुरेंद्र कुमार – सदस्य
9. सूर्य प्रकाश खत्री – सदस्य

ग़ैर सरकारी सदस्यों के विधेयको एवं संकल्पौ संबंधी समिति

यह समिति उन विधेयकों एवं संकल्पों की समीक्षा और विचार-विमर्श का कार्य करती है, जो निजी सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। इस समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं:

1. माननीय अध्यक्ष – सभापति
2.अभय वर्मा – सदस्य
3. अमानतुल्लाह खान – सदस्य
4.अनिल कुमार शर्मा – सदस्य
5. अरविंदर सिंह लवली – सदस्य
6. पूनम शर्मा – सदस्य
7. प्रेम चौहान – सदस्य
8. संजय गोयल – सदस्य
9. श्याम शर्मा – सदस्य

इन समितियों के गठन से विधानसभा की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने और विधायी कार्यों को प्रभावी ढंग से संचालित करने की प्रतिबद्धता पुनः सुदृढ़ हुई है। माननीय अध्यक्ष ने सभी सदस्यों को शुभकामनाएं दीं और उनके योगदान को विधान प्रक्रिया को सशक्त बनाने में अहम बताया।

आयरन और माटी प्रदर्शनियों का भव्य समापन समारोह संपन्न हुआ

मुख्य संवाददाता

दिल्ली :विमला आर्ट फोरम द्वारा आयोजित पिंक आयरन III और माटी II प्रदर्शनियों का AIFACS आर्ट गैलरी में भव्य समापन समारोह के साथ समापन हुआ, जो इस प्रतिष्ठित कलात्मक कार्यक्रम का सफल समापन था। एएएफटी विश्वविद्यालय के चांसलर संदीप मारवाह भाग लेने वाले कलाकारों की रचनात्मक प्रतिभा को सम्मानित करने और उन्हें मान्यता देने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में हमारे साथ शामिल हुए। संदीप मारवाह ने कहा कि यह कार्यक्रम भारत में समकालीन और लोक कला परिदृश्य को आकार देने में महिला कलाकारों के उत्कृष्ट योगदान के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में काम करेगा। विमला आर्ट्स की संस्थापक कंचन मेहरा ने इस बात पर जोर दिया कि प्रदर्शनी न केवल समकालीन कला पर प्रकाश डालती है बल्कि समकालीन और लोक कला दोनों क्षेत्रों में उभरते और योग्य कलाकारों के लिए एक मंच स्थापित करना चाहती है। इस दृष्टि का उद्देश्य युवा कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्रदान करना और छात्रवृत्ति प्राप्त करना है जो उन्हें अपने कलात्मक करियर को आगे बढ़ाने में मदद करेगी। आमंत्रित कलाकारों में अनवर, अशोक भौमिक, यूसुफ, हीरेन ठाकुर, श्याम बिहारी अग्रवाल (पद्मश्री), अजीत दुबे, शोविन भट्टाचार्य, बिपिन कुमार, मयूर गुप्ता, कालीचरण, कमलकांत, राजेश श्रीवास्तव, मनहर कपाड़िया, दिलीप शर्मा, सुरेश के. नायर, विश्वनाथ साबले, स्वाति, सतीश शर्मा, सतीश काले, अनूप चंद, भगत सिंह, आनंद डबली और जावेद जैसे प्रसिद्ध समकालीन कलाकार शामिल थे। देश के प्रसिद्ध मूर्तिकार रमेश बिष्ट के साथ अरविंद सिंह, भुवनेश्वर भास्कर, पंकज तिवारी, पंकज शर्मा और विवेक दास की कलाकृतियां भी प्रदर्शित की गईं। समापन समारोह में प्रख्यात कलाकार, आलोचक, पत्रकार और कला प्रेमी प्रदर्शनियों में प्रदर्शित कलात्मक यात्रा पर विचार-विमर्श करने के लिए एकत्रित होंगे। इस कार्यक्रम में पारंपरिक लोक शैलियों, आधुनिक प्रयोगात्मक तकनीकों और विचारोत्तेजक विषयों की कलात्मक विविधता को प्रदर्शित किया जाएगा जो भारत की सांस्कृतिक विरासत को समकालीन अभिव्यक्तियों से जोड़ते हैं। समारोह के बाद, सभी प्रदर्शित कलाकृतियाँ 6 मार्च से 8 मार्च, 2025 की शाम तक नोएडा फिल्म सिटी मारवाह स्टूडियो में ले जाई जाएँगी। यह विस्तारित प्रदर्शन छात्रों और कला प्रेमियों को उत्कृष्ट कृतियों से जुड़ने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगा, जिससे गहन कलात्मक संवाद और प्रशंसा को बढ़ावा मिलेगा। यह उभरते और स्थापित कलाकारों को व्यापक पहचान दिलाने और भारतीय कला क्षेत्र में भविष्य के सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए मंच को और मजबूत करेगा।

गोपाल राय, आतिशी और दुर्गेश पाठक के साथ पार्षदों की बैठक में विभिन्न मुद्दों पर हुई चर्च

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी दिल्ली के अंदर अपने संगठन को और मजबूत करने को लेकर तेजी से काम कर रही है। इस बाबत गुरुवार को "आप" के दिल्ली प्रदेश संयोजक गोपाल राय, नेता प्रतिपक्ष आतिशी और एमसीडी प्रभारी दुर्गेश पाठक ने पार्टी के सभी पार्षदों के साथ बैठक कर विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान संगठन निर्माण को लेकर पार्षदों के सुझाव भी लिए गए। गोपाल राय ने कहा कि संगठन निर्माण की प्रक्रिया के तहत अब तक प्रदेश, विधानसभा, फ्रंटल संगठनों के पदाधिकारियों और चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों के साथ बैठक हो चुकी है। सभी पार्षद पार्टी के संगठन निर्माण में अभी भूमिका निभाने के साथ-साथ नई परिस्थितियों में दिल्ली की जनता की सेवा भी जारी रखेंगे।

आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश संयोजक गोपाल राय ने पार्टी के पार्षदों के साथ बैठक करने के बाद मीडिया को बताया कि आम आदमी पार्टी चुनाव के बाद से ही अपने संगठन के पुनर्गठन को लेकर विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर रही है। पहले हमने संगठनों के प्रदेश पदाधिकारियों के साथ बैठक की थी। दूसरे चरण में हमने दिल्ली की 70 विधानसभाओं के पदाधिकारियों के साथ बैठक की थी। तीसरे चरण में हमने आम आदमी पार्टी के सभी फ्रंटल संगठनों के पदाधिकारियों के साथ बैठक की थी और चौथे चरण में इस बार दिल्ली विधानसभा का चुनाव लड़ने वाले सभी प्रत्याशियों के साथ बैठक की थी। गुरुवार को हमने पांचवें चरण की बैठक की। इस चरण में हमने आम आदमी पार्टी के दिल्ली के सभी पार्षदों के साथ बैठक की है।

गोपाल राय ने बताया कि इस बैठक में हम लोगों ने खासकर दो बिंदुओं पर गौर किया। पहला, संगठन के निर्माण में पार्षदों के सुझाव लिए गए हैं। दूसरा, पार्षद अपने वार्ड में जनता के काम को कैसे आगे बढ़ाएंगे और नई परिस्थितियों में एमसीडी के अंदर अपनी भूमिका मजबूती से निभाएंगे। इस पर चर्चा की। आम आदमी पार्टी के पार्षद संगठन निर्माण के साथ-साथ जनता की सेवा जारी रखेंगे।

गोपाल राय ने भाजपा सरकार को लेकर कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान पूरी भाजपा ने दिल्ली के लोगों को गारंटी दी है। दिल्ली के लोग चाहते हैं कि भाजपा सरकार दिल्ली के लोगों के अनुरुप अपना बजट बनाए। भाजपा ने गारंटी दी थी कि सरकार बनने के बाद पहली ही कैबिनेट की बैठक में महिलाओं को 2500 रुपए देने का फैसला होगा और 8 मार्च को उनके खाते में पैसे पहुंच जाएंगे। भाजपा इतने सालों से सरकार चला रही है। ऐसा नहीं है कि उसको सरकारी सिस्टम के बारे में नहीं पता होगा? सबकुछ पता होने के बाद ही भाजपा ने महिलाओं को 2500 रुपए देने की गारंटी दी है। दिल्ली के लोग चाहते हैं कि भाजपा सरकार महिलाओं को 2500 रुपए देने कीप्रधानमंत्री मोदी की गारंटी को जल्द से जल्द पूरी करे।

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा को अमेरिका के प्रतिष्ठित हार्वर्ड कैनेडी स्कूल के ग्लोबल लीडरशिप प्रोग्राम में शामिल होने का न्योता

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

बोस्टन/नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा को अमेरिका के प्रतिष्ठित हार्वर्ड कैनेडी स्कूल ने अपने ग्लोबल लीडरशिप प्रोग्राम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। यह सम्मान राघव चड्ढा के राजनीति, नवाचार और समाज सेवा के प्रति समर्पण को वैश्विक स्तर पर मान्यता देने का प्रतीक है।

हार्वर्ड कैनेडी स्कूल लंबे समय से दुनिया भर में प्रभावशाली नेताओं, वरिष्ठ अधिकारियों और नीति निर्माताओं को तैयार करने के लिए जाना जाता है। यह संस्थान 21वीं सदी की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक नेताओं को कौशल और ज्ञान से लैस करने का कार्य करता है।

इस अवसर को लेकर राघव चड्ढा ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, "हार्वर्ड कैनेडी स्कूल के ग्लोबल लीडरशिप प्रोग्राम में शामिल होने का निमंत्रण पाकर मैं बेहद सम्मानित और उत्साहित महसूस कर रहा हूं। यह मेरे लिए एक अनूठा अवसर है, जहां मैं दुनिया भर के विशेषज्ञों और नेताओं से सीखने के साथ-साथ अपनी समझ को और गहरा कर सकूंगा। यह वास्तव में मेरे लिए 'बैक टू स्कूल' जैसा मौका है।"

उन्होंने आगे कहा, "इस कार्यक्रम

के जरिए मुझे वैश्विक दृष्टिकोण से भारत की नीतिगत चुनौतियों को समझने और उनके समाधान खोजने में मदद मिलेगी। मुझे विश्वास है कि इस अनुभव से मैं भारत के नीति निर्माण में और अधिक प्रभावी योगदान दे पाऊंगा।"

विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा राघव चड्ढा को 40 वर्ष से कम उम्र के "यंग ग्लोबल लीडर" के रूप में भी सम्मानित किया गया था। यह सम्मान दुनिया भर के उन युवा नेताओं को दिया जाता है जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उत्कृष्ट नेतृत्व कर रहे हैं।

राघव चड्ढा की इस उपलब्धि से न केवल उन्हें व्यक्तिगत और व्यावसायिक स्तर पर लाभ मिलेगा, बल्कि यह भारत के वैश्विक प्रतिनिधित्व को भी मजबूत करेगा। उनकी भागीदारी से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज़ को और अधिक प्रभावशाली बनाने में मदद मिलेगी।

यह कार्यक्रम युवा नेताओं को वैश्विक समस्याओं जैसे बेरोजगारी, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक अस्थिरता और सामाजिक असमानताओं जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करता है। इसमें शामिल होने के बाद राघव चड्ढा रणनीतिक निर्णय लेने, नेतृत्व कौशल बढ़ाने और भारत की समस्याओं के लिए प्रभावी समाधान खोजने में और भी सक्षम बनेंगे।

इस निमंत्रण के माध्यम से राघव चड्ढा को वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली नीति निर्माता और युवा नेता के रूप में नई पहचान मिली है, जो भविष्य में भारत की नीतिगत दिशा को और मजबूत करने में सहायक सिद्ध होगी।

आप" कार्यकर्ताओं ने राजघाट व मूलचंद समेत अन्य चौराहे पर 'बस 2 दिन और' लिखे प्ले कार्ड के साथ की नारेबाजी

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली की महिलाओं को 8 मार्च तक 2500 रुपए देने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी में अब मात्र दो दिन और शेष हैं, लेकिन अभी तक भाजपा सरकार इस मुद्दे पर मौन है। भाजपा को प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी याद दिलाने के लिए आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को राजघाट, मूलचंद समेत अन्य चौराहे पर प्रदर्शन और जवाब मांगा कि आखिर महिलाओं के खाते में 2500 रुपए कब आएंगे? इस दौरान 'बस दो दिन और' लिखे प्ले कार्ड के साथ पूर्व विधायक ऋतुराज झा समेत आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की और प्रधानमंत्री से भी पूछा कि दिल्ली की माताएं-बहनें पूछ रही हैं कि अब तो 8 मार्च आने मे सिर्फ दो ही दिन बचे हैं, उनको 2500 रुपए कब मिलेंगे।

प्रदर्शन के दौरान आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने उस रास्ते से गुजर रहे वाहन चालकों को भी भाजपा के वादे को याद दिलाया। कार्यकर्ताओं ने बताया कि दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा और देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वादा किया गया था कि अगर दिल्ली में भाजपा की सरकार बन जाती है तो वह हर महिला के लिए 2500 रुपए प्रतिमाह देने की योजना पहली ही कैबिनेट में पास करेगी और 8 मार्च तक महिलाओं के

खाते में पहली किश्त आ जाएगी। अब दिल्ली में भाजपा की सरकार बन गई है उसकी पहली कैबिनेट की बैठक भी हो चुकी है, लेकिन बैठक में महिलाओं की 2500 रुपए की स्कीम पर कोई चर्चा नहीं हुई। मोदी जी की एक गारंटी तो फेल हो गई है, लेकिन अभी 8 मार्च में दो दिन बचे हैं। 8 मार्च को महिलाओं को खाते में 2500 रुपए आने का बेसब्री से इंतजार है। आम आदमी पार्टी मांग करती है कि मोदी जी द्वारा महिलाओं से की गई दूसरी गारंटी को भाजपा समय से पूरा करे।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक ऋतुराज झा ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान द्वारका में आयोजित एक रैली में महिलाओं से वादा किया था कि दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही पहली कैबिनेट में सभी माताओं-बहनों के लिए 2500 रुपए प्रतिमाह देने की स्क्रीम पास की जाएगी और 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर उनके खाते में 2500 रुपए की पहली किस्त आ जाएगी। यह मोदी की गारंटी है। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी कहा था कि सभी माताएं-बहनें अपने आधार कार्ड को बैंक अकाउंट के साथ लिंक करा लें, ताकि जब उनके खाते में पैसे आएं तो उसका मैसेज मोबाइल पर आ सके। अब दिल्ली की माताएं- बहनें बैंक अकाउंट से अपना आधार कार्ड लिंक कराकर आस लगाए बैठी हैं कि उनके खाते में 2500 रुपए कब आएंगे? अब तो 8 मार्च में मात्र दो दिन ही बचे हैं। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी हर बार की तरह इस बार भाजपा को प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी को जुमला नहीं बनने देगी। हम महिलाओं को 2500 रुपए दिलवाने के लिए सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करेंगे और उनको 2500 रुपए दिलवाकर रहेंगे।

गौरतलब है कि भाजपा से दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए दिलवाने के लिए आम आदमी पार्टी पिछले तीन दिनों से सड़क पर है। मंगलवार को दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने मंडी हाउस में प्रदर्शन किया और भाजपा को प्रधानमंत्री मोदी के वादे की याद दिलवाई। जबकि बुधवार को आईटीओ समेत दिल्ली के कई फ्लाइओवर पर प्रदर्शन किया और पूछा कि महिलाओं के खाते में 2500 रुपए कब तक आएंगे?

हनी सिंह के खिलाफ PIL पटनाहाईकोर्ट में दायर

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली/पटना: फूहड़ भोजपुरी तथा हिन्दी गाने बिहार की स्कूल और कॉलेज जाने वाली लड़कियों और महिलाओं का पीछा छोड़ने का नाम नहीं ले रहे हैं और वे नजरें झुकाकर सड़क पर चलने को मजबूर हैं। इन्हीं गानों के चलते महिलाएं घर में टीवी भी देखना पसंद नहीं करती हैं। ऐसे गाना गाने वाले कई गायक आज प्रसिद्धि हासिल कर चुके हैं जो समाज और देश के विकास में बाधक बन सकते हैं। जब लड़कियां या महिलाएं, सड़क पर सुरक्षित चल नहीं पायेंगी, तो क्या वे विकास के बारे में खाक सोच पायेंगी। शराबी पतियों से महिलाओं को बचाने के लिए यदि कोई सरकार अपने राज्य में शराबबंदी का कानून ला सकती है तो क्या वह स्कूल-कॉलेज जाने वाली लड़कियों तथा महिलाओं के लिए इन फूहड़ गानों पर पर प्रतिबंध नहीं लगा सकती है। मैं चाहती हूं कि बिहार में इन गानों के निर्माण और बजाने पर पूर्णरूप से प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

ये बातें बिहार की बेटी, बॉलीवुड अभिनेत्री तथा राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता नीतू चंद्रा

श्रीवास्तव ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कहीं। उन्होंने कहा कि ये गाने महिलाओं में असुरक्षा की भावना पैदा करती हैं तथा इन गानों का छोटे-छोटे बच्चों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ये गाने समाज को गलत दिशा में ले जा सकते हैं और महिलाओं के प्रति सम्मान को कम कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैं तो बिहार के लोगों से इन गानों का पुरजोर विरोध करने की अपील करती हूं। उन्होंने कहा कि ऐसे गाना गाने वाले गायक और गायिकाओं पर मुकदमा दर्ज होना चाहिए इन दोनों हनी सिंह का एक भोजपुरी गाना काफी वायरल हो रहा है जो अश्लीलता के सारी सीमा तोड़े हुए हैं हमारा आरोप है की भाषा का आड़ लेकर महिलाओं के शरीर पर किसी तरह की कमेंट नहीं होनी चाहिए फिर भोजपुरी भाषा को तो मैं देश-विदेश तक लेकर गया हूं भोजपुरी भाषा में मैं सम्मान भी लेकर आया हूं ऐसे में भोजपुरी भाषा के आड़ में कोई महिलाओं के लिए गंदे कमेंट्स वाले गाने नहीं बर्दाश्त किया जा सकते हैं।

इसलिए आज पटना हाईकोर्ट में एक पीआईएल दाखिल किया गया है जिसकी अगुवाई सीनियर एडवोकेट निवेदिता निर्विकर ने विधिवत शशि प्रिया द्वारा सहायता किया जा रहा है। महिलाओं को कभी किसी को वस्तु समझने की भूल नहीं करनी चाहिए क्योंकि महिला का अपमान सदैव दुखदाई परिणाम का गवाह रहा है।

दांतों के हर रोग का समाधान

दांतों की सफाई न करने से दांतों के बीच फसे अन्न का कण सड़ने लगता है जिससे दांतों में कीड़े लग जाते हैं और दांत में गड्ढे.बन जाते हैं। मंजन न करने या जल्दबाजी में मंजन करने से दांत ठीक से साफ नहीं हो पाते जिससे दांतों में कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं।

कभी-कभी दांतों पर चोट लगने से भी दांतों व मसूढ़ों की बीमारी हो जाती है।

लक्षण :

दांतों का गिरना,
जबड़ों में जलन होना,
मसूढ़ों से खून निकलना आदि।

दांतों के रोग में अजवायन, तुलसी, गाजर, खीरा, शलजम, तिल, प्याज, हल्दी, मूली तथा पानी में भिगोए गेहूं आदि का सेवन करना लाभकारी होता है।

रोजाना चिरचिरी, बबूल, नीम, भांट की जड़ और महुआ के दातुन से दांत साफ करें।

चोकर समेत आटे की रोटी, केला, मूंगफली, नारियल, हरा मटर, अंजीर, खजूर, बादाम तथा फूलगोभी खाना दांतों के रोग के लिए लाभकारी होता है।

समाधान

गूलर की छाल के काढे.से गरारे करने से दांत और मसूढ़ों के सारे रोग दूर होकर दांत मजबूत होते हैं।

अंजीर को पानी में उबालकर कुल्ला करने से मसूढ़ों से खून का निकलना बन्द होता है और मुंह की बदबू दूर होती है।

मसूढ़े व दांतों के रोग में कत्थे को गर्म पानी में घोलकर प्रतिदिन कुल्ला करना चाहिए। यह दांतों के सभी रोग को ठीक करता है।

कत्थे का चूर्ण मंजन में मिलाकर दांत व मसूढ़ों पर प्रतिदिन सुबह-शाम मलने से दांत के सभी रोग दूर होते हैं।

पानी में नींबू का रस निचोड़कर कुल्ला करने से दांतों में लगे कीड़े, बदबू और दांतों का दर्द खत्म होता है।

नींबू का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर प्रतिदिन दांतों पर मलने से दांत मोती जैसे चमकने लगते हैं।

नींबू के छिलके को धूप में सुखाकर पीस लें और मंजन के रूप में प्रयोग करें। इससे दांत साफ होते हैं और सांस की बदबू दूर होती है।

नमक, सरसों का तेल और नींबू का रस मिलाकर प्रतिदिन मंजन करने से दांत मजबूत होते हैं।

1 नींबू के 4 टुकड़े करके उन पर नमक डालकर गर्म करके एक के बाद एक टुकड़े को लगातार दर्द वाले दांत पर रखने से दर्द कम होता है।

जिन लोगों के दांतों से खून निकलता हो और दांतों पर मैल जमी हो उसे प्रतिदिन सेब के रस में खाने वाला सोड़ा मिलाकर दांतों पर मलना चाहिए।

कचनार की छाल को गर्म पानी में उबाल लें और इस पानी को छानकर एक शीशी में बन्द करके रखें। यह पानी 50-50 मिलीलीटर की मात्रा में प्रतिदिन गर्म करके दिन में 3 बार कुल्ला करने से दांतों का हिलना, दर्द, खून निकलना, मसूढों की सूजन और पायरिया आदि रोग खत्म होता है।

दालचीनी का तेल रूई में लगाकर दांत के नीचे दबाकर रखने से दांतों का दर्द दूर होता है।

लहसुन की मात्रा से 3 गुना कद्दू का बीज लें और इन दोनों को मिलाकर पानी में उबालकर प्रतिदिन कुल्ला करें। इससे दांतों का दर्द खत्म होता है।

टमाटर का रस दिन में 2 से 3 बार पीने से दांतों से खून का गिरना बन्द होता है।

दांतों में दर्द होने पर हींग को दर्द वाले दांत के नीचे दबाकर रखने से आराम मिलता है।

चिकनी मिट्टी का लेप दांतों पर करने से दांत मजबूत होते हैं।

मसूढों में सूजन आने पर अडूसा के पत्तों का काढ़ा बनाकर प्रतिदिन 3 से 4 बार कुल्ला करें। यह मसूढ़ों की सूजन को दूर करता है।

अडूसे के दातुन से प्रतिदिन दांत साफ करने से दांतों व मुंह के अनेक रोग दूर होते हैं।

दांतों से खून निकल रहा हो तो माजूफल को बारीक पीसकर इससे प्रतिदिन मंजन करें। इससे खून का निकलना बन्द होता है।

मेहंदी के पत्तों को पानी के साथ उबालकर प्रतिदिन 3 से 4 बार कुल्ला करने से मसूढ़ों से खून का निकलना तथा सूजन खत्म होती है।

अरहर के पत्तों का काढ़ा बनाकर पीने से दांतों की पीड़ा खत्म होती है।

अकवन का दूध रूई में लगाकर दर्द वाले दांत के नीचे दबाकर रखने से दर्द से आराम मिलता है।

दांतों का खट्टापन दूर करने के लिए बादाम खाना चाहिए। इससे दांतों का खट्टापन दूर होता है।

त्रिफला और गुग्गुल 4 से 8 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ प्रतिदिन 2 बार सेवन करने से दांतों के रोग ठीक होते हैं।

पंचलवण और यवक्षार बराबर मात्रा में लेकर शहद के साथ मिलाकर दांतों की जड़ों में मलने से मसूढ़ें की सूजन खत्म होती है।

रूई को लौंग के तेल में भिगोकर दर्द वाले दांत के नीचे रखने और लार को नीचे गिरते रहने से दर्द ठीक होता है।

लौंग को आग पर भूनकर दातों के गड्ढे में रखने से दांत का दर्द खत्म होता है।

लौंग के तेल में कपूर का चूर्ण मिलाकर दर्द वाले दांतों पर लगाने से दर्द में आराम मिलता है।

हल्दी को बारीक पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर प्रतिदिन रात को सोने से पहले दांत व मसूड़ों पर मलने से दांत व मसूड़ों के सभी रोग दूर होते हैं।

आम की गुठली की गिरी (गुठली की अन्दर का बीज) को पीसकर मंजन करने से दांत के रोग और मसूढ़ों के रोग दूर हो जाते हैं।

मजीठ की जड़ को पीसकर मंजन की तरह सुबह-शाम प्रयोग करने से दांतों के रोग ठीक होते हैं।

दारूहल्दी के काढे.में शहद मिलाकर 2 चम्मच की मात्रा में सुबह-शाम पीने से दांतों के रोग तथा मसूढ़ों के रोग दूर होते हैं।

रीठे के बीजों को तवे पर भूनकर चूर्ण बना लें और इस चूर्ण के बराबर पिसी हुई फिटकरी मिलाकर दांतों पर मलें। इससे दांतों के हर तरह के रोग दूर होते हैं।

आक के दूध में रूई भिगोकर घी लगाकर जबड़े में रखने से जबड़े का दर्द ठीक होता है।

आक के दूध में नमक मिलाकर दांत पर लगाने से दांतों की पीड़ा मिटती है।

हिलते हुए दांत की जड़ में 1-2 बूंद आक का दूध लगाने से दांत आसानी से निकल आता है। आक की जड़ के टुकड़े को दुखते हुए दांत के नीचे दबाने से दर्द कम होता है।

मसूर के दाल को आग पर जलाकर उसकी राख से मंजन करने से दांतों के रोग दूर होते हैं।

यदि मसूढ़ों से खून आता हो तो धनिया को पानी में उबालकर कुल्ला करें। यह मसूढ़ों से खून आना बन्द करता है।

मौलसरी के पेड़ की 50 ग्राम छाल को 500 मिलीलीटर पानी में उबालें और 100 मिलीलीटर पानी शेष रहने पर इससे कुल्ला करें। इससे हिलते हुए दांत स्थिर हो जाते हैं।

मौलसरी का 1 से 2 फल नियमित रूप से चबाने से दांत मजबूत होते हैं।

मौलसरी की छाल के चूर्ण से मंजन करने से दांत वज्र की तरह मजबूत हो जाते हैं।

मौलसरी की छाल का बारीक पॉउडर बनाकर प्रतिदिन मंजन करने से दांतों के सभी रोग ठीक होते हैं।

धाय के पत्ते और फूल समान मात्रा में मिलाकर काढ़ा बनाकर प्रतिदिन 3 बार गरारे करने से सभी प्रकार के दांतों के रोग नष्ट होते हैं।

बादाम का छिलका जलाकर उसमें चौथाई हिस्सा फिटकरी मिलाकर बारीक पीसकर मंजन बना लें और इससे प्रतिदिन मंजन करें।

5 ग्राम सेंकी हुई फिटकरी, 60 ग्राम त्रिफला का चूर्ण, 15 लौंग, 8 ग्राम सेंधानमक और 10 ग्राम माजूफल को एक साथ पीसकर छान लें। प्रतिदिन भोजन करने के बाद सुबह-शाम दांतों की जड़ों व मसूढ़ों पर इसका लेप करके 15 मिनट तक लगा रहने दें और लार को टपकाते रहें। इस मंजन से दांतों का दर्द दूर होता है तथा दांत मजबूत होते हैं।

125 ग्राम लाल फिटकरी को सेंककर राख बनाकर इसमें 25 दाने कालीमिर्च, 25 दाने लौंग और 30 ग्राम सेंधानमक मिलाकर बारीक पीसकर सुबह-शाम 2 बार मंजन करें। मंजन दांतों के बाहर और भीतर दोनों ओर करने के 10 मिनट बाद कुल्ला करें। इससे पायरिया, दांतों से खून आना तथा दांत दर्द में लाभ मिलता है।

100 ग्राम भुनी हुई फिटकरी, 20 ग्राम पिसी हुई लौंग, 100 ग्राम पिसी हुई हल्दी, 100 ग्राम पिसा हुआ सेंधानमक और 100 ग्राम नीम के पिसे हुए पत्ते या छाल मिलाकर रख लें। इससे प्रतिदिन मंजन करने से दांतों के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

70 मिलीलीटर गाजर का रस प्रतिदिन पीने से मसूढ़ों और दांतों के रोग दूर होते हैं

अकरकरा को सिरके में घिसकर दुखते दांत के नीचे दबाकर रखने से दर्द में लाभ मिलता है।

अकरकरा और कपूर समान मात्रा में लेकर पीसकर नियमित रूप से सुबह-शाम मंजन करने से सभी प्रकार के दांतों की पीड़ा दूर होती है।

अकरकरा, माजूफल, नागरमोथा, फूली हुई फिटकिरी, कालीमिर्च और सेंधानमक बराबर मात्रा में मिलाकर पीस लें। इससे नियमित मंजन करने से दांत और मसूढ़ों के सभी रोग दूर होते हैं।

गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां चबाकर खाने से मसूढ़े व दांत मजबूत होते हैं। इससे मुंह की बदबू दूर होती है और पायरिया नष्ट होता है।

काले तिल को पानी के साथ खाने से दांत मजबूत होते हैं।

लगभग 25 ग्राम तिल चबा-चबाकर खाने से दांत मजबूत होते हैं।

तिल के तेल को मुंह में 10-15 मिनट तक रखने से हिलते हुए दांत मजबूत बनते हैं और पायरिया मिटता है।

हींग या काले जीरे के मिश्रण में तेल को गर्म करके कुल्ला करने से दांतों का दर्द नष्ट होता है।

हींग या काले जीरे के मिश्रण में तेल को गर्म करके कुल्ला करने से दांतों का दर्द नष्ट होता है।

अखरोट की छाल को मुंह में रखकर चबाने से दांत स्वस्थ होते हैं।

अखरोट के छिलके को जलाकर इसकी राख से मंजन करने से दांत मजबूत होते है।

प्याज का टुकड़ा दर्द वाले दांत के नीचे दबाकर रखने से दर्द दूर होता है।

कच्चे प्याज को खाने से मुंह के हानिप्रद कीटाणु समाप्त हो जाते हैं और सांस की बदबू दूर होती है।

कायफल के पेड की छाल का काढ़ा बनाकर कुल्ला करने से दांतों का दर्द नाश होता है और दांत मजबूत होते हैं।

कच्चे शलजम को चबा-चबाकर खाने से मसूढ़े और दांतों के रोग ठीक होते हैं।

कुटज की छाल और बीजों का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर इससे प्रतिदिन दांत सफाई करने से दांतों का दर्द ठीक होता है।

नीम की दातुन करने से दांत साफ व स्वस्थ रहते हैं।

नीम की पत्तियों का रस दांतों पर मलने से दांतों के कीड़े नष्ट होते हैं।

नीम की निबौली की गुठली का रस दांतों में लगाने से कीड़े खत्म होते हैं और दांतों में दर्द कम होता हैं।

नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर कुल्ला करने से दांतों के कीड़े नष्ट होते हैं और पायरिया में भी लाभ मिलता है।

नीम की जड़ की छाल का 50 ग्राम चूर्ण, सोना गेरू 50 ग्राम, सेंधानमक 10 ग्राम को पीसकर इसमें नीम के पत्तो का रस मिलाकर सुखा लें और एक शीशी में भरकर रख लें। इससे प्रतिदिन मंजन करने से दांतों से खून का गिरना, पीव का आना, मुंह में छाले पड़ना, मुंह की दुर्गन्ध, जी मिचलाना आदि रोग ठीक होता है।

नीम की 100 ग्राम जड़ को कुटकर 500 मिलीलीटर पानी में पकाएं जब पानी 250 मिलीलीटर शेष रह जाए तो इसे छानकर कुल्ला करें। यह दांतों के रोगों को समाप्त करता है।

सुबह नीम की दातुन करने और फूलों के काढ़े से कुल्ला करने से दांत व मसूढ़ों के सभी रोग नष्ट होते हैं।

नीम की टहनी और पत्तियों को छाया में सुखाकर राख बना लें और इसे पीसकर मंजन बनाकर इसमें लौंग, पीपरमेंट और नमक मिलाकर रख लें। इससे प्रतिदिन मंजन करने से पायरिया ठीक होता है।

नीम की कोपलों को पानी में उबालकर कुल्ला करने से दांतों का दर्द ठीक होता है।

अनन्तमूल के पत्तों को पीसकर दांतों के नीचे दबाने से दांत के रोग समाप्त होते हैं।

पीपल की छाल के काढ़े से गरारे करने से मुंह की बदबू, दांतों का दर्द, मसूढ़ों की सूजन आदि दूर होती है। पीपल की ताजी टहनी से दातुन करना भी लाभकरी होता है।

अनार और गुलाब के सूखे फूल को पीसकर मंजन करने से मसूढ़ों से पानी या पीब का आना बन्द होता है। अनार की कलियों के चूर्ण का मंजन करने से मसूढ़ों से खून आना बन्द होता है। मुंह और मसूढ़ों के विकार में अनार की जड़ के काढ़े से कुल्ला करना लाभदायक होता है।

अनार के फूल छाया में सुखाकर बारीक पीसकर मंजन की तरह दिन में 2 से 3 बार दांतों पर मलने से दांतों से खून का आना बन्द होता है

पायरिया में लता करंज की टहनी का दातुन करने एवं इसके तेल को दांतों पर मलने से लाभ मिलता है।

7 ग्राम लता करंज के बीजों को 7 ग्राम मिश्री के साथ रोगी को देने से दांतों से खून आना बन्द हो जाता है।

नमक को पानी में डालकर गर्म करके प्रतिदिन 2 से 3 बार कुल्ला करने से दांतों का दर्द खत्म होता है।

पानी में नमक डालकर हल्का गर्म करके प्रतिदिन रात को सोने से पहले कुल्ला करने से दांत के कीड़े समाप्त होते हैं।

जब कभी खट्टी चीजों का अधिक सेवन करते हैं तो दांत खट्टे हो जाते हैं। ऐसे में दांतों पर नमक मलना और गर्म पानी में नमक डालकर कुल्ला करने से दांतों का खट्टापन दूर होता है।

सेंधानमक को बारीक पीसकर पॉउडर बनाकर 2 ग्राम पॉउडर में 8 ग्राम सरसों का तेल मिलाकर अंगुली से मसूढ़ों पर हल्के-हल्के मालिश करें तथा खून निकले तो निकलने दें। कुछ देर बाद बचे हुए नमक को दांत व मसूढ़ों पर मलकर हल्का गर्म पानी से कुल्ला करें। इससे दांतों की सभी बीमारियां दूर होती है।

आधा चम्मच सेंधानमक एक कप गर्म पानी में मिलाकर प्रतिदिन रात को सोने से पहले कुल्ला करें। इससे दांतों में कीड़े नहीं लगते और सांसों की बदबू खत्म होती है।

काले नमक को पीसकर तिल के तेल में दांतों पर मलने से दांतों का हिलना और दांतों के रोग दूर होते हैं।

अपामार्ग के फूलों की मंजरी को पीसकर नियमित रूप से मंजन करने से दांत मजबूत होते हैं। पत्तों के रस को दुखते दांतों पर लगाने से दर्द में राहत मिलती है।

अमेरिका का रेसिप्रोकल टैक्स बम ! 2 अप्रैल 2025 से लागू- भारत चीन सहित अनेक देशों मैं खलबली मची

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर फिर एक बार पूरी दुनियाँ को मानना पड़ेगा कि,क्यों अमेरिका को दुनियाँ के बादशाह की संज्ञा दी गई है। पिछले दिनों हमने देखे कि किस तरह रुस को मोहरा बनाकर यूक्रेन पर दबाव, फिर व्हाइट हाउस में ट्रंप ज़ेलेंसकी की शाब्दिक गर्माहट,अनेक देशों के तख्ता पलट यानी सत्ता की चाबी, इसका नतीजाज जेलेंस्की द्वारा 5 मार्च 2024 को रुस से युद्ध समाप्त करने की हामी भरी और एक चिट्ठी लिखकर इशारा सहित इसके पहले अप्रवासियों को बाहर का रास्ता दिखाना सहित अनेक कठोर कदमों के साथ दिनांक 5 मार्च 2024 को अमेरिकी कांग्रेस को ट्रंप प्रशासन -2 का पहला संबोधन हुआ, जिसमें पाकिस्तान की तारीफ, वैश्विक मुद्दों की चर्चा, मेक अमेरिका ग्रेट अगेन को ध्यान में रखते हुए भारत चीन सहित अनेकों देशों पर रेसिप्रोकल टैक्स 2 अप्रैल 2025 को लागू करने की घोषणा की, यानें जो देश जितना टैक्स इंपोर्ट पर लगता है उतना ही रिसिप्रोकल टैक्स उसके एक्सपोर्ट पर भी लगाई जाएगी, इसीलिए अनेक देशों में खलबली मची हुई है। अनेक चीजों पर भारत-अमेरिकाएक दूसरे पर निर्भर हैं अगर दोनों एक दूसरे पर उतना टैक्स लगा देंगे तो अत्यधिक महंगाई हो जाएगी जिसका सीधा असर आम जनता पर पड़ेगा वैसी ठीक वैसी ही स्थिति अमेरिका के पास भी उत्पन्न होगी खासकर भारत को फार्मास्यूटिकल प्रौद्योगिकी सहित अनेक क्षेत्रों में अमेरिका के साथ व्यापार होता है जो अमेरिका वालों को सस्ता लगता है इसलिए वे भारतीय चीजों को रिस्पांस देते हैं,परंतु अब इसपर रेसिप्रोकल टैक्स लगने से भारतीय उद्योगों को एमएसएमई सहित जो एक्सपोर्ट करते हैं उनकी बहुत अधिक फजीहत होने की संभावना है, क्योंकि उनका माल अमेरिका नहीं जा सकेगा क्योंकि अमेरिका जो भी जो माल आएगा उसपर भी टैरिफ लगाए आने से इसकी कीमतें बढ़ जाएगी, जिसका अल्टीमेटली फर्क उपभोक्ताओं को ही पड़ेगा, क्योंकि वह चीजें महंगी होंगी तो लोगों की जेब से अधिक पैसे खर्च होंगे इसलिए वे भारतीय चीजें लेना बंद कर देंगे ट्रंप का मानना है कि इसके दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। मेरा मानना है इसका असर अमेरिका सहित इत्यादि अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर भी पढ़ सकनें की संभावना है, क्योंकि विश्व में दो विज़न्स का आगाज़ चल रहा है, मेक इन इंडिया तथा मेक अमेरिका ग्रेट अगेन इसलिए आज मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अमेरिका का रेसिप्रोकल टैक्स बम 2 अप्रैल 2025 से लागू, भारत चीन सहित अनेकों देशों में खलबली मचना तय होने की संभावना ?

साथियों बात अगर हम ट्रंप द्वारा भारत सहित कुछ देशों पर 2 अप्रैल 2025 से रेसीप्रोकल टैक्स लगाने कीघोषणा करने की करें तो, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप ने एक बार फिर भारत को रेसिप्रोकल ट्रैरिफ लगाने की बात को दोहराया है, उन्होंने कहा कि भारत, चीन सहित दुनिया के कई देशों पर 2 अप्रैल से रेसिप्रोकल ट्रैरिफ लगाया जाएगा, इससे पहले कनाडा और मैक्सिको पर 25 प्रतिशत और चीन पर लगे 10 प्रतिशत ड्यूटी को बढ़ाकर 20 प्रतिशत लागू कर दिया था, ट्रंप के इस कदम से ग्लोबल मार्केट में अस्थिरता देखी जा रही है। दरअसल, ट्रंप 5 मार्च 2025 को कांग्रेस के ज्वाइंट सेशन को संभोधित कर रहे थे, उन्होंने इस दौरान अमेरिका रिच अगेन का आह्वान करते हुए इसका ऐलान किया,उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि दूसरे देशों की ओरसे अनफेयर ट्रेड प्रैक्टिसेस को रोकने के लिए यह बेहद जरूरी कदम है। यह फैसला अमेरिका की इंडस्ट्रीज और वर्कर्स को प्रोटेक्ट करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इस वजह से 2 अप्रैल को लागू होगी नई टैरिफ पॉलिसी,ट्रंप ने कहा, यह सिस्टम संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए सही नहीं है और न ही कभी था, वे हम पर जो भी ड्यूटी लगाएंगे, हम उन पर शुल्क लगाएंगे, यदि वे हमें अपने मार्केट से बाहर रखने के लिए गैर-मौद्रिक बाधाएं डालते हैं, तो हम भी ऐसा ही करेंगे, इसके साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि ट्रैरिफ 2 अप्रैल से क्यों लागू किया जाएगा ।ट्रंप ने मजाक तौर पर कहा कि पहले 1 अप्रैल से यह नीति लागू होने वाली थी, लेकिन इसे एक दिन आगे इसलिए टाल दिया गया कि इसे अप्रैल फूल न करार दिया जाए ! बता दें कि ट्रंप की नई ट्रैरिफ नीति कनाडा, मैक्सिको, चाइना, यूरोपीय संघ

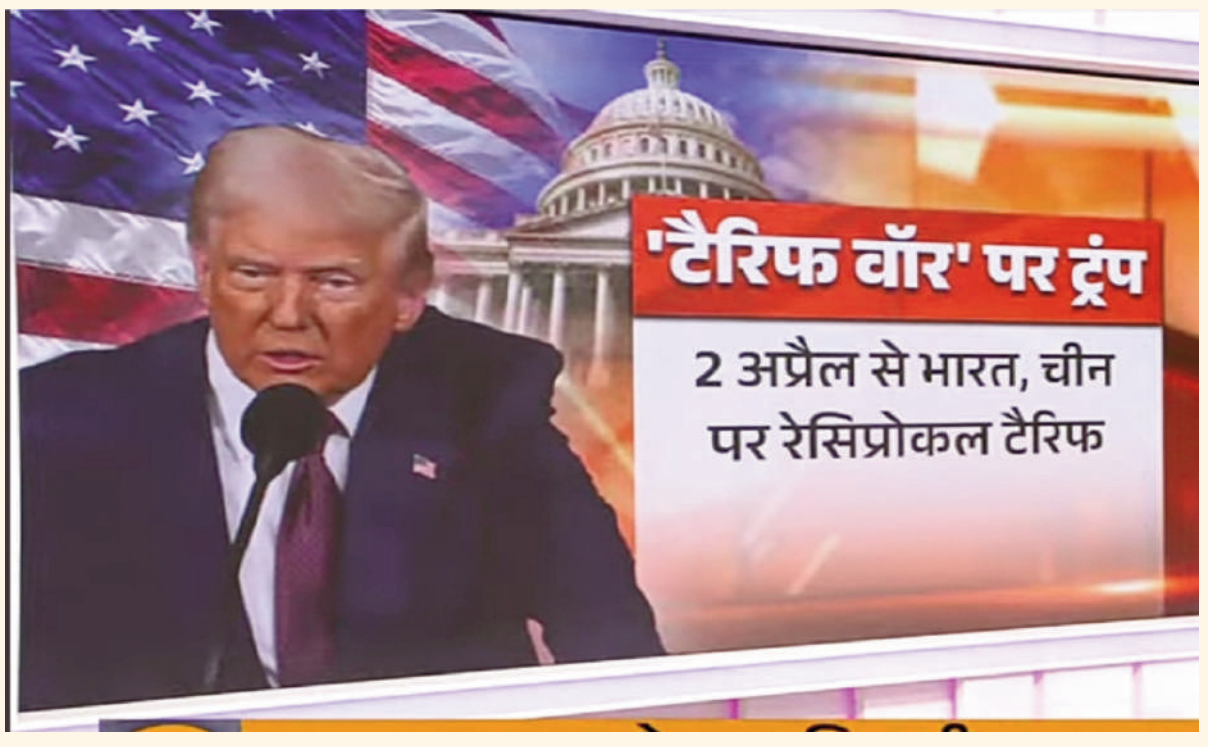

और भारत सहित कई दिग्गज ट्रेड पार्टनर्स पर लागू होगी।

साथियों बात अगर हम रेसिप्रोसिल टैक्स से भारत को असर पढ़ने की संभावना की करें तो,बता दें कि अमेरिकी रेसिप्रोकल पॉलिसी का भारत पर गहरा असर पड़ेगा। इससे भारत के कई सेक्टरों को भारी नुकसान झेलने की आशंका है, दअसल, भारत अमेरिका को जेनेरिक मेडिसीन को एक्सपोर्ट करता है, जिससे भारत की दवा कंपनियों को मोटी आमदनी होती है, ऐसे में टैरिफ नीति से फॉर्मासुटिकल कंपनियों को भारी नुकसान होगा,इसके अलावा, आईटी सेक्टर पर भी गहरा नुकसान होने की उम्मीद है। ट्रंप यह कदम भारत की आईटी कंपनियों के लिए मुसिबत बन सकता है, इन्हें अमेरिका में प्रोजेक्ट्स मिलने में बांधा आएगी, इसके अलावा, ऑटोमोबाइल, मेटल सहित कई सेक्टरों को नुकसान होने की आशंका है। क्या होता है रेसिप्रोकल टैरिफ ? रेसिप्रोकल टैरिफ का मतलब जब किसी देश को अन्य देश से एक्सपोर्ट और इंपोर्ट पर समान टैरिफ चुकाना पड़ता है तो उसे रेसिपोकल टैरिफ कहा जाता है। समझने के लिए: मान लीजिए कि अगर अमेरिका भारत से ऑटो सेक्टर के सामान इंपोर्ट करता है और उसे 25 प्रतिशत का टैरिफ देना पड़ता है तो, भारत को भी अमेरिका से ऑटो सेक्टर के सामान इंपोर्ट करने पर 25 प्रतिशत का टैरिफ देना होगा। ट्रंप का रेसिप्रोकल टैरिफ लागू करने के पीछे का मकसद अमेरिका एक्सपोर्ट के साथ उचित व्यवहार सुनिश्चित करना है, जो अप्रत्यक्ष रूप से उन पार्टनर देशों को भी संबोधित करता है, जो यूएस ट्रेड को असंतुलित करते हैं। नुमोरा ने एक कॉमन ट्रेंड को हाईलाइट करते हुए कहा कि अमेरिका से ट्रांसपोर्ट और एग्रीकल्चर सेक्टर के प्रोडक्ट इंपोर्ट करने पर बहुत ज्यादा टैरिफ है।

साथियों बात अगर हम दिनांक 5 मार्च 2024 को ट्रंप ने अमेरिकी कांग्रेस ट्रंप-2 शासन के प्रथम अधिवेशन के संबोधन में मुख्य 10 बातों की करें तो,अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 2 अप्रैल से भारत पर जैसा को तैसा टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि भारत हमसे 100 पेर्सेंट से ज्यादा टैरिफ वसूलता है, हम भी अगले महीने से ऐसा ही करने जा रहे हैं। उन्होंने रिकॉर्ड 1 घंटा 44 मिनट का भाषण दिया। अपने पिछले कार्यकाल में उन्होंने सिर्फ 1 घंटे का भाषण दिया था ।ट्रम्प ने भाषण की शुरुआत अमेरिका इज बैक, यानी 'अमेरिका का दौर लौट आया है' से की। ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने 43 दिन में जो किया है वह कई सरकारें अपने 4 या 8 साल के कार्यकाल में नहीं कर पाईं। राष्ट्रपति ट्रम्प के पहले भाषण की 10 अहम बातें की (1) जैसे को तैसा टैरिफ: 2 अप्रैल से जैसे को तैसा टैरिफ लागू होगा। दूसरे देश हम पर भारी टैरिफ और टैक्स लगाते हैं, अब हमारी बारी है। अगर कोई कंपनी अमेरिका में प्रोड्क्ट नहीं बना रही है तो उसे टैरिफ देना होगा। (2) यूक्रेन जंग: जेलेंस्की जल्द से जल्द यूक्रेन जंग खत्म करने को लेकर बातचीत के लिए आने को तैयार हैं। हमने रूस के साथ गंभीर बातचीत की है। हमें मॉस्को से मजबूत संकेत मिले हैं कि वे शांति के लिए तैयार हैं (3) अप्रवासी मुद्दा: पिछले चार साल में 2.1 करोड़ लोग अवैध रूप से अमेरिका में घुसे हैं। हमारी सरकार ने अमेरिकी इतिहास में सबसे बड़ा बॉर्डर और इमिग्रेशन क्रैकडाउन शुरू किया है। (4) जो बाइडेन: बाइडेन अमेरिकी इतिहास के सबसे खराबराष्ट्रपति हैं। उनके कार्यकाल में हर महीने लाखों अवैध लोग देश में दाखिल हुए। उनकी नीतियों के चलते देश में महंगाई बढ़ी। (5) गोल्ड कार्ड वीजा: हम गोल्ड कार्ड वीजा सिस्टम लाने जा रहे हैं। यह ग्रीन कार्ड की तरह है, लेकिन उससे ज्यादा एडवांस है। इससे बड़ी संख्या में नौकरियां पैदा होंगी और कंपनियों को फायदा होगा। (6) पनामा नहर और ग्रीनलैंड: हम किसी भी तरह पनामा नहर पर कंट्रोल हासिल करेंगे। इसके साथ ही हम किसी भी तरह ग्रीनलैंड को अपने में शामिल करेंगे। हम वहां के लोगों की हिफाजत करेंगे। (7) इलॉन मस्क और DoGE: इलॉन मस्क के DoGE विभाग ने पिछली फेडरल सरकार के कई घोटालों को उजागर किया है। मस्क को ये विभाग बनाने की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन उन्होंने देश के लिए ऐसा किया। (8) फ्री स्पीच: हमने सरकारीसेंसरशिप पूरी तरह रोक दी है और अमेरिका में फ्री स्पीच वापस ले आए हैं। हमने ऐसे सरकारी तंत्र को खत्म कर दिया है जिसका इस्तेमाल हथियार के तौर पर किया जाता है। (9) तेल और गैस: अमेरिका के पास दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा 'लिक्विड गोल्ड' (तेल और गैस) है। हम अलास्का में बहुत बड़ी प्राकृतिक गैस पाइपलाइन बिछाएंगे। इसमें कई देश अरबों रुपए निवेश करना चाहते हैं। (10) स्पेस प्रोग्राम: हम विज्ञान की नई सीमाओं को पार करेंगे, इंसान को अंतरिक्ष में आगे ले जाएंगे और मंगल ग्रह पर अमेरिकी झंडा फहराएंगे। हम दुनिया की सबसे उन्नत और शक्तिशाली सभ्यता का निर्माण करेंगे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिका का रेसिप्रोकल टैक्स बम 2 अप्रैल 2025 से लागू- भारत चीन सहित अनेक देशों मैं खलबली मची ।विश्व में दो विज़नों का आगाज़ - मेक इन इंडिया, मेक अमेरिका ग्रेट अगेन ।ट्रंप के रेसिप्रोकल टैक्स कदम से ग्लोबल मार्केट में हड़कंप व अस्थिरता के माहौल से महंगाई बढ़ने की संभावना।

टाटा मोटर्स की गाड़ियों पर मार्च 2025 में मिल रहा तगड़ी बचत का मौका, जानें किस पर है क्या ऑफर

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख कार कंपनी Tata Motors की ओर से March महीने में अपनी कारों और एसयूवी पर लाखों रुपये के Discount On Tata ऑफर किए जा रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की किस कार और एसयूवी को इस महीने में खरीदने पर कितना डिस्काउंट ऑफर (Discount Offer on Tata Cars and SUVs in March 2025) दिया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई वाहन निर्माताओं की ओर से अपनी कारों की बिक्री की जाती है। बिक्री बढ़ाने के लिए निर्माताओं की ओर से कई तरह के डिस्काउंट ऑफर किए जाते हैं। अगर आप भी इस महीने Tata की किसी गाड़ी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो किस गाड़ी पर कंपनी की ओर से इस महीने कितना डिस्काउंट ऑफर (Tata Motors Discount Offers in March 2025) दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

March में इस गाड़ी पर सबसे ज्यादा होगी बचत

टाटा की ओर से प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में Tata Altroz की बिक्री की जाती है। अगर इस महीने में इस गाड़ी की 2024 की यूनिट्स को खरीदा जाता है तो सबसे ज्यादा बचत हो सकती है। कंपनी इस गाड़ी पर इस महीने में 1.35 लाख रुपये के ऑफर्स दे रही है। इसके पेट्रोल रेसर वेरिएंट पर यह ऑफर मिल रहा है। इसके अलावा इसके सभी वेरिएंट्स पर एक लाख रुपये तक की बचत की जा सकती है। 2025 की यूनिट को खरीदने पर आपको इस महीने 45 हजार रुपये की बचत हो सकती है।

Tata Safari पर भी मिलेगा ऑफर

कंपनी की ओर से प्रीमियम एसयूवी सेगमेंट में Tata Safari को लाया जाता है। इस गाड़ी को अगर इस महीने में खरीदा जाता है तो आपको 75 हजार रुपये के ऑफर्स मिल सकते हैं। यह ऑफर इसके 2024 की यूनिट्स पर दिया जा रहा है। 2025 की यूनिट खरीदने पर इस महीने 50 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Tata Harrier पर भी होगी बचत

टाटा की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर Tata Harrier की बिक्री की जाती है। अगर आपको इस गाड़ी की 2024 की यूनिट्स को खरीदना है तो आपको 75 हजार रुपये के ऑफर्स मिल सकते हैं। यह ऑफर इसके 2024 की यूनिट्स पर दिया जा रहा है। 2025 की यूनिट खरीदने पर इस महीने 50 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Tata Nexon पर मिलेगा यह ऑफर

टाटा की कॉम्पैक्ट एसयूवी Nexon को भी भारत में काफी पसंद किया जाता है। अगर आप इस एसयूवी को इस महीने में खरीदते हैं तो आपको 45 हजार रुपये की बचत होगी। यह ऑफर इसके 2024 की यूनिट्स पर मिलेगा। वहीं 2025 की यूनिट्स पर आपको इस महीने 15 हजार रुपये की बचत होगी।

Tata Tigor पर क्या है ऑफर

कंपनी की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान सेगमेंट में Tata Tigor की बिक्री की जाती है। अगर आप इस गाड़ी को March 2025 में खरीदने जा रहे हैं तो आपको 2024 की यूनिट्स पर अधिकतम 45 हजार रुपये की बचत हो सकती है। यह ऑफर इसके सभी वेरिएंट्स पर दिया जा रहा है। 2025 की यूनिट्स पर इस महीने में 30 हजार रुपये के ऑफर मिल रहे हैं।

Tata Tiago पर भी मिलेगा डिस्काउंट

टाटा की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली गाड़ी Tata Tiago को इस महीने खरीदा जाता है तो इसकी 2024 की यूनिट्स पर 35 हजार रुपये की बचत होगी। लेकिन अगर आप इसकी 2025 की यूनिट को खरीदते हैं तो 25 हजार रुपये के डिस्काउंट ऑफर मिलेंगे।

Tata Punch पर क्या है ऑफर

टाटा की ओर से सबसे सस्ती एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Tata Punch को खरीदना है तो इस महीने 25 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं। यह बचत इसकी 2024 की यूनिट्स पर होगी। अगर 2025 की यूनिट को खरीदना है तो आपको इस महीने 25 हजार रुपये के ही ऑफर मिलेंगे।

फ़रवरी 2025 में घट गई वाहनों की मांग, सात फीसदी से ज्यादा की कमी दर्ज, फाड़ा ने जारी की रिपोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) की ओर से देशभर में वाहनों की बिक्री को लेकर रिपोर्ट जारी की गई है। जिसमें February 2025 के दौरान हुई बिक्री की जानकारी दी गई है। रिपोर्ट में YoY बेसिस के साथ ही MoM की रिपोर्ट की जानकारी दी गई है। जिसके मुताबिक देशभर में किस सेगमेंट में कितने वाहनों की बिक्री हुई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री की जाती है। बिक्री को लेकर फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) की ओर से हर महीने रिपोर्ट को जारी किया जाता है। जिसमें देशभर में कितने वाहनों की बिक्री की गई है, इसकी जानकारी दी जाती है। February 2025 के दौरान देशभर में कितने वाहनों की बिक्री हुई है। किस सेगमेंट में मंथली और ईयरली बेसिस पर कैसा प्रदर्शन (FADA report on vehicle sales) रहा है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

February 2025 में आई गिरावट

फाडा की ओर से जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक बीते महीने के दौरान देशभर में वाहनों की बिक्री में गिरावट (Car sales drop 2025) दर्ज की गई है। बीते महीने ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 7.19 फीसदी की कमी आई है। मंथली बेसिस पर भी वाहनों की बिक्री काफी कम हुई है। जानकारी के मुताबिक मंथली बेसिस पर बिक्री में 17.12 फीसदी की कमी आई है।

कितनी हुई बिक्री

रिपोर्ट के मुताबिक February 2025 के दौरान देशभर में 1899196 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इसमें दो पहिया, तीन पहिया, कमर्शियल, निजी और ट्रैक्टर सेगमेंट के वाहन शामिल हैं। वहीं इसके पहले जनवरी 2025 में यह संख्या 2291621 यूनिट्स थी। February 2025 के दौरान देशभर में कुल 2046328 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

दो पहिया वाहन सेगमेंट में कैसा रहा प्रदर्शन

भारत में हर महीने सबसे ज्यादा दो पहिया वाहन सेगमेंट की बिक्री होती है। इस सेगमेंट में February 2025 के दौरान 1353280 यूनिट्स की बिक्री हुई। February 2024 के दौरान देश में 1444674 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। वहीं January 2025 में यह संख्या 1525862 यूनिट्स की थी।

निजी वाहनों ने कैसा किया प्रदर्शन

फाडा की रिपोर्ट के मुताबिक February 2025 में निजी वाहन सेगमेंट में 303398 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि February 2024 में यह संख्या 338390 यूनिट्स थी। January 2025 के दौरान देशभर में 465920 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

तीन पहिया की कैसी रही बिक्री

दो पहिया और कारों के बाद तीन पहिया सेगमेंट में भी बिक्री में गिरावट दर्ज की गई। फाडा की रिपोर्ट के मुताबिक February 2025 में 94181 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि February 2024 में यह संख्या 96020 यूनिट्स थी। January 2025 में 107033 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

कैसा रहा ट्रैक्टर सेगमेंट का प्रदर्शन

फाडा के मुताबिक ट्रैक्टर सेगमेंट में बीते महीने 65574 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि February 2024 में 76693 और January 2025 में 93381 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

कमर्शियल वाहन सेगमेंट में भी आई कमी

कमर्शियल वाहन सेगमेंट को भी बीते महीने नेगेटिव ग्रोथ मिली। रिपोर्ट के मुताबिक इस सेगमेंट में February 2025 में 82763 यूनिट्स की बिक्री हुई। इसके पहले February 2024 में 90551 और January 2025 में 99425 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

फ़रवरी 2025 में किन कारों की रही सबसे ज्यादा मांग, टॉप-5 में शामिल हुई कौन सी गाड़ियां, पढ़ें पूरी खबर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत में रोजाना बड़ी संख्या में कारों की बिक्री की जाती है। Maruti, Tata, Mahindra, Hyundai, Kia सहित कई वाहन निर्माताओं की ओर से बेहतरीन फीचर्स और तकनीक के साथ इनको ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक February 2025 के दौरान कौन सी कारों ने Top-5 लिस्ट में जगह बनाई है। किसकी कितनी यूनिट्स की बिक्री हुई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Top-5 कारों की कितनी हुई बिक्री

फरवरी 2025 में लाखों यूनिट्स कार और एसयूवी की बिक्री देशभर में हुई है। लेकिन जिन पांच कारों को सबसे ज्यादा पसंद किया गया है, उनकी 89406 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

पहले नंबर पर रही Maruti Fronx

मारुति की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में Maruti Fronx को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी की Feburary 2025 के दौरान सबसे ज्यादा बिक्री हुई। जानकारी के मुताबिक इस गाड़ी की बीते महीने कुल 21461 यूनिट्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 51 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

दूसरे नंबर पर आई Maruti Wagon R

हैचबैक सेगमेंट में कई सालों से बिक्री के लिए ऑफर की जाने वाली Maruti Wagon R को बीते महीने भी करीब 20 हजार लोगों ने खरीदा। जानकारी के मुताबिक February 2025 के दौरान इसकी 19879 यूनिट्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में सिर्फ 2.41 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

तीसरे नंबर पर आई Hyundai Creta

मारुति के अलावा इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर हुंडई की क्रेटा रही। जानकारी के मुताबिक बीते महीने के दौरान इस एसयूवी की 16317 यूनिट्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 6.81 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

अगले नंबर पर आई Maruti Swift

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में Maruti Swift को लाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी की February 2025 के दौरान 16269 यूनिट्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 23.58 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

Top-5 में शामिल हुई Maruti Baleno

प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में मारुति सुजुकी की ओर से बलेनो को ऑफर किया जाता है। February 2025 में इस गाड़ी की 15480 यूनिट्स की बिक्री हुई है। आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 11.63 फीसदी की कमी दर्ज की गई है।

मारुति अर्टिगा सीएनजी के बेस वेरिएंट को खरीदकर है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद कितनी देनी होगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से Maruti Ertiga को बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एमपीवी के CNG के बेस वेरिएंट LXI को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की Down Payment देने के बाद कितने रुपये की EMI देनी होगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में मारुति की ओर से अर्टिगा को बजट एमपीवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। एमपीवी में सीएनजी के बेस वेरिएंट के तौर पर LXI CNG की बिक्री की जाती है। अगर आप भी इस वेरिएंट को खरीदने जा रहे हैं और दो लाख रुपये की Down Payment देने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देगी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Ertiga CNG LXI Price

मारुति की ओर से अर्टिगा एमपीवी के बेस वेरिएंट के तौर पर LXI को ऑफर किया जाता है। इसमें पेट्रोल के साथ ही CNG इंजन का विकल्प भी मिलता है। इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.88 लाख रुपये है। इस गाड़ी को अगर दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 1.09 लाख रुपये आरटीओ और करीब 53 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके साथ ही एसयूवी के लिए 10880 रुपये टीसीएस चार्ज के तौर पर देने होंगे। जिसके बाद Maruti Ertiga LXI CNG on road price करीब 12.60 लाख रुपये के आस-पास हो जाती है।

दो लाख Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर आप इस गाड़ी को सीएनजी के साथ बेस वेरिएंट LXI के तौर पर खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 10.60 लाख रुपये को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको 9 फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 10.60 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने 17062 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप 9 फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 10.60 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 17062 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Ertiga LXI CNG के लिए करीब 3.72 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 16.33 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Maruti की ओर से Ertiga को कंपनी बजट एमपीवी के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Renault Triber, Kia Carens जैसी MPVs के साथ होता है।

खरीदनी है सब फोर मीटर एसयूवी, जानें मार्च 2025 में किस गाड़ी पर कितना करना होगा इंतजार

परिवहन विशेष न्यूज

सब फोर मीटर एसयूवी 2025 भारत में कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। लोगों की पसंद देखते हुए सेगमेंट में Maruti Tata Hyundai Mahindra Kia Skoda जैसी कंपनियों की ओर से बेहतरीन उत्पादों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किस कंपनी की किस एसयूवी को March 2025 में खरीदने पर कितना इंतजार करना पड़ सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में Sub Four Meter SUV सेगमेंट में कई बेहतरीन विकल्पों को अलग अलग निर्माताओं की ओर से ऑफर किया जाता है। अगर March 2025 में इस सेगमेंट की किसी एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो है कितना इंतजार (SUV waiting period March 2025) करना पड़ सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mahindra XUV 3XO पर कितना Waiting Period

Mahindra की ओर से Sub Four Meter SUV सेगमेंट में XUV 3XO को ऑफर किया जाता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस एसयूवी को March 2025 में खरीदने के लिए आपको अधिकतम तीन महीने तक का इंतजार करना पड़ सकता है। इस एसयूवी पर चेन्नई, कोयंबटूर, गुरूग्राम में सबसे ज्यादा वेटिंग है। लेकिन दिल्ली, फरीदाबाद, नोएडा में सबसे कम वेटिंग है।

Tata Nexon पर कितनी वेटिंग

टाटा की ओर से इस सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Nexon पर अधिकतम दो महीने की वेटिंग चल रही है। जयपुर, गुरूग्राम, लखनऊ, सूरत, कोयंबटूर, नोएडा में इस पर दो महीने तक इंतजार करना पड़ सकता है। लेकिन फरीदाबाद, पटना, कोलकाता, अहमदाबाद, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद, बेंगलुरू, दिल्ली में इस एसयूवी पर सबसे कम इंतजार करना पड़ रहा है।

Maruti Brezza के लिए कितना इंतजार

मारुति की ओर से इस सेगमेंट में ब्रेजा को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इस कॉम्पैक्ट एसयूवी को अगर March महीने में बुक करवाया जाता है, तो इसकी डिलीवरी के लिए अधिकतम तीन महीने तक का इंतजार करना पड़ सकता है। जानकारी के मुताबिक जयपुर, मुंबई, फरीदाबाद, इंदौर में सबसे ज्यादा इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन सूरत, दिल्ली में इस एसयूवी के लिए सबसे कम इंतजार के साथ घर लाया जा सकता है।

Hyundai Venue पर भी है वेटिंग

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता हुंडई की ओर से भी वेन्यू को इस सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। कंपनी की एसयूवी को इस महीने में खरीदने पर अधिकतक दो महीने का इंतजार करना पड़ सकता है। जानकारी के मुताबिक बेंगलुरू, मुंबई, हैदराबाद, पुणे, अहमदाबाद, ठाणे, सूरत, चंडीगढ़, कोयंबटूर, फरीदाबाद और नोएडा में इस पर सबसे ज्यादा वेटिंग चल रही है। वहीं दिल्ली, चेन्नई, लखनऊ में इस पर सबसे कम वेटिंग चल रही है।

Kia Sonet पर भी करना होगा इंजतार

किआ की ओर से सोनेट एसयूवी पर भी इस महीने में इंतजार करना पड़ रहा है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली इस एसयूवी पर अधिकतम दो महीने की वेटिंग चल रही है। चंडीगढ़ में इस एसयूवी के लिए सबसे ज्यादा इंतजार करना पड़ सकता है। वहीं मुंबई, हैदराबाद, पुणे, गुरुग्राम, कोलकाता, ठाणे, जैसे शहरों में इस पर सबसे कम वेटिंग पीरियड चल रहा है।

Skoda Kylaq पर कितनी वेटिंग

स्कोडा की ओर से काइलैक को भी कुछ समय पहले ही ऑफर किया गया है। इस एसयूवी को अगर इस महीने में खरीदना हो तो इसके लिए कई शहरों में अधिकतम दो महीने तक का इंतजार करना पड़ सकता है। एसयूवी के लिए मुंबई, हैदराबाद, पुणे, जयपुर, अहमदाबाद, सूरत, इंदौर जैसे शहरों में सबसे ज्यादा वेटिंग चल रही है।

शोरूम से लें जानकारी

अगर आप भी इस महीने में अपने लिए कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट की किसी गाड़ी को खरीदने का मन बना रहे हैं, तो सबसे पहले नजदीकी शोरूम पर जाकर जानकारी ली जा सकती है। सभी वाहनों पर मॉडल, शहर और शोरूम के मुताबिक वेटिंग पीरियड अलग-अलग भी हो सकता है।

विज्ञान में महिलाएं: उनका योगदान और सशक्तिकरण

विजय गर्ग

हर साल, दुनिया विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाती है। यह विशेष दिन केवल एक फैंसी शीर्षक नहीं है; यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में महिलाओं के अद्भुत योगदान को पहचानने और उनकी सराहना करने का दिन है। यह भी एक समय है कि वे उन बाधाओं को स्वीकार करें जो वे सामना करते हैं और इन क्षेत्रों में लिंग अंतर को बंद करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जैसा कि हम आईडीडबयुजीआईएस का निरीक्षण करते हैं, हम एक ऐसी कहानी को फिर से लिख रहे हैं, जहां रूढ़िवादिता अब शानदार दिमाग को सीमित नहीं करती है, और लिंग जिज्ञासा को प्रतिबंधित नहीं करता है। इस दुनिया में, ग्राउंडब्रेकिंग खोजें विविध दृष्टिकोणों से निकलती हैं। हम एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं जहां विज्ञान को ₹लड़कों के लिए₹ के रूप में लेबल नहीं किया जाता है, और महिला और लड़कियां इस समावेशी और अभिनव दुनिया को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आइए हमने जो प्रगति की है, उसे मनाएं और एक ऐसे भविष्य की दिशा में काम करना जारी रखें, जहां हर कोई, चाहे लिंग की परवाह किए बिना, विज्ञान की रोमांचक दुनिया में पनप सकता है। विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस का इतिहास 2011 में वापस, महिलाओं की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र आयोग ने एक बड़ी समस्या पर ध्यान दिया: पर्याप्त महिलाएं विज्ञान में नहीं जा रही थीं, भले ही उनके पास बहुत कुछ था। यह लोगों को बात कर रहा था, और 2013 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने यह सुनिश्चित करने के लिए एक योजना पर सहमति व्यक्त की कि महिलाओं और लड़कियों के पास विज्ञान में एक ही मौके थे। इसमें कुछ साल लग गए, लेकिन 2015 में, उन्होंने आधिकारिक तौर पर 11 फरवरी को विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों का पहला अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया, ₹इनोवेशन: द मिसिंग लिंक फॉर वीमेन इन साइंस₹ थीम पर ध्यान केंद्रित किया। विज्ञान विषयों में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस: प्रगति का जश्न मनाना, चुनौतियों को संबोधित करना हर साल, आईडीडबयुजीआईएस एक नया विषय चुनता है जो दिखाता है कि महिलाएं विज्ञान में कैसे प्रगति कर रही हैं। अतीत में, हमने 2018 में ₹सस्टेनेबल डेवलपमेंट में लैंगिक समानता के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और नवाचार और₹ कल के वैज्ञानिकों के लिए निवेश ₹जैसी चीजों के बारे में बात की। 2023 में₹ कल के वैज्ञानिकों के लिए निवेश ₹। इस बार, हमारा ध्यान₹ सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महिला नेतृत्व ₹पर है। हम उन महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना चाहते हैं जो महिला वैज्ञानिक बेहतर भविष्य बनाने में निभाते हैं। विज्ञान के लिए महिलाओं का योगदान पूरे इतिहास में, महिलाओं और लड़कियों के दिमाग से शानदार विचारों ने वैज्ञानिकों ने विभिन्न क्षेत्रों में जिस तरह से विचार किया है, उसे आकार दिया है। उनके शोध, आविष्कार, नवाचारों और खोजों ने हमारे जीवन को समृद्ध किया है और एक आशाजनक भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, वैज्ञानिक क्षेत्रों में उतनी महिलाएं नहीं हैं जितनी पुरुष हैं। महिलाओं ने विज्ञान के लिए अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए अलग -अलग समय पर बाधाओं को पार कर लिया है, जब सही वातावरण प्रदान करने पर उनकी क्षमता साबित होती है। दुर्भाग्य से, विज्ञान में महिलाओं द्वारा कई ग्राउंडब्रेकिंग योगदान की अनदेखी की गई है। एक उदाहरण रोज़ालिंड फ्रैंकलिन है, एक रसायनज्ञ जिसका काम डीएनए की संरचना की खोज में महत्वपूर्ण था। उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, मान्यता केवल मरणोपरांत आ गई। अन्य अनसंग नायिकाओं में नासा में अफ्रीकी-अमेरिकी गणितज्ञ कैथरीन जॉनसन, डोरोथी वॉन और मैरी जैक्सन शामिल हैं। उन्होंने शुरुआती अंतरिक्ष मिशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, पुस्तक और फिल्म, ₹हिडन फिगर्स₹ को प्रेरित किया, जिसने उनकी उपलब्धियों को सुर्खियों में लाया। मैडम क्यूरी से, केवल 8 वर्षों के भीतर भौतिकी और रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली एकमात्र महिला, शाकंटला देवी को, जो अपनी अविश्वसनीय गणितीय क्षमताओं के लिए भारत के मानव कंप्यूटर के रूप में जानी जाती है। हम बात करते हैंविज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं के बारे में। यूनेस्को के अनुसार, दुनिया भर में 30% शोधकर्ता महिलाएं हैं। हालांकि, यह प्रतिशत एक ही क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में एक असमानता को उजागर करता है। इसे पहचानते हुए, विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस को विज्ञान में महिलाओं के योगदान को स्वीकार करने और प्रोत्साहित करने और अनुसंधान में लिंग अंतर को पाटने के लिए मनाया जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की सूची 1। जनाकी अम्मल उसके बिना, चीनी आज जिस तरह से मीठा हो सकता है। वह पेशे से एक साइटोजेनेटिक और वनस्पति विज्ञानी थीं, जिन्होंने समाज द्वारा लगाए गए रूढ़िवादी नियमों को तोड़ दिया और हजारों पौधों की प्रजातियों पर शोध करने में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वह चीनी को मीठा बनाने के पीछे का कारण खोजने वाला था। उसे उस नवाचार का श्रेय दिया जाता है और उसे 1977 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। वह केरल में साइलेंट वैली हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट के बारे में विद्रोही थी। उन्होंने हजारों पुष्प प्रजातियों के गुणसूत्रों पर व्यापक अध्ययन भी किया और वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय योगदान दिया। 2। अन्ना मणि वह 1918 में पैदा हुई थी। फिर, महिलाओं को विज्ञान का अध्ययन करने या तथाकथित सामाजिक नियमों को तोड़ने की अनुमति नहीं थी। वह इन सभी नियमों को धता बताते हुए आगे बढ़ी और मौसम विज्ञान में अपना शोध शुरू किया। उन्होंने प्रो सीवी रमन की प्रतिभा के तहत भी काम किया और मौसम विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। सौर विकिरण, पवन ऊर्जा और ओजोन पर उनके शोध ने उन्हें वैश्विक अभिनय लाया। वह भारतीय मौसम विभाग की उप निदेशक बन गईं। 3। टेसी थॉमस 1963 में जन्मी, उन्होंने मानक सामाजिक नियमों को तोड़ दिया और एक भारतीय मिसाइल परियोजना के प्रमुख के प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक बन गईं। कल्पना कीजिए कि कैसे वह रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के एक पुरुष-प्रधान वैज्ञानिक क्षेत्र में एक शानदार योगदानकर्ता बनने में कामयाब रही। वह ऐसी महत्वपूर्ण परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली भारतीय वैज्ञानिक थीं, जो अब हमारे पास मौजूद सैन्य शक्ति के स्तर को बढ़ाती थीं। वह एक गृहिणी हैं जो अग्नि IV और वी मिसाइलों के विकास के लिए परियोजना निदेशक बनने के लिए चली गईं। यह 5,500 किमी की सीमा के साथ एक ठोस-ईंधन अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल है। 4। कल्पना चावला उसका नाम कौन नहीं जानता है? वह हरियाणा, भारत से पहली भारतीय मूल महिला एरोनॉटिकल इंजीनियर थी। वह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन जाने के लिए नासा की चुनी हुई इंजीनियर थी। वह राकेश शर्मा के बाद अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय और दूसरी भारतीय हैं। अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में कल्पना चावला उनके योगदान के कारण, उन्हें कांग्रेस के स्पेस मेडल ऑफ ऑनर, नासा के प्रतिष्ठित सेवा पदक और नासा स्पेस फ्लाइट मेडल से सम्मानित किया गया। दुर्भाग्य से, वह सभी 6 अन्य चालक दल के सदस्यों के साथ एसटीएस -107 मिशन में कोलंबिया स्पेस शटल में लौटते समय मर गई। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह एक शौकीन भरत्नाम डांसर, एक पेशेवर स्कूबा गोताखोर और एक कराटे चैंपियन थी। 5। शकुंतला देवी जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, उसे भारत के मानव कंप्यूटर के रूप में जाना जाता है। कुछ सेकंड के भीतर जटिल गणितीय संचालन करने की उसकी उल्लेखनीय शक्ति ने पूरी दुनिया को चकित कर दिया। उसने एक बार 2010 अंकों के साथ एक नंबर की 23 वीं रूट की गणना की। उसने किसी भी उपकरण या यहां तक कि एक कलम का उपयोग किए बिना मानसिक रूप से किया और 1977 में सबसे तेज कंप्यूटर यूनीवैक की तुलना में 12 सेकंड तेजी से किया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शाकंटला देवी के पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। जब वह 6 साल की थी, तब उसने अपनी गणितीय क्षमताओं का प्रदर्शन किया। 6। मैरी क्यूरी मैरी क्यूरी, वें में एक अग्रणीरेडियोधर्मिता का ई क्षेत्र, विज्ञान में महिलाओं के लिए एक आइकन बना हुआ है। वह नोबेल पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला थीं और दो अलग -अलग वैज्ञानिक क्षेत्रों - भौतिकी और रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार जीतने वाली एकमात्र महिला बनी हुई हैं। उनकी खोजों ने चिकित्सा उपचारों में प्रगति की नींव रखी और महिला वैज्ञानिकों की भविष्य की पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका ये सभी नाम इस बात का प्रमाण हैं कि महिलाओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये नाम केवल भारतीय मूल के हैं। इस सूची की लंबाई की कल्पना करें जब महिला वैज्ञानिकों और आविष्कारकों के अंतर्राष्ट्रीय नाम शामिल हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी प्रतिभा पूल को बढ़ाएगी और भविष्य में उत्कृष्ट परिणाम प्रदान करेगी। यह महिलाओं को सशक्त भी करेगा और उन्हें विज्ञान के अपने संबंधित क्षेत्रों को चुनने के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और गणित में महिलाओं के महत्व और भूमिका को समझने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा, सामाजिक भूमिका मॉडल को जन्म देगा और भविष्य की पीढ़ी को उसी को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। विज्ञान में महिलाओं द्वारा सामना की गई चुनौतियां जबकि महिलाओं ने विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, वे अक्सर अद्वितीय चुनौतियों का सामना करते हैं। लिंग पूर्वाग्रह, असमान अवसर, और नेतृत्व भूमिकाओं में प्रतिनिधित्व की कमी लगातार मुद्दे हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों और कैरियर की आकांक्षाओं को संतुलित करना जटिलता की एक अतिरिक्त परत जोड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, समावेशिता को बढ़ावा देना, रूढ़ियों को चुनौती देना और वैज्ञानिक क्षेत्रों में महिलाओं के लिए समान अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है। कार्य-जीवन संतुलन और मेंटरशिप कार्यक्रमों का समर्थन करने वाली पहल अधिक सहायक वातावरण बनाने में योगदान कर सकती है। आधुनिक-दिन के नायक: आज विज्ञान को आकार देने वाली महिलाएं चुनौतियों के बावजूद, महिलाएं आज विभिन्न वैज्ञानिक विषयों में महत्वपूर्ण प्रगति कर रही हैं। प्राइमेट्स पर अपने ग्राउंडब्रेकिंग शोध के लिए प्रसिद्ध डॉ। जेन गुडॉल ने न केवल पशु व्यवहार की हमारी समझ को उन्नत किया है, बल्कि एक प्रमुख पर्यावरण कार्यकर्ता भी बन गए हैं। एस्ट्रोफिजिक्स के क्षेत्र में, डॉ। केटी बुमन ने ब्लैक होल की पहली छवि को कैप्चर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसका काम लिंग बाधाओं पर काबू पाने में सहयोग और दृढ़ संकल्प की शक्ति का उदाहरण देता है। विज्ञान में महिलाओं को सशक्त बनाना विज्ञान में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विश्व स्तर पर कई पहल चल रही हैं। मेंटरशिप कार्यक्रम, छात्रवृत्ति और नेटवर्किंग के अवसर महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान करते हैं। लड़कियों को कम उम्र से एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना एक विविध और समावेशी वैज्ञानिक समुदाय के निर्माण में आवश्यक है। इसके अलावा, वैज्ञानिक संस्थानों और उद्योगों के भीतर समावेशिता की संस्कृति को बढ़ावा देना अनिवार्य है। विज्ञान में महिलाओं की उपलब्धियों को पहचानना और जश्न मनाना, अनुसंधान टीमों में विविधता को बढ़ावा देना, और लिंग पूर्वाग्रहों को संबोधित करना एक अधिक न्यायसंगत वातावरण बनाने में योगदान देता है। भविष्य: अगली पीढ़ी का पोषण करना विज्ञान में महिलाओं को सशक्त बनाना केवल वर्तमान असमानताओं को संबोधित करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक उज्जवल भविष्य भी सुनिश्चित करना है। युवा लड़कियों को विज्ञान में अपनी रुचि का पता लगाने, शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने और लिंग रूढ़ियों को खत्म करने के लिए प्रोत्साहित करना एक अधिक समावेशी और विविध वैज्ञानिक समुदाय के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा। डिजिटल युग में, सोशल मीडिया जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस में एक वृद्धि हुई हैऑनलाइन अभियान, जहां दुनिया भर के लोग महिला वैज्ञानिकों की कहानियों, उद्धरणों और छवियों को साझा करते हैं जिन्होंने उन्हें प्रेरित किया है। यह एक आभासी उत्सव है जो भौगोलिक सीमाओं को पार करता है, लोगों को विज्ञान के लिए एक साझा जुनून के माध्यम से जोड़ता है। निष्कर्ष विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाना एक महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन समानता के लिए लड़ाई एक दिन से परे है। विज्ञान में महिलाओं के योगदान को स्वीकार करते हुए, उनकी निरंतर उन्नति का समर्थन करते हुए, और उनके सामने आने वाली बाधाओं को खत्म करते हुए, हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां विज्ञान सभी की प्रतिभाओं और दृष्टिकोणों पर पनपता है।

सोशल मीडिया विनियमन से परे: एक राष्ट्रीय नैतिक कोड के लिए कॉल

विजय गर्ग

हालांकि यह खुला रहता है कि क्या अल्लाहबादिया के बयान ने कानून के किसी भी प्रावधान का उल्लंघन किया है, हालांकि, यह स्पष्ट है कि उनके बयान से अधिकांश आबादी की नैतिक भावनाओं को चोट लगी है। इसके बावजूद, उनके बयान की अवांछनीयता, लोगों को इस तरह से व्यवहार करने की अपेक्षा करना कितना उचित है, जो समाज के लिए नैतिक रूप से स्वीकार्य है जब राज्य द्वारा उनके लिए नैतिक रूप से सही व्यवहार का कोई विशेष पैटर्न निर्धारित नहीं किया जाता है। तात्पर्य यह है कि समाज सभी स्थितियों में नैतिक रूप से सटीक आचरण जानने के लिए सभी को उम्मीद करता है या मानता है। चूंकि नैतिकता एक अमूर्त अवधारणा है जो एक जगह से स्थान और व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती है, यह आवश्यक है कि, कानून की तरह, नैतिकता को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है। आमतौर पर, एक अधिनियम या कथन व्यक्तियों के निर्णय के व्यक्तिगत अर्थों पर एक धर्मी या गलत चरित्र प्राप्त करता है, इस प्रकार, लोगों को स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि क्या स्वीकार्य नैतिक है और क्या अनैतिक है। ऐसी स्थिति में, यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या समाज को एक ऐसे कोड की आवश्यकता है जो अपने लोगों के लिए नैतिक रूप से ईमानदार आचरण का एक पैटर्न निर्धारित करता है। आदर्श रूप से, प्रत्येक समाज को अनैतिक आचरण या व्यवहार से मुक्त होने का लक्ष्य रखना चाहिए और इसके लिए, राज्य को एक पैटर्न या व्यवहार का मानक स्थापित करना चाहिए जो सभी नागरिकों से अपेक्षित है और सभी समान रूप से व्यक्तियों या संगठनों द्वारा पीछा किया जाता है। विडंबना यह है कि भारत में, राज्य ने ऐसे समाज को स्थापित करने का बहुत कम प्रयास किया है, जहां लोग व्यवहार के एक निश्चित सलाह पैटर्न का पालन करते हैं जो सभी के लिए स्वीकार्य है। यह धारणा कि कानून इस उद्देश्य को पूरा करेंगे, पूरी तरह से व्यावहारिक वास्तविकताओं के विपरीत है। इस देश में वे मौजूद कानून ज्यादातर अभियोजन पक्ष के होते हैं, जिसका अर्थ है कि वे काफी हद तक विशेष या विशिष्ट व्यवहार (ओं) को आचरण के वांछनीय पैटर्न (ओं) को विस्तार से रखने के बजाय प्रतिबंधित करते हैं। भारत में, कानून शायद ही निर्धारित हैं और वे जरूरी नहीं कि लोगों के लिए व्यवहार का एक विशेष पैटर्न निर्धारित करें। आम तौर पर, कानून संक्षिप्त या विस्तार से प्रदान नहीं करते हैं कि किस तरीके से, आचरण या व्यवहार के पैटर्न को लोगों का निरीक्षण या अभ्यास करना चाहिए। वे मुख्य रूप से विशेष आचरण (ओं) पर मुकदमा या प्रतिबंधित करते हैं और इस तरह के आचरण को दोषी या दंडनीय बनाते हैं और कुछ परिणामों के लिए उत्तरदायी हैं। ऐसी स्थिति को देखते हुए, क्या यह सभी लोगों से अपेक्षा करने के लिए दूर नहीं है, सभी पर, यह जानने के लिए, हर स्थिति में, मिनट के विवरण में, कानूनी और नैतिक रूप से अनुमेय आचरण और व्यवहार क्या है? भारत में नैतिक रूप से वांछनीय आचरण की एक संहिता तैयार करने के लिए समाज या राज्य की ओर से प्रयासों की कमी को इस विचार के लिए बताया जा सकता है कि यह काम शैक्षिक, धार्मिक या सांस्कृतिक संस्थानों के लिए बेहतर है। लेकिन अगर ऐसा है, तो क्या इस तरह के संस्थानों ने इस संबंध में अपनी जिम्मेदारी पूरी की है? भारत, एक बहु-धार्मिक और बहु-सांस्कृतिक देश होने के नाते, विभिन्न प्रकार के कारक इस उद्देश्य को बाधित करते हैं। विश्वासों और धर्मों की विविधता के परिणामस्वरूप एक सामान्य व्यवहार पैटर्न की कमी के साथ -साथ एक तंत्र की कमी भी होती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि नैतिक निर्देशों को समान रूप से सीखा और अभ्यास किया जा रहा है। यहां तक कि शैक्षणिक संस्थानों को यहां फ़्लॉन्डर लगता है, क्योंकि सभी शैक्षणिक संस्थान सभी स्तरों पर समान रूप से नैतिक या नैतिक मूल्यों को पढ़ाने पर जोर नहीं देते हैं। वे वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा पर बहुत जोर देते हैं, लेकिन नैतिक शिक्षा प्रदान करने पर उसी तरह से नहीं, जो अधिक या समान रूप से आवश्यक है। समाज में अधिकांश समस्याएं हैंलोगों में मजबूत मूल्यों, नैतिकता और चरित्र की अखंडता की कमी के कारण, इसलिए, एक सभ्य राज्य को अपनी आबादी में एक मजबूत मूल्य प्रणाली विकसित करने पर ईमानदारी से काम करना चाहिए। यद्यपि भारतीय संविधान उन नागरिकों के लिए मौलिक कर्तव्यों को निर्धारित करता है जो गैर-लागू करने योग्य हैं, वे केवल, खाली नारे लगाते हैं। सोशल मीडिया पर अवांछनीय सामग्री के बड़े पैमाने पर हमले और कमजोर युवाओं के बीच, और प्रभाव, कमजोर युवाओं को देखते हुए, यह राज्य पर अत्यधिक अवलंबी है, साथ ही साथ, सोशल मीडिया को विनियमित करने के साथ -साथ मजबूत नैतिकता और चरित्र वाले लोगों के राष्ट्र के निर्माण के लिए एक नैतिक/नैतिक आचार संहिता का मसौदा तैयार करता है।

कांगड़ा बाइपास के घाट

यहां आरती का सफर घाट तलाश रहा है तो हिमाचल की नदियों का इतिहास गौरवान्वित होने लगा है। खनन और बाढ़ के खतरों के बीच कांगड़ा के साथ बहती बनेर अंततः पर्यटन के काबिल समझी गई। कभी 'बसदी बनेर दे कंडे', महज भजन था जो अब पर्यटन की परिभाषा और पर्यटन की अभिलाषा में रूपांतरित होने जा रहा है। समाज के सहयोग से कुछ घाट बनाए जा रहे हैं, तो प्रशासनिक पहल से अब नवरात्रि महोत्सव के दौरान सुबह-शाम यहां महाआरती होगी। ये करवटें नए पर्यटन और धार्मिक पर्यटन के परिचय में इजाफा करेंगी। यह दीगर है कि कांगड़ा बाइपास के साथ बनेर जिस आभा में इजाफा करती है, उसे पर्यटन की एडीबी पोषित योजनाएं देख न पाईं। दिव्य हिमाचल लगातार बनेर के साथ घाट पर्यटन को बढ़ावा देने का सुझाव देता रहा है, लेकिन परियोजनाएं तो परियोजनाएं होती हैं। ये संभावना के बजाय सियासी प्राथमिकताएं देखती हैं। अगर प्रशासन को इजाजत और पर्यटन को निष्पक्षता से आंख खोलने दी जाए, तो हिमाचल का चप्पा-चप्पा आर्थिक चरखा चला सकता है। कांगड़ा में बाइपास की भौगोलिक परिस्थिति, बनेर की उपस्थिति और चारों तरफ के नजारे, एक बड़े पर्यटन परिसर, मनोरंजन केंद्र तथा अतिथि संतुष्टि का आग्रह करते रहे हैं। ऐसे में एक व्यापक परियोजना के तहत इस क्षेत्र को मिनी हरिद्वार, बनारस के घाट और हाईवे पर्यटन का बेहतरीन उदाहरण बनाया जा सकता है।

आश्चर्य यह कि कांगड़ा को टूरिज्म कैपिटल बनाने की परियोजनाएं कांगड़ा शहर से ही रूठ गईं। आश्चर्य यह भी कि कांगड़ा निवासी और पर्यटन के कार्यभार में मंत्री का रैंक संभाले आरएस बाली भी इस स्थल की गुजारिश नहीं समझ रहे। अगर बाली भारत के सबसे ऊंचे म्यूजिकल फाउंटेन का शिलान्यास बाइपास पर उभरते पर्यटन के नाम कर दें, यहां एक फूड कोर्ट, आधुनिक घाट, टापू और बच्चों के मनोरंजन का पार्क बनाने की योजना में एडीबी से संपर्क कर लें, तो यह स्थल कांगड़ा को पर्यटन राजधानी बनाने का सही मायने में कांगड़ा शहर में ही शिलालेख कर देगा। कांगड़ा बाइपास के अलावा कालेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा में योजनाएं बनें तो वहां भी सैलानियों के कुंभ लगेंगे। यह इसलिए भी क्योंकि प्रवासी मजदूरों के आने से छठ पूजन जैसे समारोह, नदियों के किनारे सुरक्षित स्थल ढूंढने लगे हैं। पिछले दो-तीन दशकों से हिमाचल में गणेशोत्सव की धूम ने घाट पर्यटन की जरूरत को हर खड्ड और नदी में निहारा है। कांगड़ा बाइपास साक्षी है कि जिला के सबसे बड़े गणेश विसर्जन स्थल के रूप में यह आस्था का केंद्र बन गया है। इसी तरह प्रदेश के अलग-अलग भागों में नदी-नालों और खड्डों के मुहाने तलाशे और तराशे जा रहे हैं। बिलासपुर के नजदीक से गुजरती फोरलेन और प्रस्तावित रेल परियोजना की दृष्टि ने झील पर्यटन की दर्जनों मंजिलें खोज ली हैं। बिलासपुर के जिलाधीश आबिद हुसैन इन्हीं झीलों और बीच में रह गए टापुओं में पर्यटन तलाश रहे हैं। कुछ बेहतरीन प्रयास हो गए हैं, जबकि कई चिन्हित स्थलों पर प्रशासन अपने तौर पर गंभीरता से प्रयास कर रहा है। कैप्टन सैलेज सियाज फाउंडेशन के सहयोग तथा एसडीएम इशांत जसवाल के प्रयास से कांगड़ा में घाट निर्माण का प्रथम चरण दिखाई दे रहा है और अगर इस क्षेत्र के विकास के लिए एक मास्टर प्लान से कार्य हो, तो एडीबी और मंदिर ट्रस्ट के सहयोग से सौ करोड़ के निवेश की जरूरत रहेगी। ऐसे में हर मंदिर ट्रस्ट को अपने क्षेत्र में कम से कम पर्यटन क्षेत्र में एक महापरियोजना पर गंभीरता से काम करना चाहिए। कांगड़ा मंदिर के विस्तारित केंद्र के रूप में बाइपास व बनेर के तट पर गौर करना होगा। चामुंडा और हिमानी चामुंडा के बीच कई पर्यटन गांव मंदिर आय से विकसित हो सकते हैं।

नयनादेवी शहर के हर पड़ाव में मंदिर ट्रस्ट मंदिर संस्कृति के शिलालेख लिख सकता है। दियोटसिद्ध, चिंतपूर्णी व ज्वालाजी अपने आसपास के क्षेत्र को धार्मिक पर्यटन के महामार्ग से जोड़ सकते हैं, तो चंबा और भरमौर की सांस्कृतिक विरासत में वार्षिक महोत्सवों की उड़ान का जज्बा सुदृढ़ हो सकता है। कहना न होगा कि भविष्य में धार्मिक पर्यटन के मार्ग से आधुनिक सैलानी का रिश्ता भी आगे बढ़ेगा। चिंतपूर्णी की आस्था से जुड़े श्रद्धालु अगर वार्षिक भंडारों में करोड़ों व्यय कर रहे हैं, तो इस सहयोग के स्थायी स्तंभ के रूप में नए पर्यटन क्षेत्र विकसित किए जा सकते हैं। मंदिरों के आसपास बेनामी संपत्तियों में अगर श्रद्धालु केवल सुविधाओं के लिए निवेश करते हैं, तो सरकारी तौर पर या मंदिर ट्रस्टों की ओर से आवासीय परियोजनाओं के साथ श्रद्धा के चढ़ावे जोड़ लेने चाहिएं। मसलन अगर कांगड़ा बाइपास परिसर में दो सौ कमरों की आलीशान सराय का निर्माण मंदिर चढ़ावे का घोषित उपक्रम बने, तो श्रद्धालु किसी क्लब हाउस की तरह ऐसी संपत्ति में अपनी वार्षिक रिहाइश सुनिश्चित कर सकते हैं। इतना ही नहीं, मंदिर अपने श्रद्धालुओं के निवेश से प्रमुख पर्यटक स्थलों पर भी ऐसी ही आधुनिक सरायों का निर्माण डलहौजी, मकलोडगंज, मनाली, कसौली, शिमला व अन्य पर्यटक स्थलों पर भी कर सकते हैं।

बदलते मौसम के मसीहा

सुख का वायदा करने वाली हिमाचल प्रदेश सरकार का विधानसभा का बजट सत्र 10 मार्च से शुरू होगा। 17 मार्च को मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू हिमाचल का बजट पेश करेंगे। जनता की बहुत सी उम्मीदें इस बजट पर टिकी हैं। व्यवस्था परिवर्तन को मद्देनजर रखते हुए सरकार ने कुछ ऐसे सख्त निर्णय भी लिए हैं जिससे प्रशंसा, आलोचना और वित्तीय खामियाजा भी भुगतना पड़ा है। हिमाचल प्रदेश का 2025-26 का बजट आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होना चाहिए, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद मिले। वर्तमान में हिमाचल प्रदेश विभिन्न आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें बढ़ता घाटा, ऋष्ण का बोझ और राजस्व की सीमित संभावनाएं प्रमुख हैं। मार्च 2025 तक हिमाचल सरकार पर कर्ज और बढकर लगभग 95 हजार करोड़ रुपए का हो जाएगा। इस कठिन परिस्थिति में आत्मनिर्भरता ही एकमात्र समाधान हो सकता है, जिसके लिए सरकार को स्थानीय संसाधनों का कुशल प्रबंधन और नवाचार को बढ़ावा देना होगा। राज्य की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए सबसे पहले कृषि और बागबानी क्षेत्र में सुधार की जरूरत है। हिमाचल की जलवायु और भौगोलिक स्थिति इसे जैविक कृषि और विशेषकर फल उत्पादन के लिए उपयुक्त बनाती है। किसानों को आधुनिक तकनीकों, विपणन सुविधाओं और प्रसंस्करण इकाइयों से जोड़ा जाए, ताकि वे अपनी उपज का अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें। पर्यटन उद्योग को आत्मनिर्भर बनाने के लिए होमस्टे, इको-टूरिज्म और साहसिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही, धार्मिक पर्यटन को व्यवस्थित कर इसे स्थायी राजस्व का स्रोत बनाया जा सकता है। पर्यटन में स्थानीय उत्पादों को भी जोड़ा जाए, ताकि हस्तशिल्प, लोक कला और स्थानीय व्यंजनों को नया बाजार मिले। जल विद्युत परियोजनाओं की क्षमता को पूरी तरह उपयोग में लाने और बिजली निर्यात से अधिक राजस्व प्राप्त किया जा सकता है। कृषि और बागबानी में नवाचार और प्रसंस्करण उद्योगों को प्रोत्साहन देकर किसानों की आय बढ़ाई जा सकती है, जिससे सरकार को भी अधिक राजस्व मिलेगा। बागबानी उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए लॉजिस्टिक्स और कोल्ड स्टोरेज सुविधाएं मजबूत करनी होंगी। औद्योगिक विकास के लिए राज्य में निवेश को आकर्षित करने की नीतियां बनानी होंगी, खासकर आईटी और फार्मा सेक्टर में। साथ ही, छोटे और मध्यम उद्यमों को समर्थन देकर स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देना जरूरी होगा। पर्यटन, परिवहन और शराब जैसे क्षेत्रों में कर नीति को संतुलित और व्यावहारिक बनाना होगा, ताकि सरकारी राजस्व बढ़े और अवैध गतिविधियों पर रोक लगे। सरकारी खर्चों को नियंत्रित करने के लिए फिजूलखर्ची पर अंकुश लगाना, प्रशासनिक सुधार लाना और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना आवश्यक होगा। केंद्र सरकार की योजनाओं और अनुदानों का पूरा लाभ उठाना, साथ ही बाहरी निवेश की फंडिंग को आकर्षित करने के लिए बेहतर नीति बनानी होगी।

राज्य में आधारभूत ढांचे, विशेष रूप से सडक़, स्वास्थ्य और शिक्षा पर ध्यान देने से समग्र आर्थिक विकास संभव होगा, जिससे सरकार को चलाने में वित्तीय मजबूती मिलेगी। ऊर्जा क्षेत्र में राज्य को सौर और पनबिजली परियोजनाओं में निवेश करना चाहिए। हिमाचल की भौगोलिक स्थिति इसे हरित ऊर्जा उत्पादन के लिए आदर्श बनाती है। सरकार को निजी निवेश को आकर्षित करने और स्थानीय उद्यमियों को सशक्त बनाने के लिए अनुकूल नीतियां बनानी होंगी। औद्योगिक क्षेत्र में छोटे और मध्यम उद्योगों को बढ़ावा देकर रोजगार सृजन पर ध्यान देना होगा। पारंपरिक उद्योगों को पुनर्जीवित करने के साथ-साथ आधुनिक तकनीकों को अपनाना आवश्यक है। इसके लिए स्टार्टअप्स को सरकारी सहयोग और पूंजी निवेश की सुविधा दी जानी चाहिए। शिक्षा और कौशल विकास में निवेश कर राज्य के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार तकनीकी प्रशिक्षण और स्वरोजगार को बढ़ावा देने से बेरोजगारी की समस्या कम होगी।

सोशल मीडिया कहीं खा तो नहीं रहा आपको ?

विजय गर्ग

अभी सोशल मीडिया पर गंभीर अध्ययन होना बाकी है। यह तो तय है कि सोशल मीडिया ने आम आदमी को अपनी बात रखने और कहने का एक जोरदार मंच दिया है। लेकिन, यह भी सच है कि अभी न किसी को यह अंदाज है कि चौबीस घंटे सोशल मीडिया की लत हमें कहां ले जाएगी या इसके कितने दुष्प्रभाव होंगे ? हालांकि, समय-समय पर दुनिया भर में कई यूनिवर्सिटी और संस्थाओं में इस बाबत शोध होते रहते हैं। इन शोधों में यह भी पाया गया कि सोशल मीडिया के अत्यधिक इस्तेमाल की वजह से 46 प्रतिशत तनाव बढ़ने लगा है, लोग अवसाद के मरीज बन रहे हैं और अकेलापन बढ़ता जा रहा है एक अध्ययन के अनुसार, इस साल के अंत तक पूरे विश्व में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाले लगभग 5 अरब पहुंचने की उम्मीद है। इस वृहद संख्या में एक नंबर आपका भी है।

क्या सही है क्या गलत ? कोलंबिया यूनिवर्सिटी में पिछले साल हुए एक अध्ययन के मुताबिक इसमें शामिल 42 प्रतिशत लोगों ने माना कि उन्हें कुछ अर्से से नींद की दिक्कत हो रही है। यही नहीं, 35 प्रतिशत लोगों ने अवसाद या तनाव की बात कही। सोशल मीडिया की लत को रेखांकित करते हुए डॉक्टर पीटर नार्वे ने कहा, 'इस समय अधिकांश लोग सोशल मीडिया के इस्तेमाल को ले कर सही और गलत के भ्रम में हैं।' इस अध्ययन के तहत बीस हजार से अधिक लोग शामिल हुए थे।

गुलाम ना बनें

'द आर्ट ऑफ सोशल मीडिया' किताब के लेखक गई कावासकी लिखते हैं, 'इस मंच को आप अपनी बेहतरी के लिए इस्तेमाल करें तो सही है। इसके गुलाम बनेंगे तो यह आका की तरह आप पर हुक्म करने लगेगा।' दरअसल, अब तक सोशल मीडिया को ले कर जितने भी अध्ययन और शोध हुए हैं, उन सबमें एक बात सामने आई है कि इसमें खर्च होने वाला समय और ऊर्जा 52 प्रतिशत मामलों में सकारात्मक नहीं होता। डॉ. पीटर कहते हैं कि लाइक और कमेंट की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देती है। इससे होने वाला तनाव हृदय गति को भी बड़ा देता है। सोशल मीडिया की लत को खराब जीवनशैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं। उनका मानना है कि इसका नुकसान तुरंत नहीं नजर आता, पर कुछ समय बाद शिथिलता, भूख न लगना, सिरदर्द, उचटी नींद, पेट में मरोड़, शरीर के विभिन्न हिस्सों में गांठ के तौर पर उभर कर आता है।

अमेरिकी उत्पादों पर टैरिफ घटाने में भारत का फायदा, झट से बढ़ जाएगा निर्यात

परिवहन विशेष न्यूज

अमेरिका द्वारा भारत के उत्पादों पर टैरिफ घटाने से भारतीय निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। टेक्सटाइल लेदर मोबाइल फोन इलेक्ट्रॉनिक्स जेम्स और ज्वेलरी जैसे क्षेत्रों को खास फायदा होगा। यदि भारत औद्योगिक वस्तुओं पर शुल्क कम करता है तो भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाएंगे। कृषि उत्पादों पर शुल्क में कटौती मुश्किल दिख रही है लेकिन औद्योगिक वस्तुओं पर राहत मिलने से निर्यात तेजी से बढ़ सकता है।

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर टैरिफ वॉर (व्यापारिक युद्ध) शुरू करने के बाद अमेरिका ने आगामी दो अप्रैल से भारत के साथ पारस्परिक शुल्क लगाने की घोषणा कर दी है। फैसले को लागू करने में ट्रंप प्रशासन की तत्परता को देखते हुए भारत के साथ पारस्परिक शुल्क को लागू करना तय माना जा रहा है। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि भारत अमेरिका से आने वाले औद्योगिक वस्तुओं के शुल्क को कम कर देता है या खत्म कर देता है, तो इससे भारतीय निर्यात में ही बढ़ोतरी होगी।

कृषि संबंधित आइटम पर भारत औसतन 37 प्रतिशत शुल्क वसूलता है, लेकिन किसानों से जुड़े होने के नाते कृषि आइटम से जुड़े शुल्क को कम करना मुश्किल दिख रहा है। विशेषज्ञ पारस्परिक शुल्क को दो तरह से लागू करने की बात कह रहे हैं। एक तरीका यह होगा कि मान लीजिए कृषि आइटम पर भारत औसतन 37 प्रतिशत शुल्क वसूलता है और अमेरिका अभी पांच प्रतिशत शुल्क लेता है। आइटम के आधार पर पारस्परिक शुल्क वसूलने पर अमेरिका भी भारत के कृषि आइटम पर औसतन 37 प्रतिशत का शुल्क वसूलेगा।

पारस्परिक शुल्क लगाने का दूसरा तरीका यह है कि भारत लगभग 80 अरब डॉलर का अमेरिका को निर्यात करता है और अमेरिका लगभग 40 अरब डॉलर का करता है तो अमेरिका की कोशिश होगी कि व्यापार बढ़ाकर इस अंतर को कम किया जाए और शुल्क वसूली से होने वाली दोनों देशों की कमाई में भी अंतर नहीं रहे। ऐसे में भारत अमेरिका से पहले की तुलना में पेट्रोलियम पदार्थों का अधिक आयात कर सकता है।

फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशंस (फियो) के आगामी अध्यक्ष एस.सी. रल्हन कहते हैं कि टेक्सटाइल आइटम पर भारत अमेरिका के लिए अपने शुल्क जीरो कर देता है तो भारतीय गारमेंट व लेदर पर भी अमेरिकी बाजार में जीरो शुल्क हो जाएगा और इससे फायदा यह होगा कि भारतीय उत्पाद अमेरिका के बाजार में वियतनाम, कंबोडिया व बांग्लादेश की तुलना में सस्ते हो जाएंगे और निर्यात को बढ़ावा मिलेगा।

मोबाइल फोन व अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम के निर्यात पर भारत से अमेरिका सिर्फ 0.4 प्रतिशत का शुल्क वसूलता है जबकि भारत अमेरिका से इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम के लिए 7.64 प्रतिशत का शुल्क लेता है। भारत अगर इसे शून्य कर देता है तो अमेरिका में भारतीय मोबाइल फोन और इलेक्ट्रॉनिक्स पर कोई शुल्क नहीं लगेगा और निर्यात और बढ़ जाएगा। चीन के इलेक्ट्रानिक्स आइटम पर अमेरिका में अब 30 प्रतिशत का शुल्क लगेगा।

फियो के महानिदेशक व सीईओ अजय सहाय के मुताबिक कृषि आइटम को छोड़कर औद्योगिक आइटम पर शुल्क कटौती करने से भारतीय निर्यात को फायदा होगा। इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, जेम्स व ज्वेलरी, टेक्सटाइल व क्लोदिंग, लेदर, केमिकल, डायमंड व ऑटोमोबाइल जैसे आइटम का भारत मुख्य रूप से निर्यात करता है। इन आइटम का अमेरिका भारत में काफी कम मात्रा में निर्यात करता है। ऐसे में औद्योगिक वस्तुओं के शुल्क में कटौती से ऐसा नहीं होगा कि अमेरिका का इन वस्तुओं का निर्यात बढ़ जाएगा।

फार्मा एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के पूर्व चेयरमैन दिनेश दुआ ने बताया कि पारस्परिक शुल्क लगने से दवा निर्यात पर कोई असर नहीं होगा। भारत अमेरिका को 12 अरब डॉलर का निर्यात करता है और अमेरिका के पास दवा के लिए कोई बहुत विकल्प नहीं है। अमेरिका भारत से दवा निर्यात पर 1.06 प्रतिशत का शुल्क वसूलता है तो भारत 9.68 प्रतिशत का। इसे कम कर देने पर दवा निर्यात अमेरिका में और बढ़ सकता है।

रोजगार के लिहाज से बेहतर रहा फरवरी महीना, फ्रेशर्स की तेज भर्ती के कारण नौकरियों में 41% की वृद्धि

देश में फरवरी महीने में नौकरियों की संख्या तेजी से बढ़ी। नौकरी बाजार में साल के दूसरे महीने में 41 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इस दौरान बड़े पैमाने पर फ्रेशर्स की भर्ती की गई। गुरुवार को आई एक रिपोर्ट में दावा किया गया है। रिपोर्ट में और क्या-क्या कहा गया है? आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में फरवरी महीने में नौकरियों की संख्या तेजी से बढ़ी। नौकरी बाजार में साल के दूसरे महीने में 41 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। इस दौरान बड़े पैमाने पर फ्रेशर्स की भर्ती की गई। गुरुवार को आई एक रिपोर्ट में दावा किया गया है। एशिया के जॉब्स और टैलेंट प्लेटफॉर्म फाउंडिट (पूर्व में मॉन्स्टर एपीएसी और एमई) के आंकड़े बताते हैं कि फरवरी में फ्रेशर हायरिंग में सालाना आधार पर 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई। रिपोर्ट में कहा गया है कि नियोक्ताओं के बीच प्रवेश स्तर की प्रतिभा के लिए लगातार मांग दिखी। रिपोर्ट के अनुसार, फरवरी 2025 में एक साल पहले की तुलना में भर्ती में 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

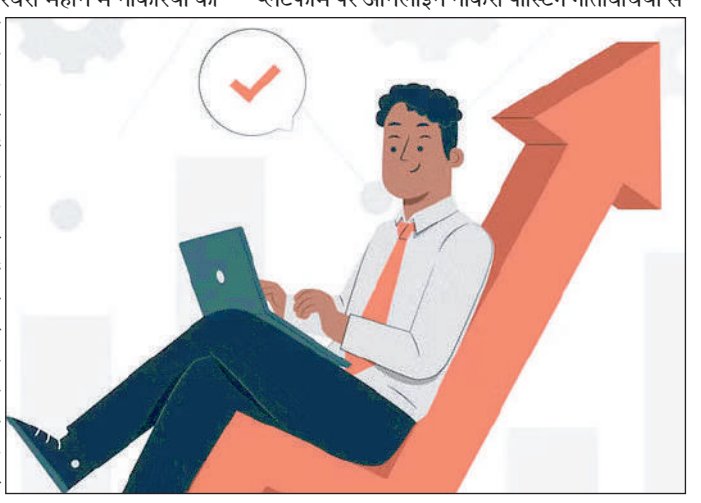

आईटी क्षेत्र में की गई फ्रेशर्स की सबसे अधिक हायरिंग

फाउंडिट की रिपोर्ट में कहा गया है कि आईटी क्षेत्र में हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर से जुड़े कार्यों के लिए फ्रेशर्स की सबसे अधिक नियुक्तियां की गईं। कुल रोजगार सृजन में 2024 में इनकी हिस्सेदारी 17 प्रतिशत थी, जो दोगुनी होकर 2025 में 34 प्रतिशत हो गई। फाउंडिट के सीईओ वी सुरेश ने कहा, ₹कौशल आधारित नियुक्ति की ओर बदलाव से इनकार नहीं किया जा सकता। नियोक्ता व्यावहारिक विशेषज्ञता और उद्योग-प्रासंगिक कौशल वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे रहे हैं।₹

कॉल सेंटर से जुड़े उद्योग में नौकरियों में गिरावट

फाउंडिट इनसाइट्स ट्रैकर (फिट) फाउंडिट.इन प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन नौकरी पोस्टिंग गतिविधियों से जुड़ा एक व्यापक मासिक विश्लेषण है। रिपोर्ट से पता चला है कि भर्ती और स्टाफिंग उद्योग में भी नए लोगों की नियुक्ति में वृद्धि देखी गई है। रिपोर्ट के अनुसार, बीएफएसआई और बीपीओ/आईटीईएस जैसे क्षेत्रों में नए नियुक्तियों में गिरावट दिखी है। यह गिरावट दर्शाता है कि उद्योग जगत की प्राथमिकता बदल रही है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों के अलावा, नासिक, जयपुर, सूरत, कोयम्बटूर, इंदौर, कोच्चि, थाने, वडोदरा, चंडीगढ़ और नागपुर जैसे टियर II शहर भी नए रोजगार के लिहाज से प्रमुख स्थान के रूप में उभर रहे हैं।

एफएमसीजी कंपनियों को बिक्री बढ़ने की आस, आयकर राहत व ब्याज दरों में कटौती से बढ़ सकती है मांग

नई दिल्ली। फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स (एफएमसीजी) कंपनियों के लिए तीसरी तिमाही काफी मिली जुली रही। कंपनियों की आय तो बढ़ी लेकिन कच्चे माल की बढ़ती कीमतों की वजह से मार्जिन पर दबाव रहा। उद्योग विशेषज्ञों का कहना है कि कंपनियों ने महाकुंभ के दौरान अपनी बिक्री को बढ़ाने के लिए उस ओर भी खर्च को बढ़ाया, जिसका असर वित्तीय वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में देखने को मिलेगा साथ ही मांग में सुधार और शहरी क्षेत्रों में सुधार के संकेत की वजह से कंपनियों की परेशानी कम होने की संभावना है। मोतीलाला ओसवाल की रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2025 चौथी तिमाही में शहरी मांग में थोड़ा बहुत सुधार होने के संकेत है, तो दूसरी ओर केंद्रीय बजट 2025 में आयकर राहत तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा ब्याज दरों में कटौती से शहरी मांग में सुधार होगा। जिसका असर कंपनियों की परिणामों दिखाई देगा। बावजूद इसके कंपनियों की मांग 10 तिमाही से कम बनी हुई है, हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में बिक्री में सुधार है, लेकिन शहरी क्षेत्रों में मांग सुस्त है।

मुद्रास्फीति और कच्चे माल की बढ़ती लागत

आनंद राठी की रिपोर्ट के अनुसार कॉफी, चाय और कोको के साथ अन्य कमोडिटी की बढ़ती कीमतों की वजह से कंपनियों की लागत बढ़ रही है। पिछले कुछ महीनों में पॉम ऑयल के दाम और निर्यात भी चुनौती बना हुआ है। उद्योग के आंकड़ों के अनुसार पिछले एक साल से कॉफी की कीमतें दोगुनी से अधिक है। गेहूं और पाम ऑयल की कीमतों में 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। इन सभी वजहों से ब्रिटानिया तथा नेस्ले जैसी अधिकतर कंपनियों ने कई कैटेगरी में उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी भी की है, जिसकी वजह से मांग सुस्त बनी हुई है। एफएमसीजी क्षेत्र की अग्रणी कंपनी हिन्दुस्तान लिवर और डाबर जैसी कंपनियों ने वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही में अपनी बिक्री में गिरावट देखी है।

बढ़ती लागत की वजह से कंपनियों ने विज्ञापन खर्च को कम किया

वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में एफएमसीजी कंपनियों ने अपने विज्ञापन खर्च को कम कर दिया है। यहां तक की आगामी आईपीएल को भी लेकर कंपनियों ने बजट पर विचार कर रही हैं। कंपनियों द्वारा हाल ही में वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही के परिणामों के आंकड़ों से पता चलता है कि हिन्दुस्तान यूनिलिवर का पिछले साल की तुलना में विज्ञापन खर्च को 8 प्रतिशत घटकर 1,466 करोड़ रुपये हो गया है, जबकि पिछली तिमाही में इसमें 15 प्रतिशत की कमी आई थी। डाबर इंडिया का विज्ञापन व्यय 7.3 प्रतिशत से घटकर 225.7करोड़ रुपये रह गया है, जबकि कोलगेट पामोलिव का भारतीय परिचालन में 2 प्रतिशत की गिरावट के साथ यह 1,452 करोड़ रुपये रहा। विज्ञापन खर्च में कमी प्रमुख रूप से जरूरी वस्तुओं पर मुद्रास्फीति के दबाव के कारण देखने को मिल रही है। जिसकी वजह से कंपनियों के मार्जिन पर दबा बना हुआ। जबकि गोदरेज और मैरिको ने अपने विज्ञापन व्यय को बढ़ाया है।

मैरिको ने अपने विज्ञापन व्यय को 19.1प्रतिशत बढ़ाकर 293 करोड़ रुपये कर दिया है। गोदरेज कंज्यूमर ने प्रोडक्टस और इमामी के विज्ञापन व्यय 6 से 7 प्रतिशत तक की वृद्धि की है। मोतीलाल ओसवाल की रिपोर्ट के अनुसार एफएमसीजी कंपनियों के लिए आईपीएल और ऐसे कई इंवेट उनकी बिक्री को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इस दौरान कंपनियां नए उत्पादों को भी पेश करती हैं। साथ ही कंपनियां पहले से ही बड़े इवेंट के लिए अपने विज्ञापन खर्च का एक हिस्सा बचा कर रखती हैं, जैसे कि महाकुंभ के दौरान देखने को मिला, उम्मीद है कि आगामी आईपीएल और होली को लेकर कंपनियां पहले से तैयारी कर चुकी हैं और इसका परिणाम वित्त वर्ष 2025 चौथी तिमाही के नतीजों में दिखाई देगा।

बिक्री बढ़ने की उम्मीद

उद्योग विशेषज्ञों का कहना है कि कंपनियों ने महाकुंभ के दौरान अपनी बिक्री को बढ़ाने के लिए उस ओर भी खर्च को बढ़ाया, जिसका असर जनवरी-मार्च तिमाही में देखने को मिलेगा साथ ही मांग में सुधार और शहरी क्षेत्रों में सुधार के संकेत की वजह से कंपनियों की परेशानी भी कम होने की संभावना है। मोतीलाला ओसवाल की रिपोर्ट के अनुसार चौथी तिमाही में शहरी मांग में थोड़ा बहुत सुधार होने के संकेत है, तो दूसरी ओर केंद्रीय बजट 2025 में आयकर राहत तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा ब्याज दरों में कटौती से शहरी मांग में सुधार होगा। जिसका असर कंपनियों की परिणामों दिखाई देगा।हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में बिक्री में सुधार है, लेकिन शहरी क्षेत्रों में मांग सुस्त हुई है।

ट्रंप के पारस्परिक शुल्क से निपटने के तरीकों पर विचार कर रहा भारत, जल्द निकलेगा समाधान

परिवहन विशेष न्यूज

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पारस्परिक टैरिफ की धमकी से वैश्विक व्यापार युद्ध की आशंका बढ़ गई है भारत वाशिंगटन के साथ व्यापार समझौते के व्यापक ढांचे के तहत चुनौती का सौहार्दपूर्ण समाधान खोजने पर विचार कर रहा है। ट्रंप ने कई ऐसे व्यापारिक साझेदारों पर दो अप्रैल से पारस्परिक शुल्क लगाने की घोषणा की जो अमेरिका से आयात पर उच्च शुल्क लगाते हैं।

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पारस्परिक शुल्क की धमकी से वैश्विक स्तर पर व्यापार युद्ध छिड़ने की आशंकाओं बीच भारत अमेरिका के साथ व्यापार समझौते के तहत चुनौती का सौहार्दपूर्ण समाधान खोजने की कोशिश कर रहा है।

ट्रंप ने दो अप्रैल से पारस्परिक शुल्क लगाने की घोषणा की

मंगलवार को अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी उत्पादों पर ज्यादा शुल्क लगाने के लिए यूरोपीय संघ, चीन और कनाडा के साथ भारत का भी उल्लेख किया। अपनी "अमेरिका फर्स्ट" नीति के अनुरूप ट्रंप ने कई ऐसे व्यापारिक साझेदारों पर दो अप्रैल से पारस्परिक शुल्क लगाने की घोषणा की, जो अमेरिका से आयात पर उच्च शुल्क लगाते हैं।

मामले से परिचित लोगों ने वाशिंगटन में 13 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और ट्रंप द्वारा व्यक्त की गई प्रतिबद्धता का हवाला देते हुए कहा कि भारत को समाधान खोजने का भरोसा है।

बातचीत से निकलेगा हल

बैठक में दोनों पक्ष इस साल के अंत तक एक व्यापार समझौते पर बातचीत करने और व्यापार घाटे को कम करने के लिए 2030 तक वार्षिक व्यापार में 500 बिलियन डॉलर का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करने पर सहमत हुए। मोदी-ट्रंप वार्ता के बाद जारी संयुक्त बयान में कहा गया है कि इस स्तर के लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक नई और निष्पक्ष व्यापार शर्तों की आवश्यकता होगी।

कैसे काम करता है टैरिफ वॉर? पढ़ें किसपर पड़ता है व्यापार युद्ध का सबसे बुरा असर

चीन, मेक्सिको और कनाडा के उत्पादों पर अमेरिका का टैरिफ (Tariff War) मंगलवार से लागू हो गया है। माना जा रहा है कि इसी के साथ दुनिया टैरिफ वॉर के दौर में प्रवेश कर गई है। आइये जानते हैं कि टैरिफ क्या है और यह कैसे काम करता है?

आयात पर लगने वाला टैक्स है टैरिफ टैरिफ आयात पर लगने वाला टैक्स है। आम तौर पर खरीदार जिस कीमत पर विदेशी विक्रेता से सामान खरीदता है, उस कीमत का एक तय प्रतिशत टैरिफ वसूला जाता है।

अमेरिका में उत्पादों के हिसाब से टैरिफ दरें अलग-अलग

अमेरिका में कस्टम्स एंड बॉर्डर प्रोटेक्शन एजेंट्स पूरे देश में 328 बंदरगाहों पर टैरिफ एकत्र करते हैं। अमेरिका में टैरिफ दरें अमेरिका में उत्पादों के हिसाब से टैरिफ दरें अलग-अलग हैं। उदाहरण के लिए पैसेंजर कारों पर यह 2.5 प्रतिशत और गोल्फ शूज पर 6 प्रतिशत हैं। उन देशों के लिए टैरिफ दरें कम हो सकती हैं, जिनके साथ अमेरिका का व्यापार समझौता है।

एसआईपी क्या है? इसके कॉन्सेप्ट को समझें, फायदे जानें और शुरुआत कैसे करें

परिवहन विशेष न्यूज

SIP (Systematic Investment Plan) एक निवेश योजना है जिसमें आप नियमित रूप से छोटी राशि निवेश कर सकते हैं। यह जोखिम को डायवर्सिफाई करता है अनुशासन बनाए रखता है और कंपाउंडिंग का लाभ देता है। 500 या 1000 रुपये से भी शुरुआत संभव है। निवेश के लिए KYC पूरा करें सही म्यूचुअल फंड चुनें और निवेश की अवधि तय करें।

नई दिल्ली। निवेश करने की सलाह देने वाले बहुत लोग होंगे। कुछ सलाह महत्वपूर्ण होती हैं, तो कुछ गैर-जरूरी भी। कुछ कहेंगे कि आप इक्विटी में निवेश करें, तो कुछ म्यूचुअल फंड में भरोसा दिखाएंगे और SIP के जरिए निवेश करने की सलाह देंगे। सही और गलत का फैसला आपका अनुभव और निवेश में ज्ञान ही करेगा। लेकिन यदि आप इस क्षेत्र में नए हैं और पारंपरिक तरीकों से हटकर नए तरीके अपनाना चाहते हैं, तो SIP (Systematic Investment Plan) एक बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है।

SIP क्या है?

नौकरीपेशा लोगों के पास आमतौर पर एक साथ बड़ी रकम निवेश करने का विकल्प नहीं होता। वे छोटे अमाउंट से निवेश की शुरुआत करना चाहते हैं। दीपक का मानना है कि "SIP एक शानदार कॉन्सेप्ट है। आप किसी म्यूचुअल फंड में SIP के जरिए अपने निवेश की शुरुआत कर सकते हैं। इसके लिए एकमुश्त राशि निवेश करने की जरूरत नहीं होती। इसमें रिस्क कम होता है और समय के साथ बेहतर रिटर्न मिल सकता है।"

SIP के फायदे

1. रिस्क डायवर्सिफिकेशन

यदि आपका निवेश डायवर्सिफाइड है, तो आपका जोखिम काफी हद तक कम हो सकता है। SIP के जरिए आप किसी एक स्टॉक या सेक्टर पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि अलग-अलग सेक्टर्स में निवेश करते हैं। SIP में आप Net Asset Value (NAV) का औसत निकालकर एकमुश्त निवेश की तुलना में बेहतर रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं।

2. नियमितता और अनुशासन

निवेश में अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण होता है। SIP आपको नियमित रूप से निवेश करने के लिए प्रेरित करता है और आपको अपने फाइनेंशियल गोल्स को प्राप्त करने में मदद करता है। जब आप हर महीने एक निश्चित राशि निवेश करते हैं, तो आपका कोष धीरे-धीरे बढ़ता है और लंबे समय में अच्छा रिटर्न मिलता है।

3. हर किसी के लिए एक्सेसिबल

SIP के जरिए हर कोई निवेश कर सकता है। इसके लिए बहुत ज्यादा पूंजी की जरूरत नहीं होती। यदि आपके पास ₹500 या ₹1,000 की छोटी राशि है, तो भी आप अपनी निवेश यात्रा शुरू कर सकते हैं। यह सीमित संसाधनों वाले व्यक्तियों को भी अपनी संपत्ति व्यवस्थित रूप से बढ़ाने का मौका देता है।

4. पावर ऑफ कंपाउंडिंग

Power of Compounding यानी ब्याज पर ब्याज अर्जित करने की क्षमता। यह समय के साथ आपके धन को तेजी से बढ़ाने में मदद कर सकता है। SIP न केवल नियमित निवेश को बढ़ावा देता है, बल्कि लंबी अवधि में अधिकतम ग्रोथ दिलाने में भी मदद करता है।

SIP का निवेशकों पर प्रभाव

पिछले कुछ वर्षों में SIP में निवेश करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है। कई निवेशक सालों से SIP कर रहे हैं और इसका फायदा उठा रहे हैं। दीपक कहते हैं—

"जब मैंने अपना करियर शुरू किया, तो मैंने SIP के माध्यम से निवेश किया। 20 वर्षों तक अनुशासित रहकर छोटे-छोटे निवेश किए और एक बड़ी राशि बनाई, जिससे मुझे घर खरीदने में मदद मिली। SIP की नियमितता ने इस प्रक्रिया को आसान बना दिया।₹

यदि आपने घर खरीदने, बच्चे की शिक्षा या रिटायरमेंट का लक्ष्य रखा है, तो SIP एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। आप अनुमानित रिटर्न रेट और समयसीमा के आधार पर आवश्यक निवेश की गणना कर सकते हैं। यह लोन लेने या बचत में देरी करने की तुलना में अधिक फायदेमंद साबित हो सकता है।

SIP की शुरुआत कैसे करें?

1. KYC पूरा करें

ऑनलाइन या ऑफलाइन माध्यम से KYC (Know Your Customer) प्रक्रिया पूरी करें। सुनिश्चित करें कि आपके संपर्क विवरण सही हैं, ताकि किसी भी कम्युनिकेशन गैप से बचा जा सके।

2. म्यूचुअल फंड चुनें

अपने रिस्क प्रोफाइल के आधार पर म्यूचुअल फंड चुनें— इक्विटी फंड, डेट फंड या मल्टी-एसेट फंड। म्यूचुअल फंड्स को हाई रिस्क से लेकर लो रिस्क तक वर्गीकृत किया जाता है। आप अपने कंफर्ट के अनुसार सही फंड का चुनाव करें।

3. SIP की अवधि चुनें

एक बार म्यूचुअल फंड चुनने के बाद, आपको SIP की आवृत्ति तय करनी होगी— दैनिक, साप्ताहिक, मासिक या वार्षिक। यह निर्णय आपकी आय और खर्चों के अनुसार लें।

4. निवेश को अपनी जरूरतों के अनुसार बनाएं

बिना सोचे-समझें दूसरों का अनुसरण न करें। अपनी आय, बचत और फाइनेंशियल गोल्स के आधार पर SIP प्लान करें, ताकि यह आपके लिए सुविधाजनक और प्रबंधनीय हो।

5. रिटायरमेंट का नजरिया अपनाएं

हर कोई किसी न किसी दिन रिटायर होगा और रिटायरमेंट के बाद भी खर्चे कम नहीं होंगे। आदर्श रूप से, आज जितना खर्च करते हैं, उतना ही बचत करने का प्रयास करें। SIP आपको समय के साथ एक बड़ा फंड बनाने में मदद कर सकता है, जिससे रिटायरमेंट के बाद आरामदायक जीवन संभव हो सके।

दीपक ठुकराल कहते हैं, "SIP में सफलता तभी मिलेगी जब आप अनुशासित रहेंगे। एक बार जब आप निवेश को स्वचालित कर देते हैं, तो यह आपकी वित्तीय आदत बन जाती है और वर्षों में यह एक बड़े धन में तब्दील हो जाता है। SIP एक सरल, सुरक्षित और प्रभावी निवेश तरीका है, जो हर किसी के लिए उपयुक्त है। यह छोटे निवेशों को बड़े लाभ में बदलने की क्षमता रखता है और आपको अपने फाइनेंशियल गोल्स को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।" अगर आप अभी तक SIP से नहीं जुड़े हैं, तो यह सही समय है निवेश की शुरुआत करने का!"

लगातार दूसरे दिन बाजार में रहा बुल्स का जोर; सेंसेक्स 610 अंक चढ़ा, निफ्टी 22500 के करीब

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। शेयर बाजार में गुरुवार को लंबी बिकवाली के बाद लगातार दूसरे दिन खरीदारों का जोर रहा। हफ्ते के चौथे कारोबारी दिन सेंसेक्स 609.86 अंक उछलकर 74,340.09 पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी 207.40 अंक चढ़कर 22,544.70 के स्तर पर पर बंद हुआ। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 6 पैसे गिरकर 87.12 (अनंतिम) पर बंद हुआ। कच्चे तेल की कीमतों में नरमी के बीच रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में मजबूत खरीदारी से भारतीय बाजार के प्रमुख बेंचमार्क सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी लगातार दूसरे दिन हरे निशान पर बंद हुए। सेंसेक्स करीब 610 अंक की बढ़त के साथ 74,000 अंक के स्तर को पार कर गया, जबकि निफ्टी भी लगातार दूसरे दिन 22,500 अंक से ऊपर बंद हुआ।

उतार-चढ़ाव के बाद हरे निशान पर बंद होने में सफल रहे सेंसेक्स-निफ्टी

शुरुआती गिरावट से उबरते हुए 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 609.86 अंक या 0.83 प्रतिशत उछलकर 74,340.09 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 660.57 अंक या 0.89 प्रतिशत बढ़कर 74,390.80 अंक के उच्च स्तर पर पहुंच गया। एनएसई का निफ्टी 207.40 अंक या 0.93 प्रतिशत बढ़कर 22,544.70 पर बंद हुआ। सत्र के दौरान 50 शेयरों वाला यह सूचकांक 219.15 अंक या 0.98 प्रतिशत चढ़कर 22,556.45 के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया।

सेंसेक्स के शामिल शेयरों में कौन चढ़ा, कौन टूटा?

सेंसेक्स में शामिल शेयरों में एशियन पेंट्स, एनटीपीसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज, टाटा स्टील, बजाज फिनसर्व, हिंदुस्तान यूनिलीवर, सन फार्मास्यूटिकल्स, अडानी पोर्ट्स एंड एसईजेड, एक्सिस बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाइटन और बजाज फाइनेंस प्रमुख रूप से लाभ में रहे। टेक महिन्द्रा, कोटक महिन्द्रा बैंक, जोमैटो, टाटा मोटर्स और इंडसइंड बैंक पिछड़ गए। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'कनाडा और मैक्सिको की वाहन कंपनियों पर टैरिफ में नरमी के ट्रंप के फैसले तथा डॉलर सूचकांक में कमजोरी के बाद सकारात्मक वैश्विक संकेतों के कारण भारतीय सूचकांक में मजबूती देखी गई।'

उतार-चढ़ाव के बाद हरे निशान पर बंद होने में सफल रहे सेंसेक्स-निफ्टी

शुरुआती गिरावट से उबरते हुए 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 609.86 अंक या 0.83 प्रतिशत उछलकर 74,340.09 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 660.57 अंक या 0.89 प्रतिशत बढ़कर 74,390.80 अंक के उच्च स्तर पर पहुंच गया। एनएसई का निफ्टी 207.40 अंक या 0.93 प्रतिशत बढ़कर 22,544.70 पर बंद हुआ। सत्र के दौरान 50 शेयरों वाला यह सूचकांक 219.15 अंक या 0.98 प्रतिशत चढ़कर 22,556.45 के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया।

महिला दिवस विशेषः- सार्थक भागीदारी के बिना कैसे हल होंगे आधी दुनिया के मसले

प्रियंका सौरभ

हमारे देश में महिलाएँ जनसंख्या का लगभग 48% हिस्सा हैं, फिर भी वे लोकसभा सीटों के 15% से भी कम पर कब्जा करती हैं। इस महत्वपूर्ण अल्प प्रतिनिधित्व के परिणामस्वरूप कार्यस्थल सुरक्षा, अवैतनिक देखभाल ज़िम्मेदारियाँ और आर्थिक अधिकार जैसे महिला मुद्दों की अनदेखी होती है। इस तरह का बहिष्कार पितृसत्तात्मक मानदंडों को बनाए रखता है। फिर भी, ऐसे भेदभाव को दूर करने, कानूनी सुरक्षा बढ़ाने और संवैधानिक अधिकारों की पुष्टि करने में न्यायिक कार्यवाही महत्वपूर्ण रही है, हालाँकि गहरी जड़ें जमाए हुए पूर्वाग्रहों को मिटाने में उनकी सफलता अभी भी चर्चा का विषय है। महिला प्रतिनिधित्व की कमी से मातृ अधिकारों का हनन होता है, जिसके परिणामस्वरूप कार्यस्थल पर भेदभाव होता है और पर्याप्त सहायता की कमी होती है। मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम 2017 सवेतन अवकाश प्रदान करता है, लेकिन निजी क्षेत्र में इसका कार्यान्वयन कम है, जो महिलाओं को कार्यबल में शामिल होने से हतोत्साहित करता है।

निर्णय लेने की प्रक्रिया से महिलाओं को बाहर रखने से महिला सशक्तिकरण की कड़ी कमजोर होती है। इसके पीछे की वजहें हैं लैंगिक पूर्वाग्रह और भेदभाव, कार्यस्थल संस्कृति, सामाजिक और पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी न होने से महिलाओं को दरकिनार किया जाता है। इससे दायरा सीमित हो जाता है और इस सीमित दायरे में आने वाली चुनौतियों का सामना करना मुश्किल होता है। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार कार्यालय के मुताबिक, निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी ना केवल उनका अधिकार है, बल्कि यह सार्वजनिक निर्णयों में उनके हितों का सम्मान करने की अनिवार्य शर्त भी है। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने कहा था कि लोकतंत्र का स्तर मूल रूप से महिलाओं के सशक्तीकरण पर निर्भर करता है। इस असमानता को कम करने के लिए शिक्षा के ज़रिए महिलाओं को सशक्त बनाना, उत्पीड़न से मुक्त और सुरक्षित वातावरण बनाना, लड़कियों को जीवन कौशल सिखाना, हिंसा को ख़त्म करना पहली आवश्यकता है।

वर्तमान नीतियाँ लचीली कार्य व्यवस्था प्रदान नहीं करती हैं, परिणामस्वरूप महिलाओं के लिए अपने पेशेवर और घरेलू जीवन को संतुलित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। कई कार्यस्थल पॉश अधिनियम 2013 का अनुपालन नहीं करते हैं, क्योंकि पुरुष-प्रधान नेतृत्व अक्सर महिलाओं की सुरक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता को अनदेखा करता है। इसके अतिरिक्त, नीतियाँ महिला उद्यमियों को समान ऋण और व्यावसायिक प्रोत्साहन प्राप्त करने में पर्याप्त रूप से सहायता नहीं करती हैं, जो उनके आर्थिक सशक्तीकरण को सीमित करती हैं। हालांकि न्यायालयों ने मातृ सुरक्षा को मज़बूत करके लिंग-संवेदनशील कार्यस्थलों को बढ़ावा देने में भूमिका निभाई है। 2024 में, सुप्रीम कोर्ट ने दो महिला न्यायाधीशों को बहाल किया, इस बात पर ज़ोर देते हुए कि गर्भावस्था से सम्बंधित बर्खास्तगी दंडनीय और अवैध दोनों है, जिससे कार्यस्थल समानता को बढ़ावा मिलता है। न्यायिक निर्णयों ने महिलाओं के लिए कानूनी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए भेदभावपूर्ण धार्मिक प्रथाओं को भी उलट दिया है। उदाहरण के लिए, 2017 में शायरा बानो मामले ने ट्रिपल तलाक को अपराध घोषित कर दिया, जिससे मुस्लिम महिलाओं के वैवाहिक अधिकार सुरक्षित हो गए। इसके अलावा, अदालतों ने हिंदू उत्तराधिकार कानूनों में पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों को चुनौती देते हुए समान उत्तराधिकार अधिकारों को बरकरार रखा है, जैसा कि 2020 में विनीता शर्मा बनाम राकेश शर्मा में सुप्रीम कोर्ट के फैसले में देखा गया है, जिसमें पुष्टि की गई है कि बेटियों को पैतृक संपत्ति में समान अधिकार है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए विधायी निकायों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण लागू करें। प्रतिनिधित्व में सुधार के लिए चुनावों में महिला आरक्षण विधेयक को पूरी तरह से लागू किया जाना चाहिए। न्यायालयों को लिंग कानूनों के पालन की निगरानी और प्रवर्तन करने की आवश्यकता है, जिससे प्रभावी नीति कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सके। फास्ट-ट्रैक न्यायालयों को कार्यस्थल उत्पीड़न की घटनाओं के लिए त्वरित न्याय प्रदान करना चाहिए। नीतियों को महिलाओं के लिए वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और उद्यमिता समर्थन बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के लिए बड़े ऋण प्रदान करने के लिए मुद्रा योजना का विस्तार किया जाना चाहिए।

स्कूली पाठ्यक्रम में कम उम्र से ही पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने के लिए लिंग जागरूकता को शामिल किया जाना चाहिए। समानता-केंद्रित शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए पाठ्यपुस्तकों में लिंग-संवेदनशील सामग्री शामिल होनी चाहिए। कंपनियों के लिए गहन ऑडिट आयोजित करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे मातृत्व और उत्पीड़न विरोधी नियमों का अनुपालन करती हैं। कोई भी देश अपनी आधी आबादी को पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता। लिंग-संवेदनशील नीतियों को विकसित करने के लिए निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। उन्हें विधायी सुधारों, जमीनी स्तर पर शिक्षा और संस्थागत प्रवर्तन तंत्र द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए। राजनीतिक प्रतिनिधित्व, आर्थिक भागीदारी और कानूनी सुरक्षा को बढ़ाने से भारत के लिए वास्तव में न्यायसंगत और समावेशी शासन प्रणाली बनेगी। महिलाओं की आवाज़, दृष्टिकोण और प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करने के लिए, महिलाओं के नेतृत्व वाले संगठनों सहित महिलाओं की सार्थक भागीदारी और नेतृत्व को मानवीय कार्यवाही के सभी स्तरों पर बढ़ावा दिया जाना ज़रूरी है। केवल महिला दिवस पर ही नहीं, हर रोज़ महिलाओं को लड़ाई लड़नी पड़ेगी इस बदलाव के लिए, अपने हकों के लिए। छोटी शुरुआत ही सही, लेकिन शुरुआत सबको करनी पड़ेगी। ये संघर्ष का सफ़र अंतहीन है। महिलाओं के लिए समान वेतन हो, उन्हें फॉर ग्रांटेड न लिया जाए। मैं एक ऐसा समाज चाहती हूँ, जहाँ बराबरी के लिए महिलाओं को बार-बार अपनी छाती पीटकर अपनी पहचान न साबित करनी पड़े, अवसर सबको मिले। महिलाओं को अपने टैलेंट के दम पर काम मिले, उसे सराहा जाए, उसकी कद्र हो। घर और काम की जगह पर महिला होने के नाते सहानुभूति नहीं चाहिए, सिर्फ़ बराबरी चाहिए। जो स्वाभाविक हो, उसके लिए संघर्ष न करना पड़ा।

30 मार्च से भुवनेश्वर से गाजियाबाद और पोर्ट ब्लेयर के लिए उड़ानें

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : 30 मार्च से ओडिशा की राजधानी भूबनेश्वर से दो अन्य प्रमुख स्थलों - उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद और अंडमान एवं निकोबार के पोर्ट ब्लेयर से उड़ानों से जुड़ जाएगी। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने बुधवार को इसकी घोषणा की। एयर इंडिया एक्सप्रेस इन दो नए मार्गों पर दैनिक उड़ान सेवाएं शुरू करेगी।मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा कि इन दो घरेलू गंतव्यों के लिए दैनिक उड़ानें पर्यटन, व्यापार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देंगी। राज्य सरकार की नई गंतव्य नीति के अनुसार, ओडिशा की राजधानी से गाजियाबाद और पोर्ट ब्लेयर के लिए उड़ान सेवाएं शुरू की जाएंगी। बीजू पटनायक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे (बीपीआईए) से गाजियाबाद के हिंडन हवाई अड्डे और पोर्ट ब्लेयर के वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए दैनिक उड़ान सेवाएं 30 मार्च से शुरू होने वाली हैं।

पर्यावरण पाठशालाः विश्व गौरैया दिवस, दाना-पानी से करें नन्ही चिड़ियों का स्वागत

डॉ. अंकुर शरण

गौरैया, जो कभी हमारे घरों और आंगनों की शान हुआ करती थी, आज विलुप्ति की कगार पर है। शहरीकरण, पेड़ों की कटाई और मोबाइल टावरों के बढ़ते प्रभाव के कारण यह नन्हीं चिड़िया अब बहुत कम दिखाई देती है। ऐसे में हमें न केवल इसकी सुरक्षा बल्कि इसके संरक्षण के लिए भी कदम उठाने की जरूरत है। इसी उद्देश्य से विश्व गौरैया दिवस (20 मार्च) को केवल एक दिन की मुहिम न बनाकर, इसे एक सतत अभ्यास के रूप में अपनाने का संकल्प लें।

गौरैया बचाने के लिए अपनाएं ये सरल उपाय

दाना-पानी की व्यवस्थाः अपने घर, छत, बालकनी या खिड़की के पास मिट्टी के बर्तनों में चिड़ियों के लिए पानी और अनाज (बाजरा, चावल, गेहूं) रखें।

घोंसलों की व्यवस्थाः लकड़ी, मिट्टी या अन्य पर्यावरण-अनुकूल घोंसले बनाकर सुरक्षित स्थानों पर लगाएं। आप #MeraGhosla की पहल से जुड़कर यह कार्य कर सकते हैं।

पेड़-पौधे लगाएंः ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाएं ताकि गौरैया को घोंसला बनाने के लिए उपयुक्त जगह मिल सके।

रेडिएशन रहित वातावरणः मोबाइल टावरों की बढ़ती संख्या और रेडिएशन पक्षियों के लिए खतरनाक है। इसे नियंत्रित करने के लिए जागरूकता बढ़ाएं।

सफाई और प्लास्टिक मुक्त परिवेशः प्लास्टिक कचरा गौरैया और अन्य पक्षियों के लिए खतरनाक है, इसे अपने आसपास ना फैलने दें।

अगर गौरैया हमेशा के लिए चली गई तो

गौरैया, जो कभी हमारे घरों और आंगनों की शान हुआ करती थी, अब धीरे-धीरे विलुप्ति की कगार पर पहुंच रही है। अगर यह नन्हीं चिड़िया पूरी तरह से हमारे पर्यावरण से गायब हो गई, तो इसके कई गंभीर दुष्प्रभाव देखने को मिलेंगे।

1. जैव विविधता को भारी नुकसान

गौरैया पर्यावरण के खाद्य श्रृंखला (Food Chain) का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह छोटे कीट-पतंगों को खाकर प्राकृतिक संतुलन बनाए रखती है। अगर गौरैया विलुप्त हो गई, तो हानिकारक कीड़ों की संख्या बढ़ेगी, जिससे फसलों और इंसानों को नुकसान होगा।

2. कृषि पर बुरा असर

गौरैया खेतों में पाए जाने वाले कीटों और टिड्डियों को खाकर फसलों को सुरक्षित रखती है। यदि गौरैया नहीं रही, तो कीटों की संख्या बढ़ेगी, जिससे किसानों को कीटनाशकों का अधिक उपयोग करना पड़ेगा, जिससे मिट्टी और जल प्रदूषण बढ़ सकता है।

3. पर्यावरणीय असंतुलन

गौरैया केवल कीड़े ही नहीं, बल्कि कई प्रकार के बीज भी खाती और फैलाती है, जिससे जंगल और हरियाली बढ़ती है। अगर यह पक्षी विलुप्त हो गया, तो पौधों और जैव विविधता पर बुरा असर पड़ेगा।

4. इंसानी जीवन पर असर

गौरैया केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपराओं और बचपन की यादों का हिस्सा रही है। इसके चले जाने से हमारी अगली पीढ़ी इसे केवल किताबों और तस्वीरों में ही देख पाएगी।

5. पक्षी जगत पर प्रभाव

गौरैया के चले जाने से दूसरे पक्षियों और पर्यावरण के बीच भी असंतुलन पैदा होगा। इससे पक्षियों की पूरी पारिस्थितिकी (Ecosystem) प्रभावित होगी, जिसका असर धीरे-धीरे अन्य प्रजातियों पर भी पड़ेगा।

समाधानः अभी भी समय है!

गौरैया को बचाने के लिए हमें इसके अनुकूल पर्यावरण बनाना होगा। इसके लिए—

घरों, बालकनी और छतों पर पक्षियों के लिए दाना-पानी रखें।

गौरैया के लिए छोटे घोंसले लगाएं ताकि उन्हें सुरक्षित रहने की जगह मिले।

कीटनाशकों का कम से कम इस्तेमाल करें, जिससे यह पक्षी सुरक्षित रहें।

#MeraGhosla जैसे अभियानों से जुड़ें, और इस नन्ही चिड़िया को बचाने में योगदान दें।

"गौरैया सिर्फ एक पक्षी नहीं, प्रकृति का संदेशवाहक है। इसे बचाना हमारी जिम्मेदारी है!"

रचनात्मकता के जरिए गौरैया संरक्षण

इस विश्व गौरैया दिवस पर, केवल दाना-पानी रखने तक ही सीमित न रहें, बल्कि अपनी कलात्मकता और रचनात्मकता के जरिए इस अभियान में योगदान दें।

गौरैया की पेंटिंग और स्केच बनाएं

छायाचित्र (फोटोग्राफी) साझा करें

गौरैया संरक्षण पर कविता या लेख लिखें

#MeraGhosla से जुड़ें और अपनी प्रतिभा दिखाएं

आपके द्वारा बनाई गई चित्रकला, फोटोज, कविताएं और लेख हमें #MeraGhosla के साथ टैग करके सोशल मीडिया पर साझा करें। सबसे अच्छे कार्यों को हमारे सोशल मीडिया हैंडल्स www.meraghosla.com, पर फीचर किया जाएगा, और उनकी कहानियां Parivahan Visesh के न्यूज़ आर्टिकल्स में प्रकाशित की जाएंगी।

अगर आप अपनी कहानियां और अनुभव हमसे साझा करना चाहते हैं, तो हमें indiangreenbuddy@gmail.com पर ईमेल करें। आइए, मिलकर गौरैया के लिए एक सुंदर, सुरक्षित और दयालु संसार बनाएं।

"अगर हम मिलकर छोटी चिड़ियों की रक्षा करेंगे, तो हमारा पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा।"

सार्थक भागीदारी से "एक्सीलरेट एक्शन" के लिए काम करती प्रियंका 'सौरभ'

(लेखिका होने के अलावा शिक्षिका और सामाजिक कार्यकर्त्ता भी है प्रियंका सौरभ। महिला सशक्तिकरण, हिन्दी भाषा, भारतीय सभ्यता और विरासत, धर्म, संस्कृति और बच्चों और महिलाओं के लिए साहित्यिक और शैक्षिणिक गतिविधियाँ, सामाजिक सरोकारों को लेकर कार्य करती है। देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित मंचों पर साहित्यिक, सामाजिक,सांस्कृतिक, महिलाओं और बच्चों से जुड़े हुए कार्यक्रमों का सफल सञ्चालन किया है। ख़ुद का एक शैक्षिणिक यू ट्यूब चैनल चलाकर फ्री कोचिंग भी देती है।)

कहते है न कि बच्चों को जैसा माहौल घर में मिलता है, उनके भविष्य में उसकी छाप ज़रूर दिखती है। अगर परिवार में गायन का माहौल है तो बच्चें में गायन के गुण स्वतः आ जाते हैं। ऐसे ही अन्य कलाओं के बारें में भी है। साहित्यिक माहौल वाले परिवार में पली-बढ़ी हरियाणा के हिसार के गाँव आर्यनगर में जन्मी प्रियंका 'सौरभ' आज देश की चर्चित संपादकीय लेखिका, शिक्षिका, साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्त्ता है। वे कहती है-₹मेरे मायके में मेरे दादा जी और पिता जी को किताबें पसंद थी और अब ससुराल में आने के बाद मेरे पति ने साहित्यिक माहौल दिया है।₹ इनके पति डॉ सत्यवान 'सौरभ' एक चर्चित कवि और लेखक है तो आये रोज़ घर में साहित्यिक चर्चाएँ और गतिविधियाँ चलती रहती है। बचपन में डायरी लिखने का अंकुर मन में पड़ चुका था। स्कूल और कॉलेज के दिनों में डायरी में कुछ न कुछ लिखने की आदत रही। राजनीति विज्ञान में मास्टर्स और एमफिल के दौरान समसामयिक विषयों की समझ बढ़ी तो समसामयिक लेख लिखने की आदत बनी। आज ये हिंदी और अंग्रेजी के 10,000 से अधिक समाचार पत्रों के लिए दैनिक संपादकीय लिख रही हैं जो विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन गोष्ठियाँ शुरू हुई तो काव्य में रूचि के चलते कवितायेँ लिखने की शुरुआत हुई। इसी दौरान पहला काव्य संग्रह 'दीमक लगे गुलाब' नाम से छपा और काफ़ी चर्चित हुआ। महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर लिखते रहने से दूसरी पुस्तक 'निर्भयाएं' निबंध संग्रह के रूप में आया और तीसरी पुस्तक अंग्रेज़ी में 'फीयरलेस' बनकर आई। हाल ही में चौथी पुस्तक 'समय की रेत पर' अहमदाबाद से प्रकशित हुई है और साथ ही 'दीमक लगे गुलाब' काव्य संग्रह का दूसरा संस्करण बाज़ार में आया है।

कई क्षेत्रों में कार्य, सम्मान भी मिलें

अपनी सार्थक भागीदारी का परिचय देते हुए प्रियंका सौरभ महिलाओं के लिए "एक्सीलरेट एक्शन" का काम कर रही है। लेखिका होने के अलावा शिक्षिका और सामाजिक कार्यकर्त्ता भी है। महिला सशक्तिकरण, हिन्दी भाषा, भारतीय सभ्यता और विरासत, धर्म, संस्कृति और बच्चों और महिलाओं के लिए साहित्यिक और शैक्षिणिक गतिविधियाँ, सामाजिक सरोकारों को लेकर कार्य करती है। देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित मंचों पर साहित्यिक, सामाजिक,सांस्कृतिक, महिलाओं और बच्चों से जुड़े हुए कार्यक्रमों का सफल सञ्चालन किया है। ख़ुद का एक शैक्षिणिक यू ट्यूब चैनल चलाकर फ्री कोचिंग भी देती है। साहित्यिक, शैक्षिणिक और सामाजिक गतिविधियों के लिए कई सम्मान भी मिल चुके। इनमें आईपीएस मनुमुक्त 'मानव' पुरस्कार, नारी रत्न पुरस्कार, हरियाणा की शक्तिशाली महिला पुरस्कार (दैनिक भास्कर समूह) ज़िला प्रशासन भिवानी द्वारा पुरस्कृत, यूके, फिलीपींस और बांग्लादेश से डॉक्टरेट की मानद उपाधि, विश्व हिन्दी साहित्य रत्न पुरस्कार, सुपर वुमन अवार्ड, ग्लोबल सुपर वुमन अवार्ड, महिला रत्न सम्मान, विद्यावाचस्पति मानद पीएच.डी. (साहित्य) स्वतन्त्र पत्रकारिता और साहित्य में उत्कृष्ट लेखन के लिए महात्मा गांधी अवॉर्ड प्रमुख है।

आत्म कथ्यः -जीवन में सफल होना है तो हमेशा बेहतरी के लिए प्रयास करते रहें। जो भी काम करें किसी ख़ास उद्देश्य के लिए समाज के हित में हो। जो भी करें यह सोचे कि इस से और बेहतर क्या कर सकते है। हमेशा अपना बेस्ट दें।

मैं लिखुं ग़ज़ल तेरी शबनमी आंखों में डूबकर।

याद करके ज़ालिम और मुझको सज़ा न दे।
तेरे वादों का ऐतबार नहीं मुझको दग़ा न दे।
पुरानी मुहब्बतों के चिराग़ फ़िर से न जल उठें।
वो मस्त आंखों से शराब मुझको पिला न दे ।
मेरी आंखों में तेरी तस्वीर अब भी है बनी हुई।
मेरी कोई हरकत राज़ ए दिल सबको बता न दे।
ख़्वाब तेरे ही बसा रखे हैं,इन बहती आंखों में।
लहरें हक़ीक़त की आंखों में कंकर छुपा न दे।
तस्वीर तेरी बना रहा हूं, ख़ुद से बेख़बर हो कर।
डर है ज़माना आकर मुझसे तुझको छुड़ा न ले।
मैं लिखुं ग़ज़ल तेरी शबनमी आंखों में डूबकर।
ग़ज़लों के मेरी, शेर कोई ₹मुश्ताक़₹ चुरा न ले।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

राष्ट्रहित में, भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन किया जाना चाहिए जिसमें असल सत्य और वास्तविकता को सामने लाया जा सकें : राष्ट्रवादी चिंतक राजेश खुराना

आगरा, संजय साग़र सिंह। वरिष्ठ समाजसेवी एवं राष्ट्रवादी सामाजिक चिंतक राजेश खुराना ने इस महत्वपूर्ण संदेश में भारतीय सनातनी इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता पर बल दिया है। उनका तात्पर्य है कि हमारे देश के इतिहास को सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। उनका कहना है कि हमारे यहां आक्रांता और आक्रमणकारी जिन्हें ज़ाहिल, क्रूर, हत्यारे और लुटेरे के रूप में जाना जाता है, उन्हें खामखा महान बताया और पढ़ाया गया है, जबकि उन सनातनी व्यक्तियों और जन नायकों को ज़रा भी महत्व नहीं दिया गया जिन्होंने अपनी मातृभूमि और संस्कृति के लिए अपना पूरा जीवन राष्ट्रहित में अर्पित कर दिया।

वरिष्ठ समाजसेवी एवं राष्ट्रवादी सामाजिक चिंतक राजेश खुराना ने इस सन्दर्भ में कहा, ₹भारतीय समाज में जातिवाद को बढ़ावा देने के लिए इतिहास को इस तरह से लिखा गया कि हमारे वास्तविक नायक, जो बलिदान, संघर्ष, त्याग और वीरता के प्रतीक थे, उन्हें कमतर और कमजोर दर्शाया गया। इसके बदले में, आक्रमणकारियों को महान के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि उन्होंने हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के लिए इन्होने कोई योगदान नहीं दिया था। ₹इसलिए, उनका कहना है कि भारतीय सनातन इतिहास का पुनर्लेखन जरूरी है ताकि सच्चाई सामने आ सके, और सनातनी अपने वास्तविक इतिहास, अपने वीर नायकों के संघर्ष, बलिदान और योगदान के बारे में जागरूक हो सकें। इससे भारतीय सनातन समाज को सही दिशा मिल सकती है और आने वाली पीढ़ियों को अपने सच्चे और सशक्त इतिहास का ज्ञान मिलेगा।₹

वे यह भी कहते हैं कि ₹हमारे यहां क्रूर जाहिलों को भी महान दिखाया और पढ़ाया जाता हैं, लेकिन चीन में, सेंट्रल एशिया में, और मध्यपूर्व में कहीं भी इन्हे महान नहीं, हत्यारे, लुटेरे जाहिल आक्रांता ही पढ़ाया जाता है। फिर भारत में हत्यारे, लुटेरे क्रूर जाहिल आक्रांता महान कैसे हुए ? सिर्फ़ भारत में ही रीत उल्टी है, यहाँ हत्यारे, लुटेरे, जाहिल भी महान बताये जाते हैं और जो मिट्टी पर मर मिटे उन्हें बड़ी चतुराई से जातिवाद में बांटकर छोटा मोटा कमजोर करार दे दिया जाता है। जबकि हमारे देश के लिए वो महान नहीं, जिसका बड़ा साम्राज्य, बड़ी सेना रही हो, बड़ा विजेता रहा हो,बल्कि महान वो हैं जिन्होंने अपनी मातृभूमि और उसके लोगों के लिए अपना पूरा जीवन राष्ट्र हित में अर्पित किया। हत्यारे, लुटेरे क्रूर जाहिल आक्रांता सिर्फ़ उनके लोगों के लिए ही महान हो सकते हैं, हमारी भारतीय सनातनी सभ्यता और हम सनातनीयों के लिए कभी भी नहीं।

साथ ही, श्री खुराना ने कहा, इतिहास लिखने वालो ने भारत का इतिहास बताया कम और छिपाया ज्यादा हैं। लुटेरे, हत्यारे, जाहिल आक्रांताओं को बड़ा बताया हैं और खामखा पढ़ाया गया एवं मातृभूमि पर मर मिटने वालों को बड़ी चतुराई से भारतीय समाज को जातिवाद में बांटकर कमजोर करने का कार्य किया गया हैं। ताकि हमारे सशक्त इतिहास, मातृभूमि पर मर मिटने वालों का संघर्ष, त्याग, बलिदान और उनकी वीरता को दबाया जा सके। इसलिए राष्ट्रहित में, भारतीय सनातनी इतिहास का पुनर्लेखन किया जाना चाहिए जिसमें हमारे सशक्त इतिहास का असल सत्य भारतीय सनातनी समाज के सामने लाया जा सके। इससे भारतीय सनातनी समाज में जागरूकता बढ़ेगी और भविष्य की पीढ़ियों को अपने सच्चे इतिहास के बारे में सही जानकारी मिलेगी।

दो सौ रूपये का जुर्माना...!

अब बाबा का पेशी पर आने का नहीं ठीकाना,
अदालत ने लगाया दो सौ रूपये का जुर्माना।
अप्रैल में कोर्ट ने दी है, हाजिरी की चेतावनी,
अब भैया याचिकाकर्ता को आप भी सतावनी।
प्रयोगधर्मी अब न दिया करो विवादित बयान,
स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर तो थे महान।

अब बाबा का पेशी पर आने का नहीं ठीकाना,
अदालत ने लगाया दो सौ रूपये का जुर्माना।
ना 'अंग्रेजों का नौकर' या 'पेंशन लेने वाला',
सावरकर को कुछ भी न कहना, वो है आला।
समाज में वैमनस्य और घृणा को ना फैलाओं,
इनकी कीर्ति यश, आदर, सम्मान बिखराओं।

अब बाबा का पेशी पर आने का नहीं ठीकाना,
अदालत ने लगाया दो सौ रूपये का जुर्माना।
क्यों? विदेशी गणमान्य नागरिक से मुलाकात,
अब तो जरूरी है उठाने जनता के भी सवालात।
ये लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष का मिला हैं ताज,
उठाओं जन-जन के मुद्दे तब ही बनोगे सरताज।
(संदर्भ: गाँधी पर दो सौ रूपये जुर्माना।)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

पलाशुणी फुट ओवरब्रिज का उद्घाटन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : बहुप्रतीक्षित पलाशुणी फुट ओवरब्रिज का बुधवार को उद्घाटन किया गया। इसका उद्घाटन सांसद अपराजिता सारंगी ने किया। उन्होंने इसे जनता को समर्पित किया है। परिणामस्वरूप, पलानी और आसपास के क्षेत्रों के निवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी हो गई है।सांसद श्रीमती सारंगी ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में पलटांधी चौक राष्ट्रीय राजमार्ग पर 200 से अधिक दुर्घटनाएं हुई हैं। इसमें कई लोग मारे गए हैं। इस स्थान पर फुट ओवरब्रिज के निर्माण की मांग लंबे समय से की जा रही है। इस बीच सांसद श्रीमती सारंगी ने इस मांग को गंभीरता से लिया और फुट ओवरब्रिज निर्माण के लिए प्रयास शुरू कर दिए। पिछले साल 19 जुलाई को उन्होंने केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात की थी और पलागंडी में फुट ओवरब्रिज का प्रस्ताव रखा था। केंद्रीय मंत्री ने तत्काल कदम उठाते हुए प्रस्ताव को मंजूरी दे दी और परियोजना के लिए 3 करोड़ रुपये मंजूर कर दिए। लेकिन पिछली बीजद सरकार से सहयोग नहीं मिलने के कारण फुट ओवरब्रिज के निर्माण में देरी हुई। सांसद ने कहा कि भाजपा सरकार आने के बाद इस परियोजना पर काम में तेजी लाई गई। इस फुट ओवरब्रिज से स्थानीय लोगों को राहत मिली है। उन्होंने कहा कि इससे पैदल यात्री, विशेषकर बुजुर्ग और वृद्ध लोग आसानी से सड़क पार कर सकेंगे। सांसद श्रीमती सारंगी ने कहा कि भीड़ से बचने के लिए टंकापानी साईं मंदिर चैक पर ओवरब्रिज का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए प्रक्रिया चल रही है। काम जल्द ही शुरू हो जाएगा। इसी प्रकार सांसद ने बताया कि नकहरा सैम अस्पताल के पास एक और फुट ओवरब्रिज बनेगा। उद्घाटन समारोह में एनएचएआई के परियोजना निदेशक सूरज सिंह, उत्तरा विधानसभा क्षेत्र के विधायक उम्मीदवार प्रियदर्शी मिश्रा और अन्य लोग उपस्थित थे।

खनन पदाधिकारी ज्योति शतपथी का पुनः बड़ा धमाका 17,500 सीएफटी बालू जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चांडिल, जिला खनन पदाधिकारी सरायकेला खरसावां सह अतिरिक्त प्रभार सहायक निदेशक खान भूतत्व, कोल्हान चाईबासा ज्योति शंकर सतपथी के नेतृत्व में खनन विभाग ने भोर पौ फटने से पहले ईचागढ़ थाना क्षेत्र के बीरडीह बालू नदी घाट में पहुंचकर छापेमारी कर दी। इलाके में अवैध रूप से भंडारण किये गये 17 हजार 500 सीएफटी बालू को जब्त कर किया। इसके बाद बड़े माफियाओं में खलबली मच गयी है। छापेमारी में खनन निरीक्षक समीर ओझा ने भी बड़ी भूमिका निभाई। मौके पर खनन विभाग ने चौका थाना क्षेत्र के चौका-कांड्रा सड़क मार्ग पर आयरन एवं बालू लदे वाहनों के परिवहन कागजात की जांच की। खनन विभाग के द्वारा जांच की भनक मिलने के बाद बालू लदे कई वाहनों ने अपना मार्ग बदल लिया। सूचना मुताबिक ईचागढ़ के बीरडीह बालू नदी घाट पर रात्रि में जेसीबी मशीन के द्वारा बालू का अवैध खनन किया जाता रहा। इसमें बड़े वाहन जैसे मशीन शामिल थे। लेकिन, खनन टीम के पहुंचने के पहले ही जेसीबी मशीन एवं वाहन वाहां से चले गये थे। खनन विभाग अब उसकी जांच में जुटी है। खनन को अधिक से अधिक राजस्व दिलाने में कारगर खनन अधिकारी शतपथी आने के बाद काफी अधिक धनराशि विभाग को दिये है। जब्त किये गये बालू भंडारण का नीलामी किया जा सकता है ताकि राशि ऐसे समय सरकार को मिले जब मौजूदा हालात में सरकार को धनराशि की बेहद जरूरत है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023